CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ઉત્તર પ્રદેશ નો સાંસ્કૃતિક ઇતિહાસ

754

શ્રી કૃષ્ણદત્ત બાજપેયી

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

I

उत्तर प्रदेश का सांस्कृतिक परिचय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लेखक

श्री कृष्णदत्त वाजपेयी, एम० ए०, पी० ई० एस०,

अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्त्व विभाग

सागर विश्वविद्यालय

राज्य संग्रहालय पुस्तकालय, लखनऊ
क्रमसंख्या 754
प्राप्ति तिथि 30.3.61
State Museum, Library, Lko.

शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी प्रा. लि.

पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता : आगरा

Rs. 2.50 nP

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक
शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं. प्रा. लि.
पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता, आगरा

प्रथम संस्करण : अक्टूबर, १९५९

मूल्य : दो रुपये पचास नये पैसे

मुद्रक :
जगदीशप्रसाद अग्रवाल एम० ए०,
एज्यूकेशनल प्रेस, आगरा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राक्कथन

उत्तर प्रदेश के संबंध में कई परिचय-पुस्तकें उपलब्ध हैं। इनमें से कुछ तो प्रदेश के शिक्षा विभाग तथा सूचना विभाग द्वारा प्रकाशित की गई हैं। अन्य कुछ विशेष अङ्गों पर प्रकाश डालने वाली पुस्तिकाएँ या पैम्फलेट कई शासकीय विभागों ने भी प्रकाशित की हैं, जिनमें मुख्य रूप से संबंधित विषयों के विवरण, सारणियाँ या निर्माण-कार्य की प्रगति दी गई है। केन्द्रीय सूचना विभाग द्वारा प्रदेश पर तथा उसके कई मुख्य नगरों पर कतिपय परिचयात्मक विवरण प्रकाशित किये गए हैं, जो मुख्यतया यात्रियों के उपयोग के लिए हैं। कुछ पुस्तकें अन्य प्रकाशकों द्वारा भी छपवाई गई हैं।

इन पंक्तियों के लेखक ने उत्तर प्रदेश का एक क्रमबद्ध, विस्तृत इतिहास तैयार करने की आवश्यकता पर बराबर जोर दिया है। १९५४ ई० में 'युग-युग में उत्तर प्रदेश' पुस्तक इसी उद्देश्य से लिखी गई कि लोगों को उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक महत्त्व एवं उसके कलात्मक गौरव के संबंध में कुछ जानकारी हो सके। इस पुस्तक का प्रकाशन प्रदेश के शिक्षा विभाग द्वारा किया गया। इसके पूर्व लेखक की दो पुस्तकें 'उत्तर प्रदेश की ऐतिहासिक विभूति' तथा 'Archaeology in Utter Pradesh' उक्त विभाग द्वारा प्रकाशित हो चुकी थीं, जिनके द्वितीय संस्करण १९५७ में हुए हैं। १९५६ में प्रादेशिक सूचना विभाग ने लेखक की पुस्तक 'उत्तर प्रदेश के दर्शनीय स्थल' प्रकाशित की। प्रदेश के तत्कालीन शिक्षा-मंत्री (अब मुख्य मंत्री) डा० सम्पूर्णानन्द की प्रेरणा से लेखक ने 'उत्तर प्रदेश के सांस्कृतिक केन्द्र' ग्रंथमाला का १९५५ में श्रीगणेश किया, जिसमें अब तक हस्तिनापुर, मथुरा, अहिच्छत्रा, कन्नौज तथा कुशीनगर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर सचित्र पुस्तकें छप चुकी हैं और अन्य मुख्य केन्द्रों के संबंध में कार्य अग्रसारित है। अब इस ग्रंथमाला का प्रकाशन-संबंधी काम नये विभाग 'सांस्कृतिक कार्य एवं वैज्ञानिक अनुसंधान' के अन्तर्गत हो रहा है।

कुछ समय पूर्व जब मैं उत्तर प्रदेश के विज्ञ शिक्षामंत्री श्री कमला-पति त्रिपाठी से मिला था तब उन्होंने एक ऐसे सुमुद्रित प्रकाशन की इच्छा प्रकट की थी जिसमें प्रदेश के सांस्कृतिक वैभव की झाँकी मिल सके। प्रस्तुत पुस्तिका इसी उद्देश्य से तैयार की गई है। इसके प्रथम परिचयात्मक अध्ययन के बाद अगले नौ अध्यायों में कालक्रमानुसार प्रत्येक युग की सांस्कृतिक स्थिति का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। संस्कृति के अन्तर्गत धर्म, दर्शन, ललित कला, साहित्य और लोक-जीवन को लिया गया है। ग्यारहवें अध्याय में प्रदेश के मुख्य सांस्कृतिक केन्द्रों का तथा अन्तिम बारहवें अध्याय में अनुसंधान-कार्य का परिचय दिया गया है।

इस पुस्तक में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि वह केवल अनुसंधान-प्रेमी लोगों के लिए ही उपयोगी न हो, बल्कि विद्यार्थियों तथा जनसाधारण के लिए भी प्रदेश का महत्त्वपूर्ण इतिहास समझाने में सहायक हो। ग्रन्थ में केवल मुख्य राजनैतिक घटनाओं का ही उल्लेख किया गया है, तिथियों तथा अन्य घटनाओं आदि से उसे बोझिल बनाने का प्रयत्न नहीं किया गया।

पुस्तक में उत्तर प्रदेश के मानचित्र के अतिरिक्त २७ चित्रफलक दिये गये हैं जिनमें कुल ३२ चित्र हैं। इनसे हमारी प्राचीन उन्नत ललित कलाओं का परिचय प्राप्त हो सकेगा। कुछ चित्र प्रदेश के दर्शनीय स्थानों के तथा लोक-जीवन संबंधी भी हैं। भारत सरकार के पुरातत्त्व विभाग तथा लखनऊ, मथुरा, प्रयाग एवं कौशाम्बी संग्रहालय के अधि-कारियों के प्रति हम आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने अपने यहाँ की कला-कृतियों के चित्र प्रदान करने की कृपा की। फलक १६ तथा २२ के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्रों के लिए श्री रामेश वेदी, हरद्वार तथा फलक २०, २१, २४ और २५ के चित्रों के लिए श्री द्वारकानाथ जोशी, लखनऊ के हम आभारी हैं। फलक २७ के दोनों चित्र हमें श्री नार्विन हाइन (येल विश्वविद्यालय, संयुक्तराष्ट्र अमेरिका तथा २८ के चित्र श्री जगन्नाथ जी अहिवासी की कृपा से प्राप्त हुए हैं।

अन्त में मैं शिवलाल अग्रवाल कम्पनी के अध्यक्ष श्री राधेमोहन अग्रवाल के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होंने इस पुस्तक के प्रकाशन में विशेष रुचि ली।

सागर विश्वविद्यालय
१५-९-५९

कृष्णदत्त वाजपेयी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय-सूची

		पृष्ठ
प्राक्कथन		क—ख
अध्याय १	परिचय	१
,, २	प्रागैतिहासिक युग	६
,, ३	पूर्व-वैदिक युग	१४
,, ४	उत्तर-वैदिक युग	१६
,, ५	बुद्ध के समय से गुप्त-काल तक	३१
,, ६	पूर्व-मध्यकाल	४१
,, ७	तुर्क-अफगानों का आधिपत्य	४५
,, ८	मुगल-काल	४६
,, ९	ब्रिटिश शासन-काल	५३
,, १०	उत्तर प्रदेश प्रगति के पथ पर	५६
,, ११	उत्तर प्रदेश के मुख्य सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक केन्द्र	६०
,, १२	अनुसंधान-कार्य	६५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्र-सूची

फलक १—दो प्रागैतिहासिक अवशेष
(क) ऊपर बिसौली (जि० बदायूँ) से प्राप्त ताँबे की मानवाकृति।
(ख) नीचे मिर्जापुर जिले की एक पुरानी गुफा में चित्रित जंगली सुअर, जो हथियारों की चोट से घायल हो गया है।
फलक २—बोधि वृक्ष के नीचे अभयमुद्रा में बैठे हुए भगवान् बुद्ध की मूर्ति, जिसकी चौकी पर ई० प्रथम शती का ब्राह्मी लेख खुदा है। (पुरातत्त्व संग्रहालय, मथुरा)
फलक ३—कुषाण वंश के प्रतापी शासक कनिष्क की मूर्ति (पुरातत्त्व संग्रहालय, मथुरा)
फलक ४—पुष्पित अशोक वृक्ष के नीचे खिलौना लिये हुए माता तथा शिशु। समय ई० दूसरी शती (पुरातत्त्व संग्रहालय, मथुरा)
फलक ५—अभयमुद्रा में, गजलक्ष्मी की मिट्टी की मूर्ति। कौशाम्बी से प्राप्त, समय प्रारम्भिक गुप्तकाल (कौशाम्बी-कक्ष, प्रयाग विश्वविद्यालय)
फलक ६—धर्मचक्र-प्रवर्तन मुद्रा में भगवान् बुद्ध की सर्वाङ्गसुन्दर मूर्ति, गुप्त-काल (सारनाथ संग्रहालय)
फलक ७—किरीट मुकुट तथा वनमाला-धारी विष्णु की चतुर्भुजी मूर्ति, सिर के पीछे अलंकृत प्रभामंडल है। मथुरा से प्राप्त; गुप्त-काल (राजकीय संग्रहालय लखनऊ)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फलक ८—देवगढ़ (जि० झाँसी) से प्राप्त शिलापट्टों पर संगीत के दो दृश्य, जिनमें बाजे के साथ नृत्य दिखाया गया है। नर्तकियाँ लम्बा कुर्ता तथा सुथना पहने हैं। गुप्तकाल।

फलक ९—ध्यान-मुद्रा में बैठे हुए जैन तीर्थंकर ऋषभनाथ की प्रतिमा। खंडित सिर के पीछे प्रभामंडल दिखाई देता है। उनके अगल-बगल चँवर लिये हुए देवता दिखाए गये हैं। गुप्त काल (पुरातत्त्व संग्रहालय, मथुरा)।

फलक १०—शिव-पार्वती की विवाह-मूर्त्ति। नीचे ब्रह्मा जी तथा अन्यत्र विविध देवी-देवता दिखाये गये हैं। कन्नौज से प्राप्त, समय ८ वीं शती का प्रारम्भ।

फलक ११—बौद्ध देवता सिंहनाद अवलोकितेश्वर की कलापूर्ण प्रतिमा। महोबा से प्राप्त, समय ई० ११ वीं शती। (राजकीय संग्रहालय, लखनऊ)

फलक १२—देवी पार्वती की अलंकृत प्रतिमा। बैजनाथ (जि० अलमोड़ा) से प्राप्त, समय ई० ११ वीं शती।

फलक १३—अटाला मस्जिद, जौनपुर।

फलक १४—जोधाबाई का महल, फतहपुर-सीकरी।

फलक १५—आगरा के समीप सिकन्दरा में अकबर का मकबरा।

फलक १६—युगलकिशोर का प्राचीन मन्दिर, वृन्दावन। निर्माण-काल ई० १७ वीं शती।

फलक १७—आगरा का संसार-प्रसिद्ध ताजमहल।

फलक १८—केसर बाग, लखनऊ में निर्मित नवाब सआदत अलीखाँ का मकबरा।

फलक १९—देव प्रयाग, जहाँ भागीरथी (बायें) तथा अलकनन्दा (दायें) नदियों का संगम है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फलक २०—ऋषिकेश में मुनि की रेतों का एक नयनाभिराम दृश्य।

फलक २१—नैनीताल का एक विहंगम दृश्य।

फलक २२—गढ़वाल की एक कृषक कन्या।

फलक २३—जौनसार-बाबर की दो लड़कियाँ आनन्द की मुद्रा में।

फलक २४—बुन्देलखण्डी युवती अपनी वेश-भूषा में।

फलक २५—लखनऊ में गोमती-तट का एक दृश्य।

फलक २६—(क) ब्रज की रासलीला का मंडल-नृत्य।
(ख) कथावाचक और श्रोता-समाज।

फलक २७—उत्तर प्रदेश की लोक-कला—
(क) स्त्रियों द्वारा उकेरी गई पूजा की आकृतियाँ,
(ख) मंगल-कलश तथा लोक-अलंकरण के अन्य उपादान।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय १

परिचय

उत्तर प्रदेश भारत के उत्तरी भाग में अक्षांश २३°५२′ और ३१°१८′ उ० तथा देशान्तर ७७°३′ और ८४°३८′ पूर्व के मध्य में स्थित है। उत्तर प्रदेश का वर्तमान क्षेत्रफल १,१३,४९५ वर्ग मील है, जो ५१ जिलों में विभक्त है। १९५१ की जन गणना के अनुसार इस प्रदेश की कुल जन-संख्या ६,३२,१५,७४२ थी। इस प्रकार उत्तर प्रदेश क्षेत्रफल के विचार से कुल भारत का १/११ तथा जनसंख्या की दृष्टि से भारत का लगभग २/११ है। इस प्रदेश के नगरों और कस्बों की संख्या ४८६ है। इनमें १६ शहर ऐसे हैं जिनकी आबादी एक लाख के ऊपर है।

उत्तर प्रदेश के उत्तर तथा उत्तर-पूर्व में हिमालय, तिब्बत और नैपाल; पूर्व तथा दक्षिण-पूर्व म बिहार; दक्षिण में मध्य प्रदेश; दक्षिण-पश्चिम में मध्य प्रदेश एवं राजस्थान और पश्चिम-उत्तर में दिल्ली तथा पंजाब हैं। यमुना नदी उत्तर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रदेश की पश्चिमी प्राकृतिक सीमा है। उत्तर में काली नदी इस प्रदेश के पहाड़ी जिलों को नैपाल से पृथक् करती है। पूर्व में गंडक, घाघरा और गंगा नदियों के कुछ भाग इस प्रदेश की प्राकृतिक सीमा बनाते हैं। शेष सीमाएँ अप्राकृतिक हैं।

इस प्रदेश की गंगा, यमुना आदि अधिकांश बड़ी नदियाँ हिमालय से निकली हैं। इस विशाल पर्वत का कुछ भाग हमारे प्रदेश के पहाड़ी जिलों में आ गया है। हिमालय से निकली हुई नदियाँ पहले दक्षिण की ओर बहती हैं, फिर दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़कर गंगा में मिल जाती हैं। गंगा की बड़ी सहायक नदियाँ यमुना, रामगंगा, गोमती और घाघरा (सरयू) हैं। कुछ नदियाँ दक्षिण में विन्ध्य और सतपुड़ा की पहाड़ियों से निकलती हैं और उत्तर की ओर बहकर यमुना-गंगा में मिलती हैं। ये नदियाँ प्रायः उतनी बड़ी और चौड़ी नहीं हैं जितनी हिमालय से निकलने वाली उपर्युक्त नदियाँ। इन दक्षिणी नदियों में चम्बल, सिन्धु, बेतवा, केन, टोंस और सोन मुख्य हैं।

प्रदेश के उत्तरी पहाड़ी भाग की ऊँचाई १२०० फुट से लेकर २५,००० फुट तक है, जिसके कारण जलवायु में विभिन्नता है। इस भाग के पूर्व में ८० इंच से लेकर १०० इंच तक वर्षा होती है। उच्चतम स्थानों से लेकर प्रायः ४००० फुट की ऊँचाई तक इस पर्वतीय भाग में बर्फ पड़ती है। जनवरी में पहाड़ी स्थानों का तापमान प्रायः ३५° और ४०°

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के बीच में और मई-जून में ७५° और ८०° के बीच में रहता है। मैदानी भाग में जाड़े का तापमान लगभग ६०° और गर्मियों का ६४° होता है। परन्तु कुछ स्थानों में मैदानी भाग का तापमान ४०° या इससे भी कम हो जाता है और मई-जून में कभी-कभी १२०° तक पहुँच जाता है। दिन और रात के तापमान में पूर्वी जिलों की अपेक्षा पश्चिमी जिलों में अधिक अन्तर रहता है। पूर्वी जिलों में पश्चिम की अपेक्षा वर्षा अधिक होती है। बुन्देलखंड तथा कुछ पश्चिमी जिलों में साल में २० से लेकर ३० इंच तक वर्षा होती है। दक्षिणी भाग में वर्षा का औसत करीब ३० इंच है, जब कि पूर्वी तथा उत्तर-पूर्वी जिलों में ४० से लेकर ५० इंच तक वर्षा होती है।

पाँच भाग—सुविधानुसार हम उत्तर प्रदेश को पाँच भागों में बाँट सकते हैं—१. उत्तर का पहाड़ी भाग, २. गंगा-यमुना के बीच का दोआब, ३. गंगा और सरयू के बीच का भाग, ४. सरयू के दूसरी ओर का प्रदेश, और ५. दक्षिण का पहाड़ी भाग, जिसमें बुन्देलखंड के जिले तथा मिरजापुर सम्मिलित हैं। उत्तर के पहाड़ी भाग में, जिसे 'उत्तराखंड' कहा जाता है, अलमोड़ा, गढ़वाल, टेहरी-गढ़वाल, देहरादून जिले का उत्तरी भाग और नैनीताल जिले हैं। इस भूभाग का क्षेत्रफल लगभग २०,००० वर्गमील है। यहाँ हिमालय की कई ऊँची चोटियाँ हैं, जिसमें नन्दा देवी (२५,६४५ फुट), कामेट (२५,४४७ फुट), त्रिशूल (२३,३८३ फुट), तथा नन्दाकोट (२२,४३८ फुट) मुख्य हैं। इस भूभाग में गंगोत्री,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यमुनोत्री, बद्रीनाथ, केदारनाथ, ऋषीकेष, देवप्रयाग आदि प्रसिद्ध धार्मिक स्थान हैं।

गंगा-यमुना के दोआब में देहरादून जिले के दक्षिणी भाग से लेकर इलाहाबाद तक १५ जिले शामिल हैं। इस दोआब का प्राचीन नाम 'अन्तर्वेदी' था। गंगा और यमुना के तटों पर बहुत काल तक भारतीय संस्कृति का विकास होता रहा और यहाँ हस्तिनापुर, कांपिल्य, संकाश्य, मथुरा, कन्नौज, कौशाम्बी, प्रयाग, काशी आदि नगर सांस्कृतिक केन्द्रों के रूप में विकसित होते रहे। प्राचीन चन्द्रवंश और उसकी मुख्य शाखाओं का विस्तार इसी भूभाग पर हुआ और यहाँ के 'ब्रह्मावर्त' तथा 'ब्रह्मर्षि' प्रदेश भारत में पवित्र एवं आदर्श क्षेत्र माने गये। इस प्रकार राजनैतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अंतर्वेदी भारत का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भाग हुआ। जो ऐतिहासिक अवशेष इस प्रदेश में मिलते हैं उनसे पता चलता है कि यह भूखंड शताब्दियों तक प्राचीन 'मध्यप्रदेश' का केन्द्र रहा। यहाँ से प्रागैतिहासिक वस्तुएँ भी बड़ी संख्या में प्राप्त हुई हैं।

गंगा और सरयू के बीच का विस्तृत भूभाग भी ऐतिहासिक दृष्टि से बड़े महत्त्व का है। इस भाग में प्राचीन काल में पंचाल, अयोध्या और काशी राज्य थे। अहिच्छत्रा, अयोध्या, और वाराणसी नगरियाँ क्रमशः इन राज्यों की राजधानियाँ थीं, जो एक दीर्घ काल तक उत्तर भारत में राजनीति, कला और संस्कृति के केन्द्र रहीं। इस भूभाग में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पूरा रुहेलखंड तथा लखनऊ, फैजाबाद और बनारस कमिश्नरियों के जिले शामिल हैं।

चौथा भाग सरयू नदी के दूसरीओर का प्रदेश है। इसमें वर्तमान बहराइच, गोंडा, बस्ती, गोरखपुर और देवरिया के जिले हैं। बौद्ध धर्म के विकास की दृष्टि से यह भाग बहुत प्रसिद्ध रहा है। प्राचीन गणराज्यों की भी यह गौरवपूर्ण भूमि रही है। गोंडा-बहराइच जिले की सीमा में स्थित श्रावस्ती नगरी कोशल राज्य की राजधानी थी, जिसकी चर्चा प्राचीन साहित्य में बहुत मिलती है। गोरखपुर जिले के उत्तर नैपाल की तराई में स्थित लुम्बिनी नामक स्थान है, जहाँ महात्मा बुद्ध का जन्म हुआ था। वर्तमान देवरिया जिले में कसिया (प्राचीन कुशीनगर) स्थित है, जहाँ बुद्ध का निर्वाण हुआ था।

उत्तर प्रदेश का पाँचवाँ भाग यमुना नदी के दक्षिण का है। इसमें बुन्देलखंड के चार जिले (झाँसी, जालौन, हमीरपुर बाँदा) तथा मिरजापुर का जिला सम्मिलित है। इस भाग में विन्ध्य पर्वत की शृंखला बिखरी है। भूमि का एक बड़ा भाग पथरीला है और खेती योग्य जमीन कम है। इस प्रदेश में गुप्तकाल में तथा उसके बाद चंदेलों के शासन-काल में मूर्तिकला और स्थापत्य की बड़ी उन्नति हुई। देवगढ़ का प्रसिद्ध गुप्तकालीन मंदिर झाँसी जिले में ही स्थित है। चंदेलों के समय में महोबा, बरवासागर, कालिंजर, मरफा, कालपी आदि स्थानों में निर्मित मंदिर, किले तथा अन्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऐतिहासिक अवशेष इसी भूभाग में हैं। मिरजापुर के जिले में सोनघाटी में तथा बाँदा जिले में मानिकपुर के आस-पास अनेक प्रागैतिहासिक गुफाएँ मिली हैं, जिनमें प्राचीन चित्रकारी के नमूने उपलब्ध हैं। मिरजापुर तथा बाँदा जिलों से पाषाण एवं ताम्र-युग के औजार भी प्राप्त हुए हैं।

निवासी——वर्तमान उत्तरप्रदेश प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक युग तक भारत का प्रमुख क्षेत्र रहा है। इस प्रदेश की भौगोलिक स्थिति का इसमें महत्त्वपूर्ण योग रहा है। उपजाऊ भूमि, जल की सुगमता तथा अन्य प्राकृतिक सुविधाओं के कारण उत्तरप्रदेश के अनेक भागों में लोग बड़ी संख्या में आबाद हुए। जो भाग पहाड़ों या जंगलों से अच्छादित थे उनमें सभ्यता का संचार देर से हुआ। आज भी उत्तरभारत के पर्वतीय भागों में खस, कोलिया, भोटिया, थारू आदि जातियाँ; बस्ती-गोरखपुर में बिंद, केवट, मुसाहर आदि; मिरजापुर में मँजवार, खरवार भूटिया, कोल, धाँगर, चेरो, पनका आदि तथा बुन्देलखंड में गोंड, भील, सहरिया आदि जातियाँ रहती हैं। शेष भाग में प्रायः चारों वर्णों—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्रों के विभिन्न वर्ग रहते हैं। उत्तराखंड तथा बुन्देलखंड के जिलों की बस्ती कम है; नदियों के शेष तीन भाग अधिक घने आबाद हैं। उत्तरप्रदेश की सारी जनसंख्या का लगभग अस्सी प्रतिशत गाँवों में और शेष बीस प्रतिशत शहरों में रहता है। इस प्रदेश में गाँवों की कुल संख्या १,११,७२२ है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भाषाएँ और लिपियाँ—उत्तरप्रदेश की प्राचीन प्रमुख भाषा संस्कृत थी। जो प्राचीन ग्रंथ, शिलालेख, ताम्रपत्र आदि यहाँ मिले हैं वे अधिकांश संस्कृत में ही हैं। दूसरी मुख्य भाषाएँ पाली और प्राकृत थीं। अनेक बौद्ध ग्रन्थ, सम्राट् अशोक के शिलालेख तथा अन्य कुल प्राचीन लेख पाली में मिले हैं। प्राकृत का अधिक प्रचार ई० प्रथम शती से मिलता है। कुषाणकालीन अधिकांश लेख प्राकृत या मिश्रित संस्कृत-प्राकृत भाषा में हैं। अनेक बौद्ध एवं जैन ग्रंथ अपभ्रंश में मिले हैं।

उत्तरप्रदेश में जिस लिपि का प्राचीन काल से व्यवहार किया जाता था उसे 'ब्राह्मी' कहते हैं। अधिकांश प्राचीन लेख इसी लिपि में हैं। कुछ लेख खरोष्ठी लिपि में भी प्राप्त हुए हैं, जो दाएँ से बाएँ को लिखी जाती थी। पर ऐसे लेखों की संख्या बहुत कम है। ब्राह्मी लिपि से ही ईसवी दसवीं शती के लगभग नागरी का जन्म हुआ, जो इस प्रदेश की मुख्य लिपि हुई।

वर्तमान उत्तरप्रदेश की मुख्य भाषा नागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी है। यह यहाँ की बोलचाल की तथा साहित्यिक भाषा है। इसके कई रूप प्रदेश के विभिन्न भागों में प्रचलित हैं, जिनमें मुख्य खड़ी बोली है। यह पहले मेरठ और उसके आस-पास के जिलों में बोली जाती थी और अब प्रायः सारे प्रदेश की शिष्ट भाषा हो गई है। आजकल खड़ी बोली के अतिरिक्त हिन्दी की कई उपभाषाएँ एवं बोलियाँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अवधी, कन्नौजी, बुन्देली, भोजपुरी और पहाड़ी, प्रदेश के विभिन्न भागों में प्रचलित हैं। उर्दू, हिन्दी भाषा का ही एक रूप है, जो कई-कई शताब्दियों से उत्तरप्रदेश में बोली जाती रही है और जिसमें साहित्य-रचना भी होती रही है। इसकी लिपि खरोष्ठी की तरह दाएँ से बाएँ को चलती है।

— — — —

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय २

प्रागैतिहासिक युग

उत्तरप्रदेश अति प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक राजनैतिक एवं सांस्कृतिक विकास का मुख्य केन्द्र रहा है। पंचनद प्रदेश से पूर्व की ओर बढ़ने पर आर्यों ने इस प्रदेश को अपना प्रमुख कार्यक्षेत्र बनाया। आर्यों के पूर्ववर्ती निवासियों की संस्कृति 'निषाद संस्कृति' के नाम से जानी जाती है। उनके वंशज तथा उनकी सभ्यता के कुछ अवशेष आज भी अनेक स्थानों पर पाये जाते हैं। इन तथाकथित आदिवासियों का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है।

प्रागैतिहासिक काल में इन जातियों की अवस्था का पूरा परिचय हमें नहीं है। मानव-विज्ञान की सहायता से उनके रहन-सहन की कुछ खोज की गई है। मोटे तौर पर प्रागैतिहासिक काल को निम्नलिखित युगों में विभक्त किया गया है--

१. **पूर्व पाषाण-युग**--यह मानव सभ्यता की प्रथम मंजिल मानी जाती है। मिर्जापुर, बाँदा, गढ़वाल तथा इलाहाबाद जिलों से पत्थर के बहुत से गढ़े-अनगढ़े हथियार मिले हैं। जिनका प्रयोग इस काल के लोग करते थे। ये लोग गुफाओं में रहते थे और शिकार द्वारा मारे हुए जानवरों को खाते थे। जंगल में अपने-आप उगने वाले कंदमूल भी इनके भोजन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

थे। उनके हथियार छिले या रगड़े हुए पत्थर के बने, प्रायः भद्दे ढंग के होते थे। ये लोग आग का प्रयोग नहीं जानते थे।

२. **उत्तर पाषाण-युग**––सभ्यता के क्रमिक विकास में उत्तर पाषाण-युग दूसरी मंजिल है। इस युग के हथियार सुंदर और चिकने मिलते हैं और उन पर पालिश की हुई लगती है। रहने के लिए अब लोगों ने फूस के झोंपड़े बनाने शुरू किये। अब उन्हें अग्नि का भी ज्ञान हो गया। वे जानवरों को पालने और खेती करने लगे। पत्तों और पेड़ों की छाल तथा पशुओं की खाल से वे अपने तन ढँकते थे। चाक पर बर्तन बनाकर वे उन्हें रंगों से रँगते थे। मरे हुओं को जमीन में गाड़ कर उनके ऊपर समाधियाँ बनाते थे। प्रागैतिहासिक युग के मानव के हड्डी के ढाँचे प्राप्त हुए हैं। उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक बाँदा जिले से पूर्व-पाषाण तथा उत्तर पाषाण-युग के अवशेष मिले हैं।

३. **ताम्र-युग**––पत्थर के बाद मानव ने धातु का प्रयोग करना सीखा। सबसे पहले ताँबे का इस्तेमाल किया गया। कानपुर के बिठूर तथा शिवराजपुर से, और उन्नाव जिले के परियर नामक स्थान से पुराने ताँबे के औजार मिले हैं। बदायूँ जिले के बिसौली; बिजनौर के राजपुर; सीतापुर जिले के हरदी और गंधौली; बाँदा जिले के मानिकपुर के आस-पास; मिर्जापुर के दक्षिणी भाग तथा हरिद्वार के पास बहादुराबाद आदि स्थानों से भी ताम्र-युग की बहुत-सी वस्तुएँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

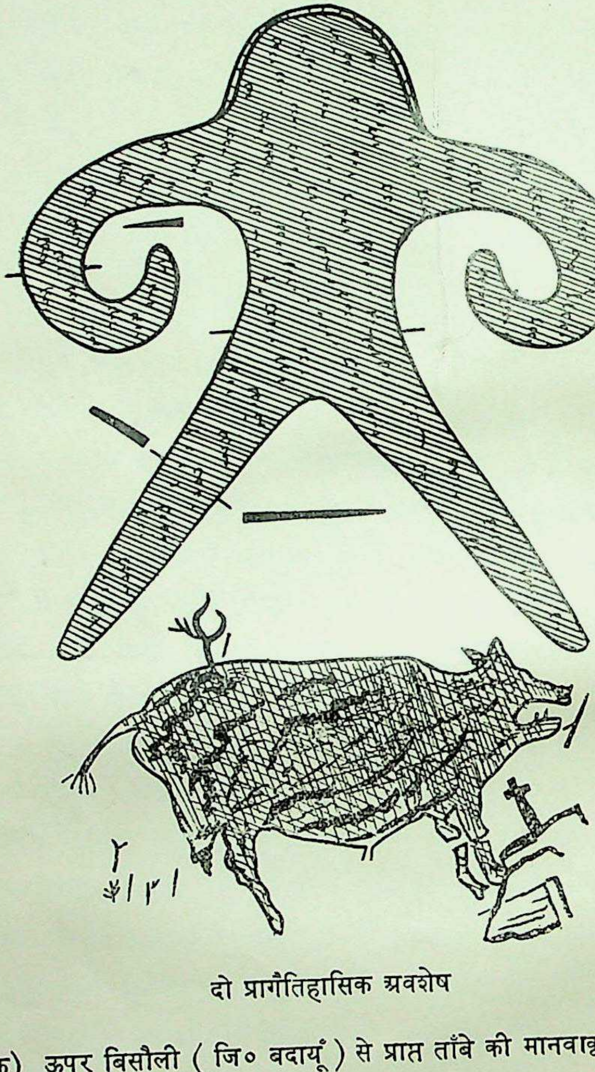

दो प्रागैतिहासिक अवशेष

(क) ऊपर बिसौली (जि० बदायूँ) से प्राप्त ताँबे की मानवाकृति ।

(ख) नीचे मिर्जापुर जिले की एक पुरानी गुफा में चित्रित जंगली सुअर, जो हथियारों की चोट से घायल हो गया है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राप्त हुई हैं। इनमें विविध प्रकार के बाण-फलक और मानवाकृतियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

मिर्जापुर जिले में सोन नदी के काँठे में प्रागैतिहासिक मानवों द्वारा गुफाओं में की गई चित्रकारी मिलती है। इनके मुख्य स्थान लिखुनिया, महरिया, विजयगढ़ और कोहवर हैं। लिखुनिया गुफा की एक चित्रकारी में घुड़सवारों द्वारा पालतू हाथियों की सहायता से एक बनैले हाथी के पकड़ने का दृश्य अंकित है। दूसरे चित्र व कुछ बड़ी चिड़ियों को फँसाया जा रहा है। महरिया और कोहवर में नृत्य करते हुए पुरुषों के चित्र हैं। आखेट के भी कुछ दृश्य हैं। भलदरिया नदी के किनारे एक गुफा में चोट खाए सूअर का चित्र है। अस्त्रों के लगने से सूअर के शरीर से खून बह रहा है। उसके चेहरे से पीड़ा की भावना टपक रही है। इसी जिले में विजयगढ़ के रास्ते में एक चट्टान पर एक योद्धा तथा शेर की आकृतियाँ दिखाई गई हैं।

उत्तरप्रदेश में हस्तिनापुर, मथुरा, परियर (जिला उन्नाव), कौशांबी आदि स्थानों से मिट्टी के बर्तनों के कई प्रकार के टुकड़े प्राप्त हुए हैं। इनके द्वारा प्रागैतिहासिक सभ्यता के विभिन्न समयों पर कुछ प्रकाश पड़ा है। इन मिट्टी के टुकड़ों को आकार एवं रंगों के आधार पर निम्नलिखित प्रकार से विभक्त किया गया है :–

१. **अधपके, मोटे तथा मटमैले ठीकरे**–ये हस्तिनापुर, बिसौली, राजपुर आदि स्थानों से मिले हैं। विद्वानों के द्वारा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इनका समय ई० पूर्व १२०० से ११०० तक माना जाता है।

२. **रंगीन भूरे मृत्पात्र**––इस प्रकार के बर्तनों के टुकड़े गंगा-यमुना के काँठे में हस्तिनापुर, मथुरा, परियर आदि स्थानों से मिले हैं। इनका समय ई० पूर्व १००० से ७०० तक अनुमान किया जाता है। कुछ विद्वानों का अनुमान है कि मिट्टी के ये बर्तन आर्यों की सभ्यता के सूचक हैं।

३. **काले रंग के चमकीले ओप (पालिश) वाले मिट्टी के बर्तन**––इस प्रकार के ठीकरे हस्तिनापुर से लेकर कौशाम्बी तथा प्राचीन स्थानों से बड़ी संख्या में प्राप्त हुए हैं। ये अपनी चमकीली पालिश के कारण आसानी से पहचाने जा सकते हैं। इसका समय ई० पूर्व ६०० से २०० तक अनुमान किया जाता है।

प्रागैतिहासिक सभ्यता के विषय में विद्वानों का अनुमान है कि उत्तर प्रदेश के बाँदा, मिर्जापुर आदि भूभागों में अब से कई लाख वर्ष पूर्व मानव का निवास हो गया था। उसकी सभ्यता के अवशेष विविध प्रकार के पत्थर तथा ताँबे के औजारों और गुफा-चित्रों के रूप में प्राप्त हुए हैं। गंगा-यमुना की घाटी में अनेक स्थानों पर आर्य-सभ्यता के पूर्व के चिह्न मिले हैं। इनमें पूर्वोक्त मोटे, मटमैले ठीकरे तथा बिसौली, राजपुर, बिठूर, फतहगढ़, हर्दी आदि स्थानों से प्राप्त ताँबे के विविध हथियार शामिल हैं। इन वस्तुओं को समकालीन माना जाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तर प्रदेश के दक्षिणी भाग तथा गंगा-यमुना के अतिरिक्त बेतवा, टोंस, गोमती, सरयू आदि नदियों के तट पर सर्वेक्षण करने से प्रागैतिहासिक सभ्यता के सम्बन्ध में अधिक जानकारी प्राप्त हो सकेगी। इन स्थानों के कुछ प्राचीन टीलों की खुदाई से भी इस दिशा में पर्याप्त प्रकाश पड़ सकेगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय ३

पूर्व-वैदिक युग

वैदिक युग का प्रारंभ कब से हुआ, यह प्रश्न आर्यों के भारत में आकर बसने से संबंधित है। इस विषय पर विद्वानों के विभिन्न मत हैं। कुछ लोग उन्हें मध्य एशिया के किसी भाग से, कुछ पूर्वी या मध्य यूरोप से तथा कुछ अन्य विद्वान् उन्हें उत्तरी ध्रुव के समीपवर्ती प्रदेश से यहाँ आया हुआ मानते हैं। कुछ ऐसे भी विद्वान् हैं जो आर्यों को कहीं बाहर से आया हुआ न मान कर भारत के ही मूल निवासी मानते हैं। परन्तु वर्तमान शोधों से यही अधिक युक्तिसंगत मालूम पड़ता है कि वे प्रारम्भ में किसी हिमवान प्रदेश के रहने वाले थे और यूरोप के अनेक देशों तथा ईरान और अफगानिस्तान होते हुए भारत के पश्चिमोत्तर भाग में प्रविष्ट हुए। ऐसा प्रतीत होता है कि आर्य लोग भारत में एक ही समूह में न आकर कई टुकड़ियों में आए। पश्चिमोत्तर भारत में कुछ समय तक रह कर उन्होंने बहुत प्राचीन सूक्तों (मंत्रों) की रचना की, जो उनके सब से प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद में सुरक्षित हैं।

ऋग्वेद भारत का सब से प्राचीन ग्रन्थ है। इसके बाद यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद की रचना हुई और इनके पीछे ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद् रचे गए। प्रारम्भिक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वेद-मंत्रों की रचना से लेकर प्राचीन उपनिषदों की रचना तक का लम्बा काल 'वैदिक युग' कहाता है। इसके दो भाग किए जा सकते हैं--(१) पूर्ववर्ती वैदिक काल (लगभग ई० पू० २००० से १०००) तथा दूसरा परवर्ती या उत्तर-वैदिक काल (लगभग ई० पूर्व १००० से ६०० तक)। वेदों की रचना पहले काल में हुई और ब्राह्मणादि ग्रन्थ परवर्ती काल में रचे गए।

प्रथम युग की सभ्यता को जानने के लिए ऋग्वेद में प्रचुर सामग्री है। इससे पता चलता है कि पहले आर्य लोग अणु, पुरु, यदु आदि जनों या टुकड़ियों में बँटे हुए थे। इनके बाद भरत, पंचाल, कुरु, मत्स्य, उशीनर आदि अन्य जनों के नाम मिलते हैं। धीरे-धीरे आर्य लोग पंजाब से पूर्व और दक्षिण की ओर फैलने लगे थे। यहाँ के मूल निवासियों से उन्हें प्रारम्भ में झगड़ना पड़ा, पर धीरे-धीरे के दोनों मिल-जुल कर रहने लगे। उनमें आपस में अनेक सांस्कृतिक आदान-प्रदान हुए। वैदिक काल के अन्त तक आर्य लोग उत्तर प्रदेश में बस गए। कुछ लोग बिहार तथा विन्ध्य के दक्षिण तक फैल गए। ऋग्वेद में गंगा-यमुना, सरयू आदि नदियों के उल्लेख मिलते हैं। इन नदियों के तटों पर गाँवों में अधिकांश आर्य-बस्तियाँ थीं। धीरे-धीरे उत्तर प्रदेश में हस्तिनापुर, मथुरा, कांपिल्य, अयोध्या आदि स्थान बहुत प्रसिद्ध हो गए।

आर्यों के बस जाने से उनके जीवन में स्थिरता का भाव

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आ गया। वे खेती करने तथा पशु पालने लगे। खेती के योग्य जमीन पर लोगों का व्यक्तिगत अधिकार हो गया, पर चरागाहों तथा वनों पर गाँव के सभी लोगों का समानधिकार माना जाता था। ग्रामीण लोग मिल-जुलकर अपनी आवश्यकताएँ पूरी करते थे। इस प्रकार सहकारिता की भावना यहाँ बहुत पहले से मिलती है। प्रत्येक गाँव का एक मुखिया होता था, जिसे 'ग्रामणी' कहते थे। गाँव के सार्वजनिक हित के काम पंचायत द्वारा संपादित होते थे। गाँवों में जुलाहे, लुहार, बढ़ई, कुम्हार, माली रहते थे जो लोगों की साधारण आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे। धीरे-धीरे उद्योगों के बढ़ जाने, और फलस्वरूप जन संख्या की वृद्धि होने से कुछ गाँव नगर बन गए। नगरों में ही राजा लोग अपनी राजधानियाँ बनाते थे, जिससे उनका महत्त्व बढ़ जाता था।

इस काल में मुख्य उद्योग खेती, पशु-पालन, सूती-ऊनी कपड़े बनाना, बढ़ईगीरी, लुहारी, सुनारी, चमड़े का काम तथा छोटी-बड़ी नौकाएँ बनाना थे। पत्थर का काम, डलिया, रस्सी बनाना, बर्तन बनाना आदि कई छोटे उद्योग-धंधे भी थे। आर्यों द्वारा रथों पर सवारी तथा नौकाओं पर बैठकर जल-यात्रा करने के अनेक रोचक वर्णन मिलते हैं। वे बड़ी नौकाओं द्वारा पश्चिमी देशों को भी जाते थे।

राजा 'जन' का मुख्य व्यक्ति या प्रधान होता था। उसी प्रकार कुटुम्ब का प्रधान गृहपति होता था। राजा की सहायता के लिए 'समिति' तथा 'सभा' नामक दो संस्थाएँ थीं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सभा में विनोद-गोष्ठियाँ भी होती थीं, जिनमें जुआ, सोम-पान, संगीत, काव्य-क्रीड़ा आदि होते थे।

वैदिक आर्य अनेक देवताओं तथा पितरों की पूजा करते थे। गृहस्थों के यहाँ अग्नि-पूजा होती थी। यज्ञों में आहुतियाँ दी जाती थीं। प्रकृति की विभिन्न शक्तियों को अग्नि, सूर्य, वरुण, इन्द्र, उषा, सोम, प्रजापति, मरुत, रुद्र आदि के रूप में पूजा जाता था और उनका स्तवन किया जाता था। ये सब देवता कल्याणकारी और वर देने वाले थे। वैदिक आर्य इनसे भरे-पूरे घर तथा दूध देने वाली स्वस्थ गायों की कामना करते थे। साधारण जनता में कुछ मंत्र-तंत्र, जादू-टोने भी प्रचलित हो गए थे।

धीरे-धीरे यज्ञों का महत्त्व बढ़ने लगा। यह विचार होने लगा कि देवों तथा पितरों की तृप्ति यज्ञ में दी गई आहुतियों या बलि से होती है। कुछ ऋषि लोग मांस के स्थान पर अन्न की बलि देने के पक्ष में थे। यज्ञों के प्रकार धीरे-धीरे जटिल और विस्तृत होते गए तथा पुरोहितों का महत्त्व बढ़ा।

विवेच्य काल में स्त्री-पुरुष में समानता की भावना थी। पुरुषों की तरह स्त्रियाँ भी ऋषि तथा ब्रह्मवादिनी होती थीं। अनेक स्त्रियों के द्वारा वैदिक मंत्रों की भी रचना की गई। स्त्रियों को समाज में पर्याप्त स्वतंत्रता थी। अभी तक जाति-प्रथा रूढ़ न हुई थी और सामाजिक ऊँच-नीच की भावना लोगों में न आई थी।

वैदिक युग में अनेक प्रकार के वस्त्रों का पता चलता है।

२

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कताई और बुनाई का काम आर्यों का एक प्रधान धंधा था। प्रारंभिक अवस्था में कुछ आर्य लोग गाय, हिरन आदि पशुओं के चमड़े धारण करते थे। फिर कपास के वस्त्रों का प्रचलन हुआ। धुले और कोरे कपड़ों का व्यवहार होने के उल्लेख मिलते हैं। स्त्रियाँ रंगीन तथा सुनहरे काम वाले वस्त्र भी धारण करती थीं। निम्न श्रेणी के लोग प्रायः नीले रंग के कपड़े पहनते थे। कसीदे का काम भी होता था। कपड़े के ऊपर, नीचे और बीच में अनेक प्रकार के बेल-बूटे काढ़े जाते थे। शिष्ट लोगों का साधारण पहनावा धोती (धौतवस्त्र), दुपट्टा (उत्तरीय) तथा पगड़ी (उष्णीष) था। कभी-कभी स्त्रियाँ भी पगड़ी पहनती थीं। नीचे वर्ग वाले लोग पगड़ी के साथ काली किनारी वाले कपड़े और बकरे की खाल पहनते थे। कुछ लोग लाल रंग की पगड़ी तथा कुर्ते पहनते थे। वे जूते भी धारण करते थे। उत्सवों में लोग विशेष रूप से सजते थे, विशेष कर स्त्रियाँ। कुछ स्त्रियाँ जिनका विवाह होने में अड़चन होती थी, भड़कीले लाल कपड़े पहन कर सभाओं में जाती थीं। वस्त्रों के अतिरिक्त प्रसाधन और अलंकार-धारण का भी लोगों को शौक था। वे अनेक प्रकार के आभूषणों से सज-धज कर समारोहों में जाते थे। परवर्ती वैदिक काल में भी यह वेशभूषा प्रचलित रही।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय ४

उत्तर-वैदिक युग

लगभग ई० पूर्न १००० से लेकर ई० पूर्व सातवीं शती के अंत तक का समय उत्तर-वैदिक युग कहलाता है। इस काल में परवर्ती वैदिक साहित्य––ब्राह्मणों, आरण्यकों एवं उपनिषदों की रचना हुई। आरण्यकों एवं उपनिषदों में वैदिक कर्मकाण्ड और जीवहिंसा के विरुद्ध विचारधारा मिलती है, इससे समाज बहुत प्रभावित हुआ। उपनिषदों के अध्यात्म-वाद में तत्त्वदर्शन का उच्च रूप दिखाई पड़ता है। कर्मकांड की जटिलता के स्थान में अब ब्रह्म की उपासना तथा आत्मा-परमात्मा के गूढ़ विषयों का चिंतन समाज के विचारशील व्यक्तियों में अधिक मान्य हुआ। पुरोहित-ब्राह्मणों की वरिष्ठता को इस संक्रान्तिकाल में धक्का पहुँचा। उनकी जटिल याज्ञिक क्रियाओं से जनता के एक बड़े भाग का विश्वास उठने लगा। अब क्षत्रिय लोग अध्यात्म-चिन्तन के क्षेत्र में अग्रसर हुए। यहाँ तक कि वे तत्त्वज्ञान की उच्च शिक्षा ब्राह्मणों को भी देने लगे। जनक, प्रवाहण जैबलि, अजातशत्रु आदि क्षत्रिय शासकों के उदाहरण हमारे सामने हैं। बृहदारण्यक तथा छांदोग्य उपनिषदों में आया है कि उद्दालक आरुणि के पुत्र श्वेतकेतु पंचाल के शासक प्रवाहण जैबलि की सभा में अपने ज्ञान की परीक्षा देने गए। जैबलि ने उनसे आत्मा और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परलोक-संबंधी कतिपय प्रश्न पूछे, जिनका संतोषजनक उत्तर श्वेतकेतु न दे सके। उन्होंने लौटकर यह बात अपने पिता से बताई। इस पर उद्दालक आरुणि स्वयं प्रवाहण जैबलि के यहाँ गये और उनसे पिता-पुत्र दोनों ने तत्त्वज्ञान की उच्च शिक्षा प्राप्त की।

उपनिषदों के दार्शनिक ज्ञान के साथ-साथ वैदिक कर्मकांड भी चल रहा था। ब्राह्मण-ग्रंथ, श्रौतसूत्र तथा गृह्यसूत्र इसके प्रमाण हैं। इनमें अनेक प्रकार के यज्ञों और उनकी प्रणालियों का विस्तृत कथन मिलता है। ब्राह्मणों का एक अच्छा समुदाय अब इन यज्ञों का संचालन कर रहा था, यद्यपि उनमें पहले जैसी लोगों की व्यापक आस्था न रह गई थी। बुद्ध के पहले के तथा उनके समसामयिक अनेक शासक वैदिक कर्मकांड के प्रबल समर्थक एवं संरक्षक थे।

ब्राह्मण वर्ग का कोई बड़ा केन्द्रीय संगठन बुद्ध के पूर्व न था। ब्राह्मणों के ऐसे कोई मंदिर भी न थे जिनमें लोग विधिवत् पूजा-आराधना कर सकते। प्रायः साधारण जन-समाज वृक्षों की पूजा करता था, जिनमें देवत्व की भावना मानी जाती थी। वृक्षों के अतिरिक्त साधारण लोगों में नाग-पूजा भी प्रचलित थी। ये नाग जल के निवासी और प्रभूत संपत्ति के स्वामी माने जाते थे और लोग उनसे भय खाते थे। इन नागों की सर्पविग्रह (साँप की मूर्ति में) तथा मानव-विग्रह (मनुष्य की मूर्ति) इन दोनों रूपों में पूजा होती थी।

यक्षों तथा गंधर्वों की पूजा भी इस काल में प्रचलित

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

थी। यक्षों के अनेक बड़े केन्द्र मथुरा, आलवी आदि स्थानों में थे। ये यक्ष महान् शक्तिशाली तथा धन के अधिपति माने जाते थे। यक्षों तथा यक्षिणियों की पूजा में लोगों का विश्वास बढ़ चला था। उनके अनेक रूपों की कल्पना की गई थी। यक्षों के पराक्रमी रूप के प्रति लोगों में भय के कारण श्रद्धा उत्पन्न हुई। यक्षिणियों की साधना प्रायः उनके कल्याणप्रद सुन्दर मोहक रूप में की जाती थो। उनका दूसरा रूप भयावना होता था। प्राचीन साहित्य में यक्षों के संबंध में प्रचुर उल्लेख मिलते हैं। महाभारत में यक्ष द्वारा युधिष्ठिर से अनेक प्रश्न पूछने की बात प्रसिद्ध है। इस यक्ष-प्रश्न की वैदिक संज्ञा 'ब्रह्मोद्य' थी। उत्तर भारत में यक्ष-पूजा का कितना अधिक प्रचार हो गया था, इनका विशेष पता हमें बौद्ध और जैन-साहित्य से मिलता है। इस साहित्य में उंबरदत्त, सुरंबर, माणिभद्र, भंडीर, शूलपाणि, सुरप्रिय, घंटिक, पूर्णभद्र आदि कितने ही शक्तिशाली यक्षों के नाम मिलते हैं। इसी प्रकार कुन्ती, नटा, भट्टा, रेवती, तससुरी, लोका, मेखला, आलिका, बेन्दा, मघा, तिमिसिका आदि अनेक यक्षों या यक्षिणियों के नाम भो प्राप्त होते हैं इनसे लोग बहुत भय खाते थे। अंतिम चारों यक्षिणियाँ मथुरा की थीं। बुद्ध ने उन्हें अनुचित कार्य करने से रोका, मथुरा में गर्दभ नामक यक्ष बड़ा शक्तिशाली था। उसका दमन कर बुद्ध ने मथुरा के निवासियों का कष्ट दूर किया। इसी प्रकार आलवी का दुर्दान्त यक्ष भी बुद्ध द्वारा विनम्र बनाया गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस काल की अनेक लौकिक मान्यताओं तथा अंध-विश्वासों का भी पता चलता है। इनमें से कुछ इस प्रकार थे—हस्त-ज्योतिष, सब प्रकार के देव-कथन, दैवी घटनाओं से फलों का कथन, स्वप्न-फल, मूषकों द्वारा काटे हुए कपड़े का फल-कथन, अग्नि-बलि, विभिन्न प्रकार के देवों को बलि-प्रदान, भाग्यप्रद स्थानों का अभिज्ञान, मंत्र-तंत्र, प्रेतविद्या, सर्प तथा विविध पशु-पक्षियों का वशीकरण, फलित ज्योतिष, विविध प्रकार की भविष्यवाणियाँ, किसी लड़की को बुला कर या दर्पण की सहायता से रहस्य का उद्घाटन, गुप्त धन को खोजने की विद्या, सर्वशक्तिमान की उपासना, सिरि या लक्ष्मी-देवी का आवाहन, देवों की आन या सौगंध तथा वशीकरण और इन्द्रजाल की विद्याएँ।

इस प्रकार लोक में अनेक प्रकार के चमत्कारपूर्ण क्रिया-कलापों तथा मंत्र-तंत्रों में श्रद्धा विद्यमान थी। अग्नि, इंद्र आदि वैदिक देवताओं की पूजा अब भी प्रचलित थीं। परन्तु इसके साथ ही मातृदेवी, वृक्ष देवता, यक्षों, नागों तथा असुरों की पूजा भी होती थी। इन लौकिक देवताओं में कुछ तो दयालु थे और कुछ कठोर और क्रोधी। अनेक देवता वायु, मेघ, गर्मी, प्रकाश आदि के प्रतीक थे और कुछ मानसिक प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करते थे।

अनेक मत-मतांतर इस काल में फूल-फल रहे थे। इस संक्रान्ति काल में धार्मिक मान्यताओं के सम्बन्ध में लोगों को विचार-स्वातंत्र्य प्राप्त था। कुछ आधुनिक विद्वानों का यह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विचार कि बुद्ध के पूर्व भारतीय समाज ब्राह्मणों द्वारा पैदा की गई धार्मिक रूढ़ियों में जकड़ा हुआ था, युक्तिसंगत नहीं है। वास्तव में इस काल में लोग धार्मिक विषयों में स्वतंत्र थे, जिसके फलस्वरूप चिन्तन की कितनी ही धाराएँ एवं सम्प्रदाय अस्तित्व में आ गए थे। पाली साहित्य के अनुसार बुद्ध के धर्म-प्रचार के पूर्व ६२ सम्प्रदाय विद्यमान थे। ये आजीवक, परिव्राजक, जटिलक, मुंड श्रावक, तेदंडिक आदि थे। जैन-ग्रंथों में इन सम्प्रदायों की संख्या ३६३ दी हुई है। इनमें से कितने ही वैदिक धर्म में या जैन एवं बौद्ध धर्म में समा गए होंगे। बुद्ध के समय में विविध धर्मों के कितने ही विद्वान् प्रचारक मौजूद थे। इनमें पुराण, कस्सप, मक्खलि गोषाल, निगंठ नाटपुत्त, अजित केशकम्बलिन, असित ऋषि, पबुद्ध कच्चायन, मोग्गलान, संजय वेलट्ठपुत्त, आडार कालाम, उद्दक रामपुत्त, रुद्रक रामपुत्र आदि अनेक विद्वानों के नाम साहित्य में मिलते हैं।

इस काल की सामाजिक स्थिति का यहाँ परिचय देना आवश्यक है। बुद्ध के पूर्व समाज में रंग या वर्ण के आधार पर बड़ाई-छुटाई थी। पर उसने परवर्ती काल की जाति-प्रथा का रूप नहीं ग्रहण किया था। जन्म ही उच्चता या लघुता का निर्णायक है, यह बात समाज के एक अल्प वर्ग में ही मान्य थी। कर्म की प्रधानता की ओर अब लोगों का ध्यान गया था और यह स्वीकार किया जाने लगा था कि छोटे समझे जाने वाले लोग अच्छे कर्मों से ऊँचे उठ सकते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उपनिषदों में तथा बुद्ध द्वारा दिये गए कई उत्तरों में इसकी अभिव्यक्ति मिलती है।

वंश——परंपरागत कर्मों को छोड़कर लोग अन्य पेशों को भी अपनाते हैं। जातक साहित्य में ऐसे कितने ही उदाहरण मिलते हैं। एक जातक में एक क्षत्रिय पहले कुंभकार का काम और फिर डलिया बनाने वाले का काम अपनाता है। इसके बाद वह क्रमश: मालाकार (माली) तथा रसोइया बनता है। पर इन बातों से उसकी उच्च जाति में कोई अंतर नहीं आता। इसी प्रकार एक सेठ दर्जी तथा कुम्हार का पेशा अपनाने पर भी उच्च वर्ग का ही माना जाता है। कुछ ब्राह्मणों ने यह देखा कि यज्ञादि कर्मों द्वारा जीविकोपार्जन नहीं हो पाता तब वे अन्य कार्य करने लगे। बौद्ध साहित्य में खेती करने वाले, बनिया का धंधा करने वाले, बढ़ई ब्राह्मण तथा शिकारी ब्राह्मणों के उल्लेख मिलते हैं। ब्राह्मण विद्यार्थियों को पढ़ाने का, भविष्य-कथन का तथा मंत्र-तंत्र का काम भी करने लगे थे।

ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा सेट्ठि (सेठ) वैश्य, इन तीन उच्च वर्णों के अतिरिक्त हीन जाति वाले लोग भी थे, जिनके पेशों का उल्लेख बौद्ध साहित्य में मिलता है। ये लोग चिड़ीमार, नट, चमार, जुलाहे, डलिया बनाने वाले, बढ़ई, नाई, कुम्हार आदि थे। इन हीन जातियों के भी नीचे चण्डाल, पुक्कुस आदि थे। इनके अतिरिक्त दास भी थे, जिनकी संतान भी प्राय: दास समझी जाती थी। ये लोग

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अधिकतर घरेलू नौकर होते थे और उनके साथ अच्छा व्यवहार किया जाता था। इनकी संख्या अधिक न थी।

तत्कालीन समाज में अनुलोम तथा प्रतिलोम दोनों प्रकार के विवाह प्रचलित थे। दो असवर्ण स्त्री-पुरुष के संयोग से उत्पन्न सन्तान, उन दोनों में से जो उच्च वर्ग का होता था, उसी की मानी जाती थी। आपस में खान-पान भी प्रचलित था, पर चण्डालों, पुक्कुसों आदि के साथ उच्च वर्ग के लोगों का भोजन करना ठीक नहीं समझा जाता था।

इस काल की एक उल्लेखनीय व्यवस्था आश्रमों की थी। आरण्यकों तथा प्राचीन उपनिषद्-ग्रंथों में केवल तीन आश्रम बताए गए हैं--ब्रह्मचर्य, गृहस्थ तथा वानप्रस्थ। ये तीनों आश्रम जीव रूपी वृक्ष की तीन शाखाओं के रूप में माने जाते थे, न कि जीवन की क्रमिक धाराओं के रूप में। परवर्ती उपनिषदों तथा महाभारत एवं धर्म-सूत्रों में आश्रमों का पिछला स्वरूप मिलने लगता है और चौथा संन्यास आश्रम भी तीनों आश्रमों के साथ जुड़ जाता है।

वनों में निवास करने वाले वानप्रस्थी लोग प्रायः वैदिक कर्मकाण्ड से विरत रहने लगे थे। उन्होंने ज्ञान-मार्ग को अधिक श्रेयस्कर समझा। धर्म-प्रचारकों के रूप में इन लोगों की मान्यता बढ़ी। अनेक विदुषी महिलाओं ने भी वैदिक कर्मकाण्ड के स्थान पर दार्शनिक विचारधारा के प्रचार में योग दिया। फलस्वरूप कर्मकाण्ड को अपेक्षा ज्ञान-मार्ग की ओर प्रवृत्ति बढ़ने लगी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राक्-बुद्धकालीन समाज की आर्थिक स्थिति अच्छी थी। अनेक प्रकार के उद्योग-धन्धे उन्नति पर थे। यातायात के साधनों के अच्छे होने के कारण सड़कों के किनारे बड़े नगर स्थापित थे, जिनमें विविध व्यवसाय प्रचलित थे। ये नगर चंपा, राजगृह, वाराणसी, अयोध्या, साकेत, श्रावस्ती, कौशाम्बी, मथुरा, तक्षशिला आदि थे। जो मुख्य व्यवसाय इस काल में प्रचलित थे वे वस्त्र-उद्योग, हाथीदाँत के काम, धातु के काम, बढ़ईगीरी, कुम्हार के काम तथा पत्थर के काम थे। इसके अतिरिक्त रत्नकार (जौहरी), मालाकार (माली), सुराकार (मदिरा बनाने वाला), रंगकार (रंगरेज), चर्मकार (जूते बनाने वाले) भी थे।

इस काल में शिल्पियों और व्यवसायियों ने अपने को ग्रामीण कृषक जनता पर पूर्णतया अवलंबित रहने के बजाय बहुत-कुछ स्वतंत्र कर लिया था। इससे उन्हें अपने व्यवसाय को एक निर्दिष्ट परिधि से आगे बढ़ाने का मौका मिल गया। अब वे गाँव के लोगों की आवश्यकताओं से कहीं अधिक सामान बनाने लगे और उसे बाहर भेजने लगे। उद्योगों की उन्नति एवं सुरक्षा के लिए विविध व्यवसायवालों ने अपने-अपने संगठन बना लिये, जो निगम, संघ, श्रेणी, पूग, निकाय, आदि नामों से प्रसिद्ध हुए। प्रत्येक निगम का एक प्रधान या अध्यक्ष होता था जो प्रमुख (पमुख) या जेट्ठक (ज्येष्ठक) कहलाता था। जातकों में कुमार जेट्ठक (सं० ३८७), मालाकार जेट्ठक (सं० ४१५), बुड्ढकि जेट्ठक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(सं० ४६६) आदि के उल्लेख मिलते हैं। व्यापारियों के समुदायों के प्रधान सत्थवाह जेट्ठक (सं० २५६) कहलाते थे। जातकों से पता चलता है कि चोरों के भी समुदाय अपने जेट्ठक नियुक्त करते थे। ५०० चोरों के एक जेट्ठक का वर्णन सतपत्त जातक (सं० २७९) में मिलता है। समुद्दवाणिज जातक (सं० ४६६) में लिखा है कि एक गाँव में बढ़इयों के १००० मकान थे। इनमें से प्रत्येक ५०० बढ़इयों के ऊपर एक अध्यक्ष था। कहीं-कहीं अध्यक्ष के लिए सेट्ठि (श्रेष्ठि) शब्द मिलता है। विभिन्न निगमों के सदस्यों की संख्या पृथक्-पृथक् होती थी। शिल्पियों और व्यापारियों के निकाय अपने-अपने व्यवसायों के संरक्षण एवं प्रवर्धन के प्रति सचेष्ट रहते थे। इनके जेट्ठकों का शासन में प्रायः महत्त्वपूर्ण भाग रहता था। निकायों के अपने नियम थे, जो राज्य द्वारा मान्य थे। धर्म-सूत्र ग्रंथों से पता चलता है कि राजा संघों के नियमों का आदर करता था और किसी प्रकार की अव्यवस्था होने पर विविध वर्गों को उनके नियमों में नियोजित करता था। निगमों का शासन-कार्य में बड़ा हाथ रहता था। उरग जातक से ज्ञात होता है कि व्यावसायिक संघों के दो अध्यक्ष कोसल राज्य के महामात्र-पद पर आसीन थे। सूची जातक में लोहकारों (लोहारों) के प्रमुख को 'राजवल्लभ' (राजा का विशेष कृपा-पात्र) कहा गया है। निग्रोध जातक में उल्लेख आया है कि एक जेट्ठक राज्य का कोषाध्यक्ष बनाया गया था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बौद्ध साहित्य में सेट्ठि (सेठ) का उल्लेख बहुत मिलता है। ये कई प्रकार के होते थे। सब से बड़ा महासेट्ठि कहलाता था। उससे छोटे अनुसेट्ठि तथा उत्तरसेट्ठि थे। समाज में इनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। बुद्ध के समकालीन अनाथपिण्डक सेठ की कथा प्रसिद्ध है। उसका सम्बन्धी राजगृह का महासेट्ठि था। मगधराज बिंबसार तक उसके यहाँ निमंत्रण में आया करते थे। इसी प्रकार मृगधर, यश, मेंडक, धनंजय आदि की गणना भी बड़े श्रेष्ठियों में थी। महावग्ग से ज्ञात होता है कि राजगृह का सेट्ठि वहाँ के राजा तथा वणिक-समुदाय के हित के लिए विविध कार्य करता रहता था। राजा लोग सेट्ठि का आदर करते थे, और उसकी सलाह राज्य के अनेक कार्यों में ली जाती थी।

विशेष आवश्यकता पड़ने पर सेट्ठि राज्य के लिए धन भी प्रदान करता था। व्यापारिक वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में वह राजा के व्यावसायिक हितों की रक्षा करता था। किन्हीं निगमों के बीच कोई झगड़ा उपस्थित होने पर राजा सेट्ठि की सहायता से उसे निपटाता था। देश की आर्थिक योजनाओं के निर्माण में, उत्पादन-वितरण आदि की व्यवस्था में तथा श्रेणिधर्म पर विचार करने में राजा श्रेष्ठि से परामर्श करता था। श्रेष्ठि की अनुपस्थिति में उसका कार्य अनुश्रेष्ठि (अनुसेट्ठि) करता था।

ये महासेट्ठि आदि के पद प्रायः कुलक्रमागत होते थे। राज्यपरिवार उनके प्रति सम्मान का भाव रखते थे। अट्ठान

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जातक में लिखा है कि बनारस का एक राजकुमार वहाँ के सेट्ठि-पुत्र के साथ एक ही गुरु के यहाँ पढ़ता था। बड़े होने पर भी इन दोनों की मैत्री में कमी नहीं आई। सेट्ठि लोग प्रायः साहित्य तथा ललित कलाओं को संरक्षण प्रदान करते थे। उनके यहाँ कितने ही संगीतज्ञ, नर्तक-नर्तकियाँ, चित्रकार तथा अन्य कलाकार रहते थे। समय-समय पर उनके यहाँ विविध आमोद-प्रमोद के विशेष आयोजन हुआ करते थे। जातकों में असीतिकोटिविभवी सेट्ठि (अस्सी करोड़ की संपत्ति वाले) सेठों के वर्णन कई स्थानों पर मिलते हैं। नगरों के अतिरिक्त कुछ सेट्ठि गाँवों में भी रहते थे। संभवतः उनके लिए ही साहित्य में 'जनपद सेट्ठि' शब्द का व्यवहार हुआ है।

ये सेठ लोग अपने लड़कों को ऊँची से ऊँची शिक्षा दिलाने का प्रयत्न करते थे। निग्रोध जातक से ज्ञात होता है कि राजगृह के सेट्ठि ने अपने दो लड़कों को तक्षशिला में अध्ययन के लिए भेजा और वहाँ के अध्यापक को २००० मुद्राएँ भेंट में दीं। उस समय तक्षशिला के विश्वविद्यालय में विविध प्रकार की उच्च शिक्षा का प्रबन्ध था।

शिल्पी तथा व्यवसायी लोग दान देने में अग्रणी थे। कितने ही मंदिर, औषधालय, पुण्यशाला, विद्यालय तथा गरीब लोग उनके दान से फलते-फूलते थे। विविध व्यवसाय वालों तथा साधारण गृहपतियों को वे धन उधार देते या दिलाते थे। उस समय बैंक नहीं थे। लोग प्रायः अपना धन जमीन में गाड़ देते थे। बिना ब्याज और ब्याज पर भी धन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उधार दिया जाता था। पाणिनि ने द्वैगुणिक (दुगुने), त्रैगुणिक (तिगुने) और दशैकादशिक (दस-ग्यारह गुने) ब्याज का उल्लेख किया है, जो वास्तव में बहुत अधिक था। वशिष्ठ ने ब्याज की दर दो प्रतिशत से पाँच प्रतिशत तक लिखी है। धर्मशास्त्रकारों ने ब्राह्मणों तथा क्षत्रियों के लिए ब्याज लेना निषिद्ध लिखा है। ब्याज की विभिन्न दरें बुद्धकाल से पहले भी प्रचलित रही होंगी।

इस प्रकार हम देखते हैं बुद्ध के पूर्व वर्तमान उत्तर प्रदेश के कोसल, काशी, पंचाल, शूरसेन आदि राज्य आर्थिक दृष्टि से समृद्ध थे। शिल्प तथा वाणिज्य की दशा अच्छी थी। इस काल में कई बड़े व्यापारिक मार्ग थे। एक बड़ी सड़क श्रावस्ती से प्रतिष्ठान तक जाती थी। इस पर मुख्य बड़े नगर साकेत, कौशाम्बी, विदिशा, गोनर्द, उज्जयिनी तथा माहिष्मती थे। दूसरा बड़ा मार्ग श्रावस्ती से राजगृह तक जाता था। फिर वहाँ से दक्षिण की ओर जाता था। मार्ग में ठहरने के स्थान सेतव्य, कपिलवस्तु, कुशीनगर, पावा, हस्तिग्राम, भंडग्राम, वैशाली, पाटलिपुत्र और नालंदा थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बोधिवृक्ष के नीचे अभय-मुद्रा में बैठे हुए भगवान् बुद्ध की मूर्ति, जिसकी चौकी पर ई० प्रथम शती का ब्राह्मी लेख खुदा है।

(पुरातत्त्व संग्रहालय, मथुरा)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय ५

बुद्ध के समय से गुप्त-काल तक

महात्मा बुद्ध का आविर्भाव ई० पूर्व ६२३ में माना जाता है। उनके समय में भारत के सोलह बड़े राज्यों (षोडश महाजन पदों) का उल्लेख मिलता है। उनमें से आठ राज्य उत्तर प्रदेश में थे, जो इस प्रकार हैं :—

१. **काशी**—इसकी राजधानी वाराणसी (बनारस) थी। ब्रह्मदत्त राजाओं के राज्यकाल में इस राज्य की अच्छी उन्नति हुई।

२. **कोशल**—इस राज्य की राजधानी श्रावस्ती (वर्तमान सहेत-महेत, जिला गोंडा, बहराइच) थी। इसके पहले साकेत और अयोध्या कोशल के प्रधान नगर थे।

३. **मल्ल**—यह राज्य हिमालय की तराई में था। मल्लों की दो शाखाएँ थीं—एक का केन्द्र कुशीनारा में और दूसरी का पावा में था।

४. **चेटि या चेदि**—यह राज्य आधुनिक बुन्देलखण्ड में था। इसकी राजधानी सूक्तिमती थी, जिसे सेत्थिवती नगर भी कहते थे।

५. **वरु या वत्स**—अवंती राज्य के पूर्वोत्तर में यमुना के किनारे यह राज्य था। इसकी राजधानी कौशाम्बी थी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

६. **कुरु**--दिल्ली के आस-पास का प्रदेश । इंद्रप्रस्थ और हस्तिनापुर इसके प्रधान नगर थे ।

७. **पंचाल**--आधुनिक रुहेलखंड । इसके दो भाग थे--उत्तर और दक्षिण पंचाल । इन दोनों के बीच में की सीमा गङ्गा नदी थी । उत्तर पंचाल की राजधानी अहिच्छत्रा और दक्षिण पंचाल की काम्पिल्य थी ।

८. **शूरसेन**--मत्स्य राज्य के पूर्व में था, राजधानी मथुरा थी ।

शेष आठ राज्य मगध, अंग, वज्जि, मत्स्य, अश्मक, अवंती, गांधार और कम्बोज थे । बुद्ध के समय में यद्यपि राजतंत्र-प्रणाली की प्रधानता थी पर उत्तर प्रदेश के उत्तर-पूर्वी भाग तथा पश्चिमी बिहार में कई गणराज्य भी थे । इन राज्यों की शासन-व्यवस्था का कुछ पता प्राचीन बौद्ध साहित्य में मिलता है ।

ई० पू० छठी शती में महात्मा बुद्ध ने एक नये धर्म का प्रचार किया । उनका कार्यक्षेत्र मुख्य रूप से उत्तर भारत रहा । उत्तर प्रदेश के सारनाथ श्रावस्ती, कौशाम्बी, संकाश्य, मथुरा, कुशीनगर आदि स्थानों में बुद्ध काफी समय तक रहे । इनमें से कई स्थान तो उनके जीवन की मुख्य घटनाओं से सम्बन्धित हैं । महात्मा बुद्ध के अतिरिक्त जैन तीर्थंकर महावीर स्वामी ने इस प्रदेश के अनेक प्राचीन स्थलों का पर्यटन कर अपने धर्म का उपदेश दिया । उनके पूर्वज तीर्थंकरों में से कई के जन्म, कौशाम्बी, श्रावस्ती आदि नगरों में हुए थे ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ई० पू० छठी शती या इसके कुछ पूर्व मथुरा के वर्तमान कंकाली टीला की भूमि पर प्रसिद्ध 'वोव्द' नामक जैन स्तूप का निर्माण हुआ। इस स्तूप की मरम्मत तथा उसके समीप अन्य इमारतों का निर्माण बाद में शताब्दियों तक जारी रहा। बौद्ध एवं जैन धर्म के द्वारा त्याग, तपस्या और अहिंसा का प्रचार किया गया। इन धर्मों ने चित्त-शुद्धि तथा मानव समानता पर बल दिया और ब्राह्मणों की यज्ञ-प्रणाली की निन्दा की। इससे कर्मकांड की ओर लोगों की प्रवृत्ति घटी तथा नैतिक उत्थान पर जोर दिया जाने लगा।

ईसवी पूर्व पाँचवीं शती के अन्त में मगध में एक नये राजवंश का उदय हुआ, जो नन्द वंश कहलाया। इसके प्रतापी राजा महापद्म नन्द ने आर्यावर्त्त के अनेक छोटे राज्यों का अन्त करके एक बड़ा साम्राज्य स्थापित कर लिया। वर्तमान बिहार तथा उत्तरप्रदेश के कितने ही राज्य मगध साम्राज्य में विलीन हो गये। पाटलिपुत्र (पटना) नगर को इस विशाल साम्राज्य की राजधानी होने का गौरव प्राप्त हुआ। ई० पूर्व ३२५ के लगभग नन्दों का नाश करके मौर्यवंशी चन्द्रगुप्त ने मगध पर अपना अधिकार जमा लिया। कुछ समय बाद ही उसने एक ऐसे बड़े साम्राज्य का निर्माण किया जिसमें दक्षिण का कुछ भाग छोड़ प्रायः समस्त देश आ गया। उत्तर-पश्चिम में इस साम्राज्य की सीमा वक्षु (आक्सस) नदी तक जा लगी। चन्द्रगुप्त के समय में महान् राजनीतिज्ञ कौटिल्य ने अर्थशास्त्र की रचना की, जो राजनीति का एक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनुपम ग्रन्थ है। चन्द्रगुप्त का पौत्र अशोक मौर्य शासकों में सबसे अधिक प्रसिद्ध हुआ। अशोक ने भारत के विभिन्न स्थानों पर पहाड़ों की चट्टानों और स्तम्भों पर लेख खुदवाए, जो बड़े महत्त्व के हैं। उत्तर प्रदेश में मेरठ, तोमरा, कालसी, कौशाम्बी, प्रयाग और सारनाथ में अशोक के लेख प्राप्त हुए हैं, जिनसे तत्कालीन धार्मिक और सामाजिक स्थिति पर बड़ा प्रकाश पड़ता है। अशोक ने उन स्थानों पर स्तूपादि का भी निर्माण कराया जहाँ भगवान् बुद्ध ने निवास किया था। बौद्ध धर्म की उन्नति के लिए उसने अन्य अनेक कार्य किये। उसके अभिलेखों से प्रजा की भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए किए गए अनेक कामों का पता चलता है। उसकी धर्म-विजय की नीति भारत में ही नहीं, बाहर भी आदृत हुई।

मौर्यवंश का अंत ई० पूर्व १८५ में हुआ, जब कि इस वंश के अंतिम राजा बृहद्रथ को उसके सेनापति पुष्यमित्र ने मार डाला। पुष्यमित्र से शुंग वंश का आरंभ हुआ। जिसका प्रभुत्व लगभग ई० पूर्व ७५ तक रहा। शुंग लोग ब्राह्मण थे। अयोध्या से मिले एक लेख से पता चलता है कि पुष्यमित्र ने दो अश्वमेध यज्ञ किये थे। पतंजलि ने अपने प्रसिद्ध व्याकरण-ग्रंथ महाभाष्य की रचना इसी समय की। पुष्यमित्र के पुत्र अग्निमित्र की कथा कालिदास के नाटक "मालवकाग्निमित्र" में मिलती है। शुंग-शासनकाल में साँची, भारहुत, बोधगया, मथुरा, सारनाथ, कौशांबी, पभोसा, बेसनगर आदि स्थानों में बौद्ध, जैन और हिन्दू स्थापत्य एवं मूर्ति-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फलक ३

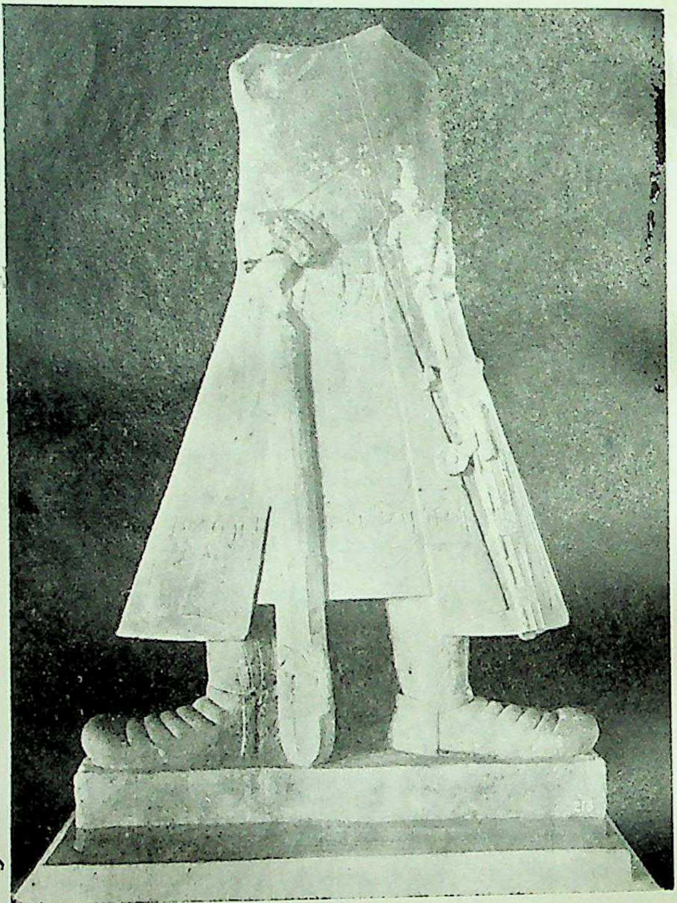

कुषाण-वंश के प्रतापी शासक कनिष्क की मूर्ति
(पुरातत्त्व संग्रहालय, मथुरा)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कला की बहुसंख्यक कृतियों का निर्माण हुआ।

शुंग शासन-काल—में उत्तर-प्रदेश में अहिच्छत्रा, मथुरा, कौशांबी, अयोध्या आदि स्थानों में अनेक राजवंश थे। इनके सिक्के प्राप्त हुए हैं। शुंगों के बाद भी अनेक वंश कायम रहे। उत्तर-पश्चिम की ओर ई० पूर्व १०० के लगभग मध्य एशिया की शक जाति ने अपना अधिकार जमा लिया था। शकों की शक्ति बढ़ती गई और कुछ समय के बाद तक्षशिला, मथुरा और उज्जयिनी—ये उनके तीन प्रधान केन्द्र बन गए। मथुरा के शक राजाओं की उपाधियाँ 'क्षत्रप' और 'महाक्षत्रप' थीं। ई० पूर्व ५७ में उज्जयिनी के शकों की पराजय से उनकी शक्ति को भारी धक्का पहुँचा। परंतु कुछ समय बाद वे पुनः प्रबल हो गये। ईसवी सन् के प्रारंभ में शकों की 'कुषाण' नामक शाखा ने अपनी शक्ति बहुत बढ़ाली। मथुरा को कुषाणों ने अपना प्रधान केन्द्र बनाया। ७८ ई० में कनिष्क इस वंश का शासक हुआ। इस वर्ष से उसने अपना एक संवत् चलाया, जो 'शक' सम्वत् नाम से प्रसिद्ध है। कुषाणों के लगभग दो शताब्दियों के शासन-काल में बौद्ध धर्म की विशेष उन्नति हुई और तक्षशिला, मथुरा, सारनाथ, कौशाम्बी आदि कला के प्रमुख केन्द्र बन गये। इसका कारण इन शासकों की कला-प्रियता थी। उन्होंने विदेशों के साथ भारत के सम्बन्ध बढ़ाए, जिससे इस देश के वाणिज्य-व्यवसाय की वृद्धि हुई।

ई० दूसरी शती के अंत में उत्तर प्रदेश के दक्षिणी तथा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पश्चिमी भागों में नाग लोगों की शक्ति प्रबल हुई। अब कुषाणों को उत्तर-पश्चिम की ओर खदेड़ दिया गया। उत्तर प्रदेश में नागों का प्रधान केन्द्र मथुरा था। वर्तमान मध्य-भारत में पद्मावती (पवाया) तथा विदिशा (भेलसा) भी नागों के केन्द्र थे। नाग राजा शिव के उपासक थे। उनके प्रधान राजवंश का नाम 'भारशिव' प्रसिद्ध हुआ, जिसके द्वारा इस अश्वमेध यज्ञ करने के उल्लेख प्राचीन अभिलेखों में मिलते हैं।

तीसरी शताब्दी के अंत में प्रयाग तथा उसके आस-पास एक नई शक्ति का उदय हुआ, जो गुप्त वंश के नाम से प्रसिद्ध है। इस वंश के राजा चंद्रगुप्त प्रथम ने वैशाली के लिच्छवि वंश की कन्या कुमारदेवी से विवाह कर अपनी शक्ति बढ़ाली। पाटलिपुत्र को जीतकर उसने महाराजाधिराज की उपाधि ग्रहण की। गुप्त वंश में समुद्रगुप्त (३३५-३७५ ई०), चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य (३७५-४१३ ई०) तथा स्कंदगुप्त (४५५-४६७ ई०) बड़े प्रतापी शासक हुए। समुद्रगुप्त ने उत्तर तथा दक्षिण भारत के अनेक राज्यों को जीतकर अपनी विजय-पताका फहराई। इस दिग्विजय का विवरण उसके उस शिलालेख में है जो इस समय इलाहाबाद के किले में है इस लेख के अनुसार उत्तर प्रदेश के अनेक राज्य गुप्त-साम्राज्य में मिला लिये गये। समुद्रगुप्त के पुत्र चंद्रगुप्त द्वितीय ने शकों की शक्ति का मूलोच्छेद कर दिया। उसने अयोध्या तथा उज्जैन को भी अपने केन्द्र बनाया। पाँचवीं शती के मध्य हूण लोगों ने गुप्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुष्पित अशोक वृक्ष के नीचे खिलौना लिये हुए माता तथा शिशु
(समय ई० दूसरी शती)

(पुरातत्त्व संग्रहालय, मथुरा)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

साम्राज्य पर आक्रमण किया । यद्यपि स्कंदगुप्त ने उनका कड़ा मुकाबला किया, पर हूणों के भीषण हमले के फलस्वरूप गुप्त-साम्राज्य की जड़ें हिल गईं ।

गुप्त शासन-काल भारतीय इतिहास में स्वर्ण-युग के नाम से प्रसिद्ध है । इस युग में सामाजिक, आर्थिक, कलात्मक एवं साहित्यिक क्षेत्रों में बड़ी उन्नति हुई । अधिकांश गुप्त-शासक यद्यपि वैष्णव थे, परन्तु उनके समय में धार्मिक सहिष्णुता थी । हिन्दू, बौद्ध तथा जैन धर्म साथ-साथ बढ़ रहे थे । संस्कृत इस समय की प्रचलित भाषा थी, यद्यपि कम पढ़े-लिखे लोग प्राकृत का प्रयोग करते थे । महाकवि कालिदास, प्रसिद्ध ज्योतिषी आर्यभट, नाटककार विशाखदत्त तथा दार्शनिक आसंग, वसुबंधु आदि इसी समय हुए । कई प्राचीन पुराणों को वर्तमान रूप गुप्त-युग में ही मिला । उत्तर प्रदेश में मथुरा, कौशाम्बी, प्रयाग, देवगढ़, अयोध्या, काशी आदि नगर इस काल में व्यवसाय, शिक्षा और कला के बड़े-बड़े केन्द्रों के रूप में विकसित हुए । सारनाथ, मथुरा और देवगढ़ में तो कला की कुछ अप्रतिम कृतियों का निर्माण हुआ । फाह्यान नामक एक चीनी यात्री चंद्रगुप्त द्वितीय के शासन-काल में भारत आया । उसके वर्णन से देश की तत्कालीन समृद्धि का पता चलता है । वह उत्तर प्रदेश के भी कई नगरों में घूमा ।

बौद्ध साहित्य में अनेक प्रकार के वस्त्रों का उल्लेख मिलता है । महात्मा बुद्ध के समय से सूती और रेशमी वस्त्र-निर्माण के लिए बनारस बहुत प्रसिद्ध हो गया । मौर्य और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शुंग-युग में लोग अधिक सुरुचि के साथ वस्त्रों को धारण करने लगे। अनेक प्रकार के रंगीन कपड़े समाज में प्रचलित थे। महिलाओं की धोतियाँ विभिन्न प्रकार की होती थीं। उस समय के साहित्यिक वर्णनों से पता चलता है कि धोतियाँ पहिनने के अनेक ढंग थे——जैसे हाथी या मछली की पूँछ-जैसी धोती, चौकोर अथवा पंखे के आकार की धोती। कटि के ऊपर कमरबन्द या कटिबंध धारण करने का चलन था। इस काल में जूते पहिनने का भी आम रिवाज हो गया था। इनके ढंग विभिन्न प्रकार के थे। ये जूते जंगली तथा पालतू पशुओं के चमड़े से बनते थे। ताड़पत्र, बाँस और लकड़ी की बनी हुई खड़ाऊँ भी पहनी जाती थीं।

कुषाण-सातवाहन काल में भारत का संबंध मध्य एशिया, यूनान तथा दक्षिण-पूर्वी देशों के साथ बहुत बढ़ा। उत्तर-पश्चिमी भारत में ईरानियों तथा शकों के पहनावे का प्रचार हुआ और कुछ लोग लम्बा कोट, सलवार के ढंग का पायजामा, ऊँची नोकदार टोपियाँ तथा लम्बे जूते पहनने लगे। स्त्रियाँ सूती और रेशमी कपड़ों की साड़ी, ओढ़नी तथा कंचुकी धारण करती थीं। साधारण पुरुषों का पहनावा अब भी धोती, चादर और पगड़ी थी। चीन का रेशम भारत में बहुत पसंद किया जाता था। गुप्त-काल में कलात्मक वेश-भूषा की ओर लोगों का ध्यान विशेष रूप से गया। अब सिले हुए वस्त्रों का प्रयोग अधिक मात्रा में होने लगा। तत्कालीन मुद्राओं पर शासकों की मूर्तियाँ कोट और पायजामा पहिने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभयमुद्रा में, गज-लक्ष्मी की मिट्टी की मूर्ति कौशाम्बी से प्राप्त, समय प्रारम्भिक गुप्त-काल, कौशाम्बी-कक्ष, प्रयाग विश्वविद्यालय ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हुये मिलती हैं। सिपाही लोग सिली हुई वर्दियाँ पहनते थे। इस काल में छपे हुए और कसीदे के कपड़ों का व्यवहार बड़ी मात्रा में होने लगा। चीन का बारीक रेशम लोगों की प्रिय वस्तु थी। मथुरा का डोरिया, काशी तथा मालव प्रदेश के दशपुर (मन्दसौर) में बने हुए रंग-बिरंगे रेशमी कपड़े भी बहुत प्रसिद्ध थे। मन्दसौर से प्राप्त एक शिलालेख में लिखा है कि वहाँ के रेशम के कारीगर बहुत बारीक कपड़ा तैयार करते थे। इस लेख के एक श्लोक में मन्दसौर के वस्त्रों का मनोरंजक विज्ञापन है--

"तारुण्यकान्त्युपचितोऽपि सुवर्णहार--
ताम्बूल पुष्पविधिना समलंकृतोऽपि।
नारीजनः प्रियमुपैति न तावदश्र्यां,
यावन्न पट्टमयवस्त्रयुगानि धत्ते॥

अर्थात्, रूप और यौवन से संपन्न महिलाएँ सोने के हार तथा पान-फूल आदि से अलंकृत होने पर भी, अपने शृंगार को अपूर्ण मानती हैं और तब तक अपने प्रिय के पास जाने में संकोच करती हैं जब तक उनके पास दशपुर का बना हुआ रंगीन रेशमी जोड़ा (साड़ी तथा उत्तरीय) न हो।

गुप्तकाल में साधारण जन धोती-दुपट्टा पहनते थे। स्त्रियाँ साड़ी, चादर और अनेक रंगों की चोलियाँ पहनती थीं। साड़ियों पर फूलों, लताओं, पशु-पक्षिओं आदि की कढ़ावट रहती थी। नर्तकियाँ लम्बे कुर्ते तथा कभी-कभी सँकरे पायजामे (सुत्थन) पहनती थीं, जैसे कि देवगढ़ तथा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सारनाथ की कुछ कलाकृतियों पर मिलते हैं। ऋतुओं के अनुकूल विभिन्न भाँति के वस्त्र पहने जाते थे। गुप्तकालीन जन पगड़ी के बड़े शौकीन थे, जो प्रायः मलमल की पट्टियों की बनी होती थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धर्मचक्र-प्रवर्तन मुद्रा में भगवान् बुद्ध की सर्वाङ्गसुन्दर मूर्ति
(गुप्त-काल)

(सारनाथ संग्रहालय)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय ६

पूर्व मध्यकाल ६०० ई० से १२०० ई० तक

गुप्तवंश की प्रधान शाखा का अन्त होते-होते उत्तर भारत में अनेक राज्य स्थापित हो गये और शासन की संगठित राजनैतिक शक्ति विशृंखलित होने लगी। परन्तु सौभाग्य से सातवीं शती के आरम्भ में उत्तर भारत के शासन की बागडोर थानेश्वर के पुष्यभूति या वर्धन-वंशी राजा हर्षवर्धन के हाथों में गई। हर्ष प्रतापी शासक था। उसने एक विस्तृत साम्राज्य का निर्माण किया। उत्तरापथ के प्रायः सभी शासकों ने उसकी अधीनता स्वीकार करली। हर्ष ने अपनी बहिन राज्यश्री का विवाह कन्नौज के मौखरी राजा गृहवर्मा के साथ किया था। कुछ दिन बाद गृहवर्मा गौड़ के राजा द्वारा मारा गया। अब कन्नौज का राज्य-भार भी हर्ष के सिर पर आ पड़ा। उसने सुविधा के लिए कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया। कन्नौज को पूर्व-मध्यकाल में वही स्थान प्राप्त हुआ जो अब तक पाटलिपुत्र को प्रप्त था। अब से लेकर बारहवीं शती के अन्त तक कन्नौज उत्तर भारत का प्रधान राजनैतिक केन्द्र रहा।

हर्ष के समय में प्रसिद्ध चीनी पर्यटक हुएनसांग भारत आया। उसने उत्तर भारत का बड़ा भ्रमण किया। उत्तर प्रदेश के हरिद्वार, मथुरा, मनिपुर, संकाश्य, कन्नौज, अहिच्छत्रा,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्रावस्ती, अयोध्या, प्रयाग, कौशाम्बी, कुशीनगर, बनारस आदि नगरों में वह गया और वहाँ रहा। इन स्थानों का उसने जो विवरण लिखा है उससे तत्कालीन धार्मिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति पर प्रकाश पड़ता है। उक्त स्थानों में चीनी यात्री ने अनेक बौद्ध स्तूपों, विहारों, मन्दिरों आदि का उल्लेख किया है, जिनमें से अब बहुत कम शेष रह गये हैं। हर्ष के समय में प्रख्यात लेखक बाणभट्ट हुए, जिनके दो ग्रंथ 'हर्षचरित' तथा 'कादंबरी' प्रसिद्ध हैं। हर्ष ने स्वयं कई संस्कृत-नाटकों की रचना की।

हर्ष की मृत्यु के बाद उत्तर भारत की राजनैतिक स्थिति में विकेन्द्रीकरण प्रारंभ हुआ। अनेक शक्तियों ने अपने-अपने राज्य स्थापित कर लिये। उत्तर प्रदेश में हर्ष के बाद कुछ समय तक आयुध वंश ने राज्य किया और उसके बाद गुर्जर-प्रतीहारों ने। प्रतीहारों के शासन-काल में कन्नौज की बड़ी उन्नति हुई। इस वंश में मिहिरभोज, महेन्द्रपाल, महीपाल आदि अनेक प्रतापी शासक हुए; जिनके समय में न केवल राजनैतिक एवं आर्थिक उन्नति हुई, अपितु विद्या और कला का भी विकास हुआ। राजशेखर जैसे विद्वान् लेखक प्रतीहारों के ही शासन-काल में हुए। स्थापत्य और मूर्त्ति-कला की जो उन्नति इस काल में हुई उसका आभास उन बहुसंख्यक अवशेषों से मिल सकता है जो कन्नौज और उसके आस-पास से मिले हैं।

ग्यारहवीं शती के मध्य में कन्नौज के सिंहासन पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गाहडवाल वंश का आधिपत्य हुआ, जो बारहवीं शती के अन्त तक कायम रहा। इनके समय में बुन्देलखण्ड को छोड़ कर प्रायः समस्त उत्तर प्रदेश इन्हीं के अधिकार में रहा। गाहडवालों में गोविन्दचन्द्र तथा जयचन्द्र प्रसिद्ध शासक हुए। इस वंश के शासन-काल में कन्नौज, मथुरा और काशी में कई विशाल हिन्दू मन्दिरों का निर्माण हुआ। काशी के समीप सारनाथ में बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा का उदय हुआ। मथुरा में अनेक जैन मन्दिर भी इसी काल में बने, जिनकी अभिलिखित मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। गाहडवालों के शासन-काल में श्रीहर्ष नामक संस्कृत के उद्भट पंडित हुए, जिन्होंने नैषध काव्य की रचना की। बुन्देलखण्ड में इस काल में चन्देल वंश का शासन रहा। चन्देल लोग स्थापत्य और मूर्ति-कला के बड़े प्रेमी थे। इनके समय में खजुराहो, कालिंजर, बरवा सागर, महोबा, कालपी आदि स्थानों में मन्दिरों और मूर्तियों का बड़ी संख्या में निर्माण हुआ। परन्तु पूर्व मध्यकाल की मूर्ति-कला में वह मौलिकता और ओजस्विता नहीं मिलती, जो उसके पूर्ववर्ती युगों में सुलभ थी। अब अलंकरण और रूढ़ि-पालन की ओर अधिक प्रवृत्ति हो गई। कालिंजर, मरफा, कालपी आदि के प्रसिद्ध किले भी चन्देलों के शासन-काल में ही बनवाये गये।

बारहवीं शती का अन्त होते-होते उत्तर भारत में मुसलमानों का आधिपत्य स्थापित हो गया। अजमेर और दिल्ली को जीतने के बाद मुहम्मद गोरी ने जयचन्द को परास्त कर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कन्नौज राज्य पर भी अधिकार कर लिया। धीरे-धीरे बनारस तक का प्रदेश तथा दक्षिण में बुन्देलखण्ड मुसलमानों के अधीन हो गया।

ई० सातवीं से लेकर बारहवीं शती तक उत्तर प्रदेश की वेशभूषा प्रायः गुप्त-काल जैसी ही रही। परन्तु अब गाने-बजाने वालों, शिकारियों, द्वारपालों तथा राज्यकर्मचारियों द्वारा सिले हुए कपड़ों का व्यवहार अधिक मात्रा में होने लगा। ये लोग प्रायः पूरी बाँहों वाले कुर्ते, जाँघिए या पायजामे पहनते थे। वे अनेक प्रकार की टोपियाँ और धारीदार धोतियाँ भी पहनते थे। छोटे बच्चे धोती, जाँघिया, पटका, कंचुक (झँगुला) और टोपी पहने हुए मिले हैं। इस काल में दास-दासियों द्वारा अनेक प्रकार के सिले, रंगीन कपड़े पहने जाते थे। विदेशी दासियाँ, जो भारतीय महलों में काम करती थीं, झालरदार लहँगे, कढ़ी हुई चोली और टोपियाँ धारण करती थीं। कुछ अंगरक्षिका स्त्रियाँ जाँघिया भी पहनती थीं। चूड़ीदार पाजामे (सुत्थन) पहनने का भी रिवाज था, विशेष कर नर्तकी स्त्रियाँ इन्हें पहनती थीं जैसा कि देवगढ़ की कला में देखने को मिलता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय ७

तुर्क-अफ़गानों का आधिपत्य

उत्तर प्रदेश में मुसलमानों का शासन-काल तेरहवीं शती से प्रारम्भ हुआ। उस समय से लेकर १५२६ ई० तक तुर्कों तथा अफगानों का आधिपत्य इस प्रदेश पर रहा। ई० १२०० से १५२६ तक जिन विभिन्न राजवंशों का प्रभुत्व दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश पर रहा है वे ये हैं—गुलाम-वंश (१२०६–१२९० ई०), खिलजी-वंश (१२९०–१३२० ई०), तुगलक-वंश (१३२०–१४१३ ई०), सैयद-वंश (१४१४–१४५१ ई०) तथा लोदी वंश (१४५१–१५२६ ई०)। इस लम्बे समय में समाज, धर्म और कला के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन हुए। मुसलमानों के पूर्व जितने विदेशी भारत में आये थे, प्रायः वे सभी भारतीयता के अंग हो गए थे, परन्तु अनेक कारणों से मुसलमानों के सम्बन्ध में यह बात न हो सकी।

मुस्लिम शासन-काल में अनेक शासकों द्वारा धार्मिक मामलों में भेद की नीति अपनाई गई। इस्लाम धर्म न मानने वालों के प्रति दंड-विधान कठोर था। इसके कारण असंतोष का होना स्वाभाविक था। कुछ शासकों द्वारा हिन्दुओं, बौद्धों तथा जैनों के प्राचीन मन्दिर, स्तूप, बिहार आदि भी नष्ट किये गये। राजनैतिक अस्थिरता के साथ इस काल में धार्मिक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्षेत्र में भी अशांति बढ़ी। इससे हिन्दू-धर्म में भक्ति की एक प्रबल लहर उठी। रामानंद, कबीर, वल्लभाचार्य, चैतन्य, रामानुज, नानक, दादू आदि अनेक संत-महात्माओं ने भक्ति का जन-भाषा में प्रचार कर निराश हिन्दू जनता को आत्मिक बल प्रदान किया। इनमें से अनेक संतों ने हिन्दू-मुसलमानों को अपने ऊपरी भेद-भाव भुलाकर नैतिक उन्नति का संदेश दिया। मुसलमान सूफी संतों का भी इसमें भाग रहा। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, निजामुद्दीन औलिया, शेख सलीम चिश्ती, मलिक मोहम्मद जायसी, कुतुबन आदि सूफी संतों को हिन्दू और मुसलमान दोनों ही श्रद्धा के साथ देखते थे। उनके उपदेशों से धार्मिक असमानताओं पर विजय मिली और लोग ऊपरी भेद-भावों की अपेक्षा सर्वशक्तिमान ईश्वर के सच्चे मार्ग को महत्व देने लगे। मुगल-शासन के पहले उत्तर प्रदेश में हिन्दू संतों तथा मुसलमान सूफियों द्वारा धार्मिक सहिष्णुता तथा समन्वयात्मक दृष्किोण के प्रसार में उल्लेखनीय योग प्रदान किया गया। अनेक सूफी लेखकों ने अवधी में कथा-काव्यों की रचना की। तुर्क-अफगान शासन-काल में ललित कलाओं का ह्रास हुआ। मथुरा, बनारस, अयोध्या आदि स्थानों के कितने ही प्राचीन स्मारक नष्ट कर दिए गए। इस धर्मान्धता के कारण कितनी ही कलाकृतियों का नाश हुआ। शर्की वंश के शासन-काल में जौनपुर में कई विशाल इमारतों का निर्माण हुआ। इब्राहीम शर्की ने अटाला मस्जिद का निर्माण कराया जो एक विशाल इमारत है। लाल दरवाजा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मस्जिद, जहाँगीरी मस्जिद आदि अन्य अनेक इमारतें भी यहाँ बनवाई गईं। शर्की शासकों में फिरोजशाह तुगलक ने चित्रकला की ओर ध्यान दिया। जौनपुर तथा फिरोजाबाद नगर बसाया। वह मेरठ जिले से अशोक के विशाल स्तम्भ को दिल्ली उठवा लाया। दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश के कई स्थानों पर इस काल में जिन अनेक मस्जिदों, मकबरों, दुर्गों, मदरसों आदि का निर्माण हुआ उसमें इस्लामी विशेषताओं के साथ प्राय: भारतीय कला के उपकरणों का प्रयोग मिलता है।

इस काल में भारतीय समाज में जात-पाँत की जटिलता प्रारम्भ हुई, जो आगे कठोर होती गई। इसका एक मुख्य कारण तत्कालीन राजनैतिक स्थिति कही जा सकती है। अब मौलिक चिन्तन और विशाल दृष्टिकोण की जगह अन्धविश्वास, रूढ़िवाद, और संकीर्ण विचार आ गये और धीरे-धीरे जनता का एक बड़ा भाग इनमें ग्रस्त हो गया। समाज में ऊँच-नीच तथा छुआछूत की भावना घर करने लगी जिसके फलस्वरूप समाज का ढाँचा कमजोर पड़ गया।

जौनपुर के शर्की शासकों ने स्थापत्य के अतिरिक्त संगीत-कला की ओर भी ध्यान दिया। १४२८ ई० में विभिन्न स्थानों के प्रमुख संगीतज्ञों को बुलाकर तथा अनेक ग्रंथों को इकट्ठा कर 'संगीत-शिरोमणि' नामक एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ तैयार कराया गया। इब्राहीमशाह और हुसैनशाह के दरबारों में भारतीय संगीत की लहरी गूंजा करती थी। जौनपुर में ख्याल-गायकी की एक नई परिपाटी चली और कई नए राग

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बनाए गए। संगीत-प्रचार का दूसरा प्रमुख केन्द्र व्रज हुआ। मथुरा, वृन्दावन, और गोवर्धन में दूर-दूर के संत-महात्मा आने लगे। इनमें से अनेक संगीत के मर्मज्ञ होते थे। वृन्दावन के स्वामी हरिदास जी और उनके शिष्य-प्रशिष्यों ने कालान्तर में संगीत को बहुत उन्नत किया। मथुरा के निकट हाथरस में भी संगीत का एक केन्द्र स्थापित हुआ, जहाँ अब भी गायकों के कई अखाड़े हैं।

विवेच्य काल तथा मुगल युग में शासकों, राजकर्मचारियों तथा संभ्रांत कुल के लोगों की वेशभूषा पर ईरानी प्रभाव विशेष रूप से दिखाई पड़ता है, परन्तु भारतीय पगड़ी अब भी जारी रही। स्त्रियों के पहनावे में लहँगा, चोली और चुनरी या ओढ़नी की प्रमुखता थी। अब परदे का प्रचलन भी बहुत हो गया था, जो पहले नहीं था। जनसाधारण मुसलमानी शासक-काल में भी अपना भारतीय पहनावा ही धारण करते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय ८

मुगल-काल

१५२६ ई० में बाबर ने दिल्ली को जीतकर भारत में मुगल-साम्राज्य की नींव डाली। इसके लगभग तीस वर्ष बाद ही मुगल-शासन की पताका प्रायः सारे भारत पर फहराने लगी। लगभग दो शताब्दियों तक भारत में मुगलों का आधिपत्य रहा। इस काल में राजनैतिक क्षेत्र में उतनी उथल-पुथल और अशांति न रही, जितनी कि इसके पहले के काल में थी। मुगल-सम्राटों में अकबर (१५५६–१६०५ ई०) सबसे प्रसिद्ध हुआ। उसने हिन्दुओं के प्रति सहानुभूतिपूर्ण नीति अपनाकर साम्राज्य को शक्तिशाली बनाया। उसके समय में तथा उसके बाद जहाँगीर और शाहजहाँ के समय में साहित्य और अन्य ललित कलाओं की बड़ी उन्नति हुई। शाहजहाँ के बाद औरङ्गजेब ने अपने पूर्वजों की नीति उलटकर धार्मिक कट्टरता का अवलम्बन किया। उसकी इस अदूरदर्शी नीति के कारण मुगल साम्राज्य को गहरा धक्का पहुँचा और थोड़े समय बाद ही वह छिन्न-भिन्न हो गया।

मुगल-काल में उत्तर प्रदेश में विभिन्न उद्योग-धन्धों की उन्नति हुई। अकबर के समय में अबुलफजल ने आईन-ए-अकबरी' तथा 'अकबरनामा' नामक महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे। इन ग्रंथों तथा विदेशी यात्रियों के वर्णनों से पता चला है कि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुगल-काल में आगरा, बनारस, खैराबाद आदि नगरों में वस्त्रों के बड़े कारखाने थे। आगरे में सफेद सूती और रेशमी कपड़े, फीते, सोने-चाँदी का जरी का काम तथा सादे और रंगीन शीशे का काम होता था। बनारस में तनजेब, अनेक तरह के कीमती रेशमी वस्त्र, जरी का काम, कमरबन्द तथा पगड़ियाँ तैयार होती थीं। रामपुर मीने के काम के लिए प्रसिद्ध था। उत्तर प्रदेश के कई शहरों में मुगलों ने टकसाल-घर स्थापित किए।

इस काल में अच्छी सड़कों के निर्माण से व्यापार और यातायात में बड़ी सुविधा हुई। अकबर के पहले शेरशाह सूरी ने अपने शासन-काल में अनेक बड़ी सड़कों का निर्माण कराया। सबसे बड़ी सड़क का नाम 'सड़के आजम' था, जो पटना से लेकर अटक तक जाती थी। दूसरी सड़क आगरा से बुरहान-पुर तक और तीसरी आगरा से जोधपुर होती हुई चित्तौड़ को जाती थी। इनके अलावा अन्य कई बड़ी सड़कें थीं। अधि-कांश सड़कों के किनारे छायादार पेड़ तथा सरायें थीं।

मुगल-काल में आगरा नगर ने बड़ी उन्नति की। यहाँ देश के प्राय: सभी ओर से आने-जाने वाली सड़कें मिलती थीं। आगरा में प्रसिद्ध लाल किले का निर्माण इसी काल में हुआ। आगरा के समीप फतहपुर-सीकरी में अकबर ने अनेक कलापूर्ण इमारतों का निर्माण कराया, जो स्थापत्य की अमर कृतियाँ हैं। जहाँगीर और शाहजहाँ के समय में भी वास्तुकला की ओर विशेष ध्यान दिया गया। शाहजहाँ का आगरा में

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बनवाया हुआ ताजमहल संसार में प्रसिद्ध है। आगरा की अन्य उल्लेखनीय इमारतें लाल किला, एतमादुद्दौला का मकबरा, चीनी का रोजा, हुमायूँ मस्जिद, सिकन्दरा आदि हैं। अन्य स्थानों में भी मुगल-काल में स्थापत्य की अनेक कृतियों का निर्माण हुआ। इलाहाबाद में खुसरो-बाग के स्मारक, नजीबाबाद में नजीबुद्दौला का मकबरा, मथुरा में केशवदेव का विशाल मन्दिर तथा औरङ्गजेब की लाल मस्जिद उल्लेख-हैं। बनारस में भी औरङ्गजेब ने विश्वनाथ जी का मन्दिर तुड़वाकर वहाँ मस्जिद का निर्माण कराया, वृन्दावन में अकबर-जहाँगीर के शासन-काल में कई बड़े वैष्णव मन्दिर बने। इनमें गोविन्द देव, गोपीनाथ, मदनमोहन, जुगलकिशोर तथा राधावल्लभ के मन्दिर अब भी विद्यमान हैं।

मुगल-शासन में चित्रकला और संगीत की विशेष उन्नति हुई। अकबर के समय में चित्रकला की मुगल शैली का प्रारंभ हुआ। इसमें ईरानी तत्त्वों के साथ भारत की कश्मीरी कलम तथा राजस्थानी कलम का भी सम्मिश्रण है। जहाँगीर और शाहजहाँ के समय में चित्रकला की ओर अधिक ध्यान दिया गया, मुख्यतया स्त्रियों की शबीह पर। मुगल-काल के अन्त में चम्बा, गुलेर, काँगड़ा (पंजाब) तथा गढ़वाल में चित्रकला की बड़ी उन्नति हुई। यह काँगड़ा या पहाड़ी चित्रशैली के नाम से विख्यात है। गढ़वाल के चित्रकारों में मोलाराम का नाम सबसे अधिक प्रसिद्ध है। चित्रकार के साथ यह कवि भी थे। इनके अनेक चित्रों पर इन्हीं के रचित व्रजभाषा के छंद मिलते

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हैं। गढ़वाल की पुरानी राजधानी श्रीनगर में इनका बहुत समय तक निवास रहा। व्रज में भी इस काल में राजस्थानी शैली का केन्द्र स्थापित हुआ।

मुगल-काल में आगरा, मथुरा, वृन्दावन, गोवर्धन, बनारस फैजाबाद, रामपुर, लखनऊ आदि अनेक स्थानों में संगीत की उन्नति हुई। व्रज में स्वामी हरिदास, सूरदास, नंददास, हित-हरिवंश, व्यासजी एवं निम्बार्क तथा गौडीय सम्प्रदाय के अनेकों संत-महात्माओं द्वारा संगीत का प्रचार किया गया। रास-लीला के वर्तमान रूप का प्रारम्भ इसी काल में हुआ। इन महानुभावों ने अपनी रचनायें व्रजभाषा में की। इसी भाषा में मीरा, रसखान, बिहारी, देव आदि ने भी लिखा। इस काल में प्रचलित दूसरी मुख्य भाषा अवधी थी, जिसमें सबसे बड़े कवि गोस्वामी तुलसीदास जी हुए। गोस्वामी जी के अतिरिक्त मलिक मोहम्मद जायसी जैसे सूफी कवियों ने भी अवधी में रचना की। मुगल-काल में बनारस, लखनऊ तथा रामपुर संगीत के केन्द्र बन गये। वहाँ की गायकी के घराने तब से अब तक चले आ रहे हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय ६

ब्रिटिश शासन-काल

मुगलकाल के अंत में अंग्रेजों की ईस्ट इंडिया कम्पनी ने भारत के कई प्रदेशों पर अपना अधिकार कर लिया और धीरे-धीरे उसने अपनी शक्ति बहुत बढ़ा ली। १७५७ ई० में प्लासी की विजय तथा उसके सात वर्ष बाद बक्सर की विजय ने अंग्रेजों के भाग्य का फैसला कर दिया। वे अब भारत की अद्वितीय शक्ति बन गये। १८ वीं शती का अन्त होते-होते उत्तर प्रदेश के भी एक बड़े भाग पर उनका अधिकार हो गया।

मुगलों के समय में अवध का सूबा, जिसकी राजधानी लखनऊ थी, मुगल-साम्राज्य का महत्वपूर्ण प्रान्त माना जाता था। मुगल-शासन के निर्बल पड़ने पर ईरानी सरदार सम्रादतखाँ ने १७२० ई० में अवध में नवाब वंश का प्ररम्भ किया। धीरे-धीरे अवध में रुहेलखंड, गोरखपुर, गाजीपुर, बनारस, इलाहाबाद और कड़ा के इलाके भी शामिल कर लिये गये। अवध के प्ररम्भिक नवाबों ने पहले फैजाबाद को अपनी राजधानी बनाया, पर कुछ दिन बाद लखनऊ ही उनका केन्द्र हुआ। नवाब शुजाउद्दौला के समय से लखनऊ की प्रगति हुई। इन शासकों के समय में स्थापत्य, संगीत, चित्रकला और साहित्य की बहुत उन्नति हुई।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्तिम नवाब वाजिदअली शाह (१८४७-५६ ई०) से अंग्रेजों ने अवध को छीन कर नवाबी का अन्त कर दिया और सारे उत्तर प्रदेश पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया।

१८५७ ई० के स्वतन्त्रता-संग्राम में उत्तर प्रदेश ने प्रमुख भाग लिया। इस संग्राम का श्रीगणेश मेरठ नगर में १० मई, १८५७ ई० को हुआ। शीघ्र ही यह क्रान्ति प्रदेश भर में फैल गई। मेरठ, लखनऊ, कानपुर, बिठूर, कालपी, झाँसी, इलाहाबाद, गाजीपुर और आजमगढ़ इस युद्ध के प्रमुख केन्द्र रहे। यद्यपि अनेक कारणों से भारतीय जनता अन्त में सफल न हो सकी, परन्तु इस प्रथम स्वतन्त्र्य-संग्राम ने भारतीयों में स्वतन्त्रता की जो आग पैदा करदी, वह बुझाई न जा सकी।

ब्रिटिश शासन-काल में इस प्रदेश में बड़े नगरों का निर्माण, उद्योगों और व्यवसायों की वृद्धि तथा वैज्ञानिक साधनों की उन्नति हुई। पाश्चात्य ढंग की शिक्षा के साथ समाज में अनेक संस्थाओं की स्थापना हुई। अँग्रेजी-शिक्षित भारतीयों के परम्परागत आचार-विचार में परिवर्तन होने लगे। नए वैज्ञानिक युग ने हमारे धर्म, दर्शन, साहित्य, कला और लोक-जीवन के अनेक क्षेत्रों को प्रभावित करना शुरू किया, जो स्वाभाविक था। ब्राह्म समाज, थियासोफीकल सोसाइटी, आर्यसमाज आदि अनेक प्रभावशाली संस्थाएँ इस काल में निर्मित हुईं। इन संस्थाओं ने शिक्षित भारतीय समाज को नई दिशाओं की ओर प्रवृत्त किया।

अंग्रेजी शिक्षा-दीक्षा में दीक्षित लोगों का एक समुदाय

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पाश्चात्य सभ्यता का अनुयायी बन गया। पर कुछ शिक्षित भारतीय ऐसे भी हुए, जिन्होंने भारतीय संस्कृति के मुख्य गुणों की पृष्ठ-भूमि में नये विचारों को समाविष्ट किया। इनमें राजा राममोहनराय, स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बाल गंगाधर तिलक, मदनमोहन मालवीय, महात्मा गांधी, अरविन्द तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर के नाम उल्लेखनीय हैं। इन महानुभावों ने पूर्व और पश्चिम की विचार-धाराओं में समन्वय का सुझाव देते हुए भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्वों पर बल दिया। राजनीति, धर्म और समाज के विविध क्षेत्र उनकी विचारधारा से प्रभावित हुए। ब्रिटिश शासन से साथ अनवरत रूप से टक्करें लेने के पश्चात् १९४७ ई० में भारत स्वतन्त्र हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय १०

उत्तर प्रदेश प्रगति के पथ पर

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद भारत के अन्य प्रदेशों की तरह उत्तर प्रदेश में भी लोकप्रिय शासन की स्थापना हुई। पिछले कुछ वर्षों में प्रदेश के बाह्य स्वरूप का पुनर्निर्माण होने के साथ-साथ यहाँ की सांस्कृतिक उन्नति की ओर भी शासन एवं जनता का ध्यान गया है। इस प्रदेश में विविध धर्मों से सम्बन्धित अनेक तीर्थस्थान तथा प्राचीन स्मारक हैं। भारतीय पुरातत्त्व विभाग के द्वारा संरक्षित प्राचीन इमारतों की संख्या भी बहुत बड़ी है। हाल में राज्य शासन के द्वारा उन प्राचीन इमारतों आदि को अपने संरक्षण में ले लिया गया है, जो यद्यपि राष्ट्रीय महत्त्व के नहीं समझे जाते, पर जिनका प्रादेशिक महत्त्व है। इनकी देख-भाल और मरम्मत का कार्य अब प्रदेश-शासन के द्वारा ही किया जा रहा है। कुछ स्थानों में खुदाई का कार्य भी प्रदेशीय सरकार ने कराया है, जैसे—इलाहाबाद जिले में लच्छागिरि, कानपुर जिले में जाजमऊ, बिजनौर जिले में पारसनाथ आदि। प्रदेश की सरकार द्वारा दी गई आर्थिक सहायता से प्रयाग विश्वविद्यालय, कौशाम्बी में खुदाई का काम पिछले कई वर्षों से कर रहा है।

ऐसी इमारतों और स्थानों की ओर भी उत्तर प्रदेश शासन का ध्यान गया है जो प्राचीन महापुरुषों से सम्बन्धित

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हैं। इनमें निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं--सुल्तानपुर जिले के रामनगर नामक स्थान में मलिक मोहम्मद जायसी की समाधि की मरम्मत, मथुरा जिले के परासौली गाँव में महाकवि सूरदास के निधन-स्थान का जीर्णोद्धार, महाकवि तुलसीदास के राजापुर (जि० बाँदा) स्थित जन्म-स्थान पर उपयुक्त स्मारक का निर्माण, कालपी के व्यास-क्षेत्र का संरक्षण तथा व्रजभाषा के प्रसिद्ध कवि देव तथा रसखान के स्मारकों की रक्षा। इन तथा अन्य कतिपय स्थानों में प्रारम्भिक कार्य पूरा किया जा चुका है। पुरातत्त्व और कला की उन्नति के लिए कई सांस्कृतिक संस्थाओं तथा संग्रहालयों को आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है।

हस्तिनापुर, मथुरा, अहिच्छत्रा, कन्नौज और कुशीनगर पर शासन द्वारा सचित्र पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं। अन्य सांस्कृतिक स्थानों पर भी इसी प्रकार के प्रकाशन तैयार किये जा रहे हैं। उत्तर प्रदेश का इतिहास और यहाँ के ऐतिहासिक स्थलों का विस्तृत विवरण 'युग-युगों में उत्तर प्रदेश' नामक सचित्र पुस्तक के रूप प्रकाशित हुआ है। अँग्रेजी तथा हिन्दी में अन्य अनेक सचित्र पुस्तिकाएँ छापी गई हैं। १९५६ ई० में बुद्ध-जयन्ती के अवसर पर प्रदेश में बौद्ध-धर्म सम्बन्धी कई पुस्तकें हिंदी और अँग्रेजी में प्रकाशित हुई हैं।

प्राचीन तीर्थ-स्थानों तथा ऐतिहासिक स्थलों तक यात्रियों के पहुँचने के लिए सुविधाजनक मार्गों की व्यवस्था की गई है। इन स्थानों में बाहर से आने वाले यात्रियों की सुख-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुविधा का प्रबन्ध किया गया है। सारनाथ, संकिसा, श्रावस्ती और कुशीनगर में सुविधाजनक विश्रामस्थल बनाए गए हैं। ऐतिहासिक स्थलों के अतिरिक्त उन स्थानों तक पहुँचने तथा ठहरने की भी समुचित व्यवस्था की गई है जो प्राकृतिक सौन्दर्य अथवा अन्य विशेषताओं के कारण दर्शनीय हैं। इनमें गढ़वाल, टेहरी-गढ़वाल, अलमोड़ा, नैनीताल तथा देहरादून जिलों के प्रमुख मनोरम स्थान उल्लेखनीय हैं।

राज्य में सांस्कृतिक प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन देने के लिए 'सांस्कृतिक कार्य एवं वैज्ञानिक अनुसंधान' नामक एक पृथक् मंत्रालय स्थापित किया गया है। इसके अधीनस्थ विभाग पुरातत्त्व, संग्रहालय, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत, नाट्य आदि विषयों के विकास के लिये आवश्यक कार्य करना है। लखनऊ में 'राजकीय कला विद्यालय' तथा 'भातखंडे संगीत विद्यापीठ' हैं, जिनके द्वारा क्रमशः कला तथा शास्त्रीय संगीत के अध्ययन-अनुसन्धान का महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है।

प्रादेशिक सूचना विभाग के अन्तर्गत लोक-साहित्य समिति का संगठन किया गया है। इस समिति का कार्य लोक-साहित्य, लोक-संगीत तथा लोक-कला के विविध अंगों के संग्रह एवं संरक्षण के साथ-साथ उनको उन्नत करना भी है। समिति के द्वारा प्रदेश के विभिन्न जनपदों में प्रचलित लोक-गीतों, लोक-कहानियों आदि के संग्रह प्रकाशित किये जा रहे हैं। जन-जीवन में जो विविध सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ एक दीर्घकाल से चली आ रही हैं, उनके सम्बन्ध में प्रदेश के विभिन्न भागों,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संस्थाओं तथा व्यक्तियों द्वारा अपेक्षित कार्य किया जा रहा है। शासन भी इस सम्बन्ध में आवश्यक योग प्रदान करता है। प्रदेश में रासलीला, रामलीला, भगत, नौटंकी, रसिया, आल्हा आदि अनेक प्रकार के लोकनाट्यों तथा संगीत के अतिरिक्त विविध लोकनृत्यों का भी प्रचलन है। कथा-वार्ता, यात्रोत्सव, मेले, विविध त्यौहार जन-जीवन के अंग हैं। हमारे समाज का एक बड़ा वर्ग आज भी इनके द्वारा अनुप्राणित है।

उत्तर प्रदेश में समाज-कल्याण की अनेक योजनाएँ क्रियान्वित हो रही हैं, जिनके द्वारा लोगों के जीवन में बदलते हुए युग की भावना के अनुरूप विकास के नये चिह्न दिखाई पड़ने लगे हैं। जहाँ एक ओर सड़कों, पुलों, बाँधों, नहरों अदि के निर्माण से प्रदेश का भौतिक रूप उन्नत हुआ है, वहाँ संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में रचनात्मक कार्यों द्वारा समाज की आत्मा का भी विकास हुआ है और हो रहा है। जीवन के अनेक पुराने मूल्य आज बदल रहे हैं। धर्म, दर्शन के क्षेत्र में नवीन विचारधाराएँ काम कर रही हैं। समाज की कई पुरानी रूढ़ियाँ जीर्ण और अनुपयोगी होने के कारण त्यागी जा रही हैं और उनके स्थान पर नए तत्त्व आ रहे हैं। ये विकासोन्मुख जीवन के शुभ लक्षण हैं। साथ ही हमारी संस्कृति में मान्य अनेक शाश्वत सिद्धान्त और नैतिक परम्पराएँ अब भी कायम हैं और बहुत दिनों तक कायम रहेंगी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय ११

उत्तर प्रदेश के मुख्य सांस्कृतिक और ऐतिहासिक केंद्र

बैजनाथ

यह स्थान अलमोड़ा जिले में अलमोड़ा नगर से ४१ मील उत्तर की ओर स्थित है। यहाँ के निकट गरुड़ नगर तक मोटर जाती है। यहाँ से बैजनाथ के प्राचीन कलावशेष थोड़ी ही दूर रह जाते है। मंदिरों का एक समूह बैजनाथ सरोवर के तट पर है, जहाँ इन मंदिरों की शोभा बड़ी मनोहर लगती है। ये मंदिर शिखर-शैली के हैं। उत्तराखण्ड में प्रायः यही शैली मिलती है। बैजनाथ के मुख्य मंदिर के अन्दर पार्वती की अत्यन्त सुन्दर प्रतिमा है। पार्वती की मूर्ति के अलग-बगल शिव-पार्वती, लक्ष्मी-नारायण, गणेश, सूर्य आदि की लघु प्रतिमाएँ रखी हैं।

कटारमल

यह स्थान अलमोड़ा से लगभग ९ मील पश्चिम है। अलमोड़ा से ७ मील कोसी तक मोटर द्वारा जा सकते हैं; यहाँ से पहाड़ के ऊपर चढ़कर कटारमल पहुँचते हैं। उत्तराखण्ड का महत्त्वपूर्ण सूर्य-मंदिर इसी स्थान पर है। प्रधान मंदिर का ऊपरी अंश टूट गया है। उसके मंदिर की बड़ी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

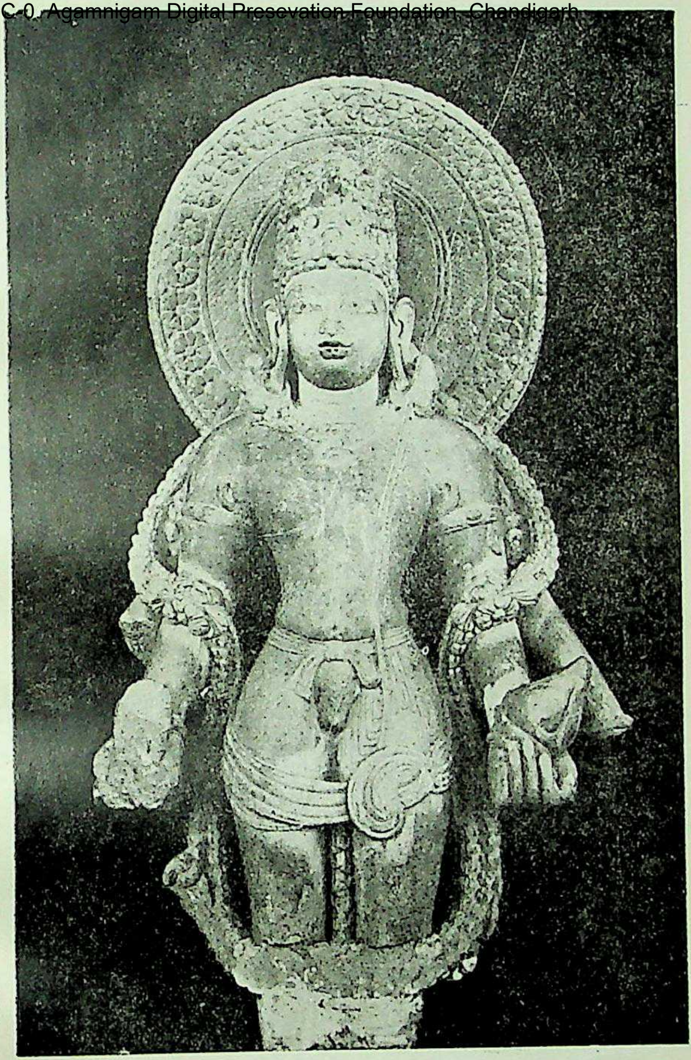

किरीट मुकुट तथा वनमाला-धारी विष्णु की चतुर्भुजी मूर्ति,
सिर के पीछे अलंकृत प्रभामंडल है। मथुरा से प्राप्त; गुप्त-काल।
(राजकीय संग्रहालय, लखनऊ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय ११

उत्तर प्रदेश के मुख्य सांस्कृतिक और ऐतिहासिक केंद्र

बैजनाथ

यह स्थान अलमोड़ा जिले में अलमोड़ा नगर से ४१ मील उत्तर की ओर स्थित है। यहाँ के निकट गरुड़ नगर तक मोटर जाती है। यहाँ से बैजनाथ के प्राचीन कलावशेष थोड़ी ही दूर रह जाते है। मंदिरों का एक समूह बैजनाथ सरोवर के तट पर है, जहाँ इन मंदिरों की शोभा बड़ी मनोहर लगती है। ये मंदिर शिखर-शैली के हैं। उत्तराखण्ड में प्राय: यही शैली मिलती है। बैजनाथ के मुख्य मंदिर के अन्दर पार्वती की अत्यन्त सुन्दर प्रतिमा है। पार्वती की मूर्ति के अलग-बगल शिव-पार्वती, लक्ष्मी-नारायण, गणेश, सूर्य आदि की लघु प्रतिमाएँ रखी हैं।

कटारमल

यह स्थान अलमोड़ा से लगभग ९ मील पश्चिम है। अलमोड़ा से ७ मील कोसी तक मोटर द्वारा जा सकते हैं; यहाँ से पहाड़ के ऊपर चढ़कर कटारमल पहुँचते हैं। उत्तराखण्ड का महत्त्वपूर्ण सूर्य-मंदिर इसी स्थान पर है। प्रधान मंदिर का ऊपरी अंश टूट गया है। उसके मंदिर की बड़ी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

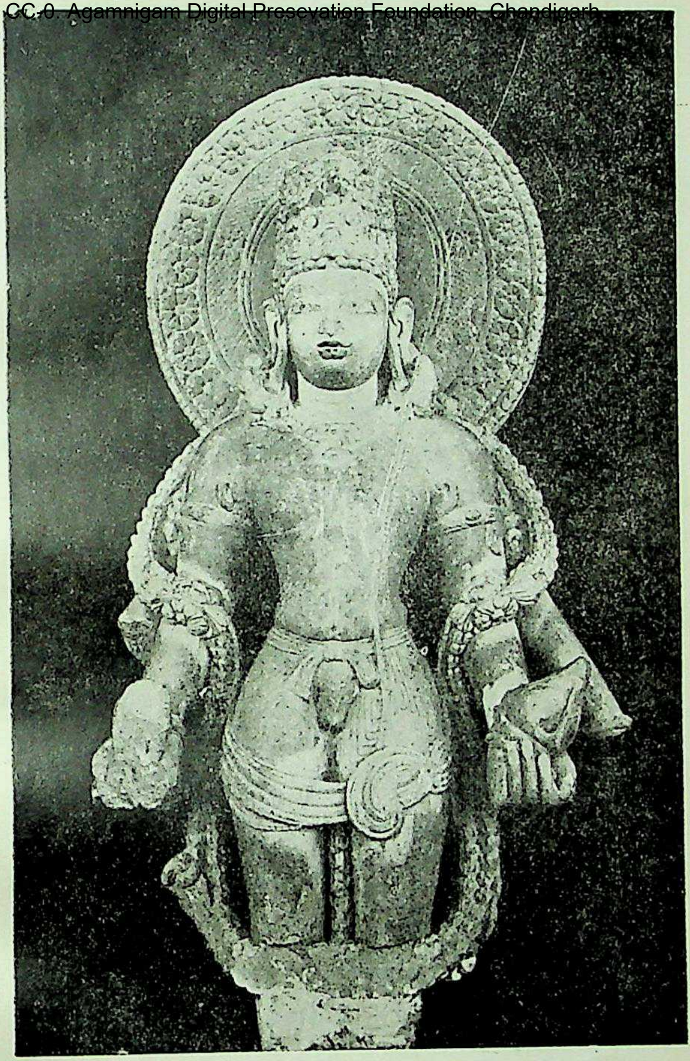

किरीट मुकुट तथा वनमाला-धारी विष्णु की चतुर्भुजी मूर्ति,
सिर के पीछे अलंकृत प्रभामंडल है । मथुरा से प्राप्त; गुप्त-काल ।
(राजकीय संग्रहालय, लखनऊ)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मूर्ति सूर्य की है, जो उँचाई में ३ फुट ८ इंच तथा चौड़ाई में २ फुट है। सूर्य भगवान कमल के आसन पर बैठे हैं। उनके सिर पर अलंकृत मुकुट तथा पीछे प्रभामंडल है। मूर्ति की चौकी पर सारथी अरुण तथा सूर्य के सात घोड़े अंकित हैं। यह मूर्ति भूरे रंग के पत्थर की है और ई० बारहवीं शती की कृति है।

इस मंदिर का मंडप काफी बड़ा है। इसमें शिव-पार्वती, लक्ष्मीनारायण, नृसिंह आदि की मूर्तियाँ हैं। मंदिर के दरवाजे लकड़ी के हैं। इनकी ऊँचाई ८ फुट तथा चौड़ाई ३ फुट है। इन दरवाजों पर देवी-देवताओं, पशु-पक्षियों तथा कमलादि के अलंकरण अत्यन्त सुन्दरता के साथ उकेरे गए हैं।

द्वाराहाट

यह स्थान रानीखेत से १२ मील उत्तर है। यहाँ भी मंदिरों की संख्या बहुत बड़ी है। मंदिरों के तीन समूह 'कचेहरी', 'मनिया' और 'रतनदेव' के नाम से प्रसिद्ध हैं। ये सभी मंदिर शिखर-शैली के हैं, जिनके ऊपर आमलक मिलता है। इनमें से कुछ ही मंदिरों में प्रतिमाएँ हैं, शेष खाली हैं। चौथा गूजरदेव मंदिर है, जो कला की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है। इसके चारों ओर दीवालों पर उत्कीर्ण शिलापट्ट लगे हैं। इन शिलापट्टों पर विविध आकर्षक मुद्राओं में स्त्रियों और पुरुषों के चित्र हैं। कुछ पर पुष्पों का सुन्दर अलंकरण है तथा अन्य पर हाथियों की श्रेणियाँ दिखाई गई हैं। ये सब बड़ी सजीवता के साथ चित्रित किये गये हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वास्तव में गूजरदेव मंदिर इस क्षेत्र में अपने ढंग का अकेला है। खेद है कि इसे बुरी तरह तोड़ा गया है, जिससे इस विशाल मंदिर का केवल नीचे का अंश बचा है।

लाखामंडल

यह स्थान देहरादून जिले के जौनपुर परगने में है। देहरादून से ५८ मील चकराता तक मोटर द्वारा जा सकते हैं और वहाँ से पूर्व में २२ मील दूर लाखामंडल है। यह स्थान मूर्तियों का भंडार है। जनश्रुति है कि यहाँ लाखों मूर्तियाँ मिलने के कारण इसका नाम लाखामंडल हुआ। यह स्थान यमुना नदी के निकट ही बसा है और यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य निराला है।

लाखामंडल में एक ही प्राचीन मन्दिर है। उसके भीतर कला की राशि भरी है। शिव, दुर्गा, सप्तमातृका, कुबेर, लक्ष्मी नारायण, कार्तिकेय, सूर्य आदि की अनेक सुन्दर प्रतिमाएँ यहाँ संगृहीत हैं। मन्दिर के बाहर छठी शती की दो मानवाकार प्रतिमायें हैं। ये जय-विजय की हैं, जो हाथ में दंड धारण किये हैं। मन्दिर की बाहरी दीवालों पर गंगा, लक्ष्मी तथा महिषमर्दिनी की प्रतिमाएँ लगी हैं।

अन्य मूर्तियों को एक गोदाम में सुरक्षित किया गया है। इनकी संख्या बहुत बड़ी है और इनका समय ई० पाँचवीं शती से लेकर बारहवीं शती तक है। इनमें कुछ महत्त्वपूर्ण शिलालेख भी हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

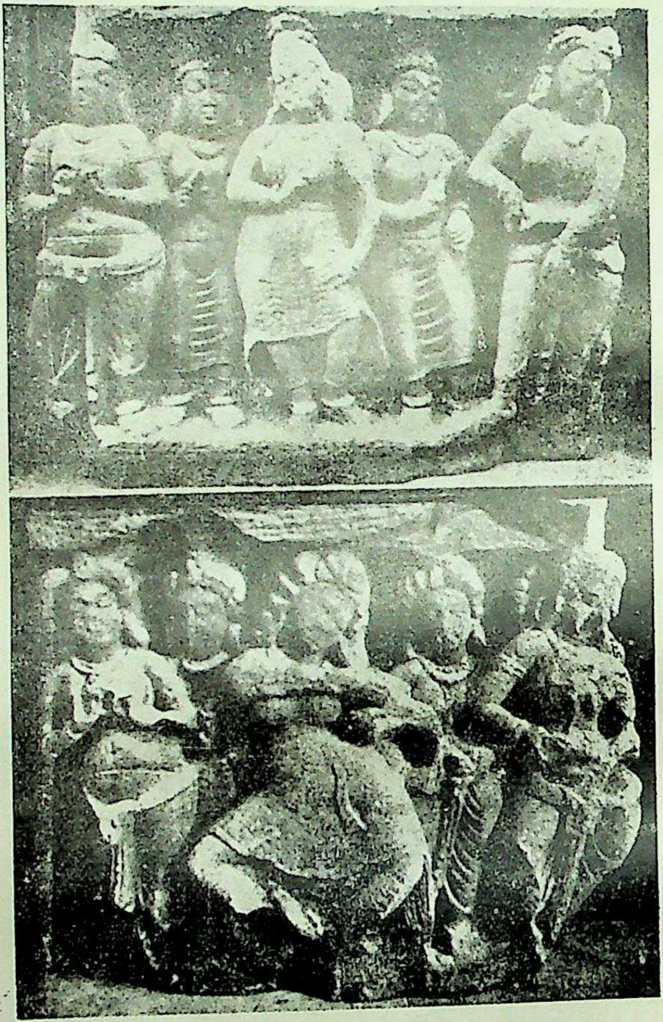

देवगढ़ (जिला झाँसी) से प्राप्त शिलापट्टों पर संगीत के दो दृश्य, जिनमें बाजे के साथ नृत्य दिखाया गया है। नर्तकियाँ लम्बा कुर्ता और सुथना पहने हैं। गुप्त-काल।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कालसी

यह स्थान देहरादून जिले के उत्तरी भाग में यमुना के किनारे स्थित है। यहीं एक छोटे शिलालेख पर अशोक के लेख उत्कीर्ण हैं। लेखों की लिपि ब्राह्मी तथा भाषा पाली है। ऐसा प्रतीत होता है कि अशोक के समय में कालसी इस ओर का एक केन्द्र स्थान था। उत्तर प्रदेश में कालसी ही वह स्थान है जहाँ अशोक के चट्टान पर उत्कीर्ण लेख (रॉक एडिक्ट) मिले हैं।

हरिद्वार

हरिद्वार हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। यहीं से गंगा पर्वतीय भाग को छोड़ कर मैदान में प्रवेश करती है, इसलिये हरिद्वार को 'गंगा-द्वार' भी कहते हैं। ऐतिहासिक काल में हरिद्वार का नाम मायापुर भी प्रसिद्ध हुआ। इसके समीप ही कनखल है जहाँ पुराणों के अनुसार यक्ष प्रजापति का यज्ञ हुआ था। कनखल का उल्लेख महाकवि कालिदास ने भी अपने ग्रंथ 'मेघदूत' में किया है।

हरिद्वार और कनखल से गुप्त एवं मध्यकाल की अनेक हिन्दू-मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं, जो अब गुरुकुल काँगड़ी के संग्रहालय में हैं। उत्तराखंड के विभिन्न स्थानों से प्राप्त अन्य अवशेष भी वहाँ प्रदर्शित हैं। कनखल से कुछ प्राचीन भित्ति-चित्र भी प्राप्त हुए हैं, जो लगभग १५० वर्ष पुराने हैं और जिनमें विविध धार्मिक एवं लौकिक दृश्य सुन्दरता के साथ दिखाये गये हैं। इन चित्रों की प्रतिकृतियाँ भी उक्त संग्रहालय में देखी जा सकती हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हस्तिनापुर

यह स्थान मेरठ जिले की मवाना तहसील में मेरठ से ११ मील उत्तर-पूर्व है। प्राचीन काल में गंगा नदी इस नगर के किनारे बहती थी, पर अब वह कई मील दूर हट गई है। गंगा की एक शाखा 'बुढ़गंगा' अब भी प्राचीन टीलों के समीप से बहती है। ये टीले ऊँचे-नीचे हैं और इनकी शृंखला काफी दूर तक चली गई है। मुख्य टीला 'विदुर का टीला' या उल्टाखेड़ा कहलाता है। यह कई फर्लांग में फैला है और धरातल से ५०-६० फुट ऊँचा है। हाल में इस टीले की खुदाई से प्राचीन इमारतों के भग्नावशेष तथा कुछ मूर्तियाँ प्राप्त हुई थीं। इस स्थान की खुदाई का मुख्य उद्देश्य यह था कि गंगा काँठे की प्राचीन सभ्यता का सिन्धु घाटी की प्रागैतिहासिक सभ्यता के साथ सम्बन्ध स्थापित किया जा सके। हस्तिनापुर की खुदाई में विभिन्न स्तरों से प्राप्त प्राचीन मृत्पात्रों आदि से इतना पता लगाया जा सकता है कि यहाँ की प्राचीनतम बस्ती ई० पू० १००० से पहले की रही होगी, जो कई शताब्दियों तक कायम रही। दूसरी बस्ती ई० पू० ६०० के लगभग बसाई गई और ई० पू० ३०० तक आबाद रही। तीसरी बस्ती ई० पू० २०० से लेकर लगभग २०० ई० तक रही। चौथी अन्तिम बस्ती के प्रमाण ११वीं से १४वीं शताब्दी तक मिलते हैं। इस प्रकार प्राचीन हस्तिनापुर कई बार बसा और उजड़ा। वर्तमान समय में यहाँ कुछ आधुनिक हिन्दू, जैन तथा मुस्लिम स्मारक अवशिष्ट हैं। जैन धर्म का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ध्यानमुद्रा में बैठे हुए जैन तीर्थङ्कर ऋषभनाथ की प्रतिमा। खंडित सिर के पीछे प्रभामंडल दिखाई देता है। उनके अगल-बगल चँवर लिये हुए देवता दिखाये गये हैं। गुप्त-काल।

(पुरातत्त्व संग्रहालय, मथुरा)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यह एक प्रमुख क्षेत्र माना जाता है।

प्राचीन साहित्य में कुरु राज्य की राजधानी के रूप में हस्तिनापुर का वर्णन बहुत मिलता है। और इसके नाम गजपुर, नागपुर, हस्तिनापुर आदि मिलते हैं। जब गंगा में बाढ़ आने के कारण यह नगर नष्ट हो गया तब कुरुवंशियों ने कौशाम्बी को अपनी राजधानी बनाया। उसी समय से हस्तिनापुर का महत्त्व कम हो गया।

मथुरा

भारतीय इतिहास में मथुरा का प्रमुख स्थान रहा है। सप्तमहापुरियों में इसकी भी गणना है। इसका प्राचीन नाम मधुरा था।

वर्तमान मथुरा के समीप मधुवन में पहले मधु और उसके पुत्र लवण का शासन था। मधु के नाम पर ही मधुरा या मधुपुरी नगरी बसी थी। श्रीराम के भाई शत्रुघ्न ने लवण को मारकर इस नगरी को नये रूप में बसाया। कुछ समय बाद मथुरा और उसके आस-पास का प्रदेश चन्द्रवंश की यादव शाखा के अधिकार में आ गया। इस प्रदेश का नाम पहले 'शूरसेन' और बाद में 'व्रज' प्रसिद्ध हुआ। यादव शाखा में ही श्रीकृष्ण हुए। उनके समय में यादवों का एक वंश मथुरा में शासन करता था। यह अन्धक वंश कहाता था। दूसरा वृष्णि वंश द्वारका में राज्य करता था। ये दोनों गणराज्य थे और इन्होंने अपना एक संघ बना लिया था, जिसकी व्यवस्था बहुत समय तक सन्तोषजनक रूप से चलती रही। महाभारत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

युद्ध में श्रीकृष्ण ने प्रधान भाग लिया।

श्री कृष्ण के बाद मथुरा में यादव लोग बहुत समय तक शासन करते रहे। सोलह महाजन पदों में मथुरा या शूरसेन जनपद भी एक था। बुद्ध के समय यहाँ का शासक अवन्तिपुत्र था। ई० पू० ४०० के लगभग मथुरा का राज्य पाटलिपुत्र साम्राज्य के अन्तर्गत हुआ और यहाँ क्रमशः नंद, मौर्य, शुंग, क्षत्रप और कुषाण वंशों का शासन रहा। क्षत्रपों और कुषाणों के समय में मथुरा की बड़ी उन्नति हुई। इसके पश्चात् लगभग २०० से ३५० ई० तक यहाँ नाग राजाओं का और फिर ४६५ ई० तक गुप्त वंश का शासन रहा। हर्ष के समय में आये हुए चीनी यात्री हुएनसाँग ने मथुरा का विस्तृत वर्णन किया है। १०१७ ई० में महमूद गजनवी का मथुरा पर भीषण आक्रमण हुआ और श्रीकृष्ण-जन्मस्थान आदि के विशाल मन्दिर तोड़े गये। १२ वीं शती के अन्त में यहाँ मुसलमानों का अधिकार हो गया। अकबर के समय में मथुरा, वृन्दावन, गोकुल, गोवर्द्धन आदि ब्रज के स्थान धार्मिक केन्द्रों के रूप में विकसित हुए। जन्म-स्थान पर के अन्तिम मन्दिर को, जिसे जहाँगीर के समय में ओरछा के राजा वीरसिंह देव ने बनवाया था, १६६९ ई० में औरंगजेब ने नष्ट किया और वहाँ एक बड़ी मस्जिद बनवाई। वर्तमान मथुरा में मुगलकाल के पहले की कोई प्राचीन इमारत नहीं बची है। मथुरा को उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा कला-केन्द्र माना जाता है। ई० पूर्व चौथी शती से लेकर बारहवीं शती के अन्त तक यहाँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शिव-पार्वती की विवाह-मूर्ति । नीचे ब्रह्मा जी तथा अन्यत्र विविध देवी-देवता दिखाये गये हैं । कन्नौज से प्राप्त ।
(समय ८ वीं शती का प्रारम्भ)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बौद्धों एवं जैनों के स्तूपों तथा विहारों का और हिन्दू मन्दिरों का निर्माण बड़ी संख्या में हुआ। तीनों धर्मों से सम्बन्धित सैकड़ों कलापूर्ण प्रतिमाओं का निर्माण भी मथुरा में हुआ। कुषाण तथा गुप्तकाल में मथुरा में बनाई गई प्रतिमाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। मुगल-काल में वृन्दावन में गोविन्ददेव, मदनमोहन, गोपीनाथ, जुगलकिशोर तथा राधावल्लभ मन्दिरों का निर्माण हुआ।

कन्नौज

इस नगर और यहाँ के प्राचीन जनपद का प्राचीन नाम कान्यकुब्ज था। नगर के अन्य नाम गाधिपुर, कुशस्थल, कुसुमपुर आदि भी प्राचीन साहित्य में मिलते हैं, जिनके सम्बन्ध में अनेक गाथाएँ प्रचलित हैं। पौराणिक अनुश्रुतियों के अनुसार प्राचीन कान्यकुब्ज जनपद पर जिस राजवंश का शासन रहा उसका प्रारम्भ अमावसु के पुत्र पुरुरवा से हुआ। इस वंश के राजाओं के नाम अमावसु, भीम, कांचनप्रभ, सुहोतृ, जह्नु आदि मिलते हैं। जह्नु से लेकर कुश के समय तक जिन राजाओं का कान्यकुब्ज पर शासन रहा उनके नाम प्रायः सभी पौराणिक सूचियों में एक से मिलते हैं। इन राजाओं के नामों के अतिरिक्त हमें उनके शासन-प्रबन्ध तथा कन्नौज की तत्कालीन दशा के सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ पता नहीं चलता।

कन्नौज का महत्त्व ई० सातवीं शती से अधिक बढ़ा, जब यहाँ सम्राट् हर्षवर्धन का प्रभुत्व स्थापित हुआ। मौखरी, वर्धन,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रतीहार और गाहडवाल राजवंशों के समय में कन्नौज की बड़ी उन्नति हुई। हर्ष के समय में तो इस नगर की प्रसिद्धि बहुत बढ़ गई। उसके समय में हुएनसाँग ने कन्नौज का विस्तार से वर्णन किया है। नगर की लम्बाई उस समय २० ली (लगभग ३॥ मील) और चौड़ाई १ मील से कुछ कम थी। हर्षवर्धन के समय में उत्तर भारत में कन्नौज स्थापत्य एवं मूर्तिकला का प्रसिद्ध केन्द्र बना। हुएनसाँग ने लिखा है कि उस समय कन्नौज में कई सौ बौद्ध संघाराम थे, जिनमें हीन-यान और महायान सम्प्रदाय के अनुयायी दस हजार भिक्षु साधु रहते थे। नगर में दो सौ देव मंदिर थे। चीनी यात्री ने लिखा है कि गंगा के तटों पर हर्ष ने कई हजार स्तूप सौ-सौ फुट ऊँचे बनवाये। तत्कालीन हिन्दू मंदिरों में हुएनसाँग ने एक सूर्य मंदिर का उल्लेख किया है। इस मंदिर से थोड़ी दूर दक्षिण की ओर महेश्वरदेव (शिव) का भी एक मंदिर था। ये दोनों मंदिर बहुमूल्य नीले पत्थर से बनाये गये थे और उनमें अनेक प्रकार की सुन्दर मूर्तियाँ उत्खचित थीं। हुएनसाँग ने इस मंदिर की लम्बाई-चौड़ाई विशाल बौद्ध विहारों के बराबर बताई है प्रत्येक मंदिर में एक हजार मनुष्य देव-पूजा के लिए नियुक्त थे। मंदिरों में गाना, बजाना तथा नगाड़ों का घोष रात दिन हुआ करता था।

गुर्जर-प्रतीहार राजाओं के शासन-काल में भी कन्नौज में कला की बड़ी उन्नति हुई। इन राजाओं में नागभट्ट द्वितीय, मिहिरभोज, महेन्द्रपाल और महीपाल प्रतापी शासक हुए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

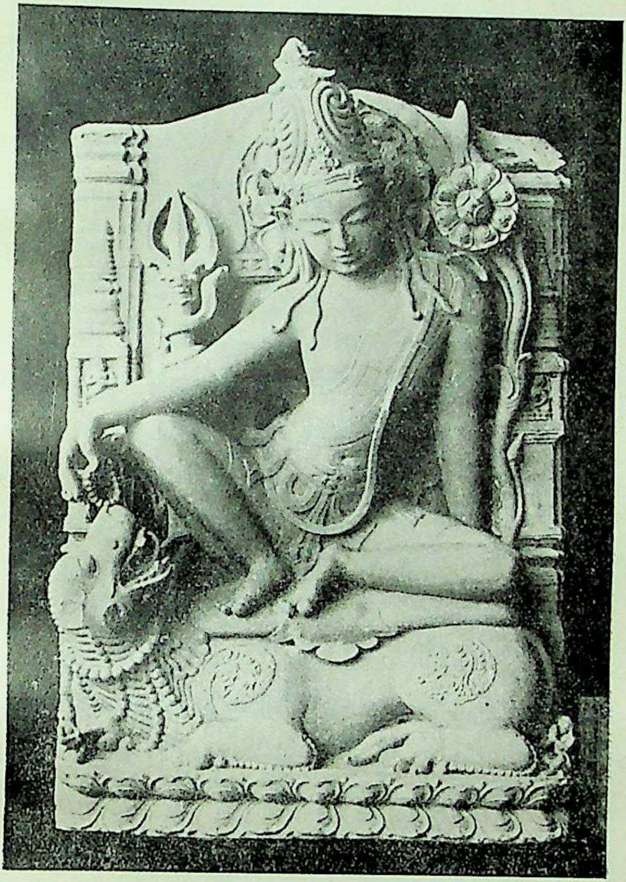

बौद्ध देवता सिंहनाद अवलोकितेश्वर की कलापूर्ण प्रतिमा ।
(महोबा से प्राप्त, समय ई० ११ वीं शती)

(राजकीय संग्रहालय, लखनऊ)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इनके समय में कन्नौज हिन्दू धर्म का प्रसिद्ध केन्द्र बना। शिव, विष्णु और देवी के अनेक मंदिर इन राजाओं के राज्य-काल में बने, जिनके अवशेष बड़ी संख्या में उपलब्ध हुए हैं। कुछ प्रतिमाएँ कला की दृष्टि से उत्कृष्ट कोटि की हैं। इनमें कार्तिकेय, विष्णु, विश्वरूप विष्णु, शिव-पार्वती, गणेश तथा अनेक देवी-प्रतिमाएँ उल्लेखनीय हैं।

कंपिल

कंपिल या कांपिल्य भारत के अति प्राचीन नगरों में से एक है। प्राचीन साहित्य में इसके बहुत उल्लेख मिलते हैं। सब से पहले इसका नाम यजुर्वेद में 'काम्पील' नाम से आया है। हस्तिनापुर, मथुरा, अहिच्छत्रा आदि नगरों की भाँति इस नगर की भी बड़ी प्रसिद्धि थी। हिन्दू और जैन धर्म का यह एक बड़ा केन्द्र था। कंपिल पहले गंगा के किनारे ही बसा था। अब भी इसके नीचे बहने वाली बूढ़ी गंगा नामक धारा विद्यमान है।

महाभारत-युद्ध के कुछ पहले द्रुपद पंचाल के राजा थे। प्रसिद्ध है कि उन्होंने द्रोणाचार्य का अपमान किया। इस अपमान का बदला द्रोण ने अपने शिष्यों द्वारा लिया। द्रुपद युद्ध में पराजित हुए और बंदी बना लिये गये। अन्त में द्रोणाचार्य ने उत्तरी पंचाल अपने अधिकार में कर लिया और दक्षिण पंचाल का शासक द्रुपद को बना रहने दिया। कंपिल से गुप्त तथा मध्यकाल की अनेक प्राचीन मूर्तियाँ आदि मिली हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संकिसा

यह स्थान फर्रुखबाद जिले में पखना स्टेशन के लगभग ७ मील दक्षिण-पश्चिम काली नदी के किनारे है। इसका प्राचीन नाम 'संकाश्य' था। वाल्मीकि रामायण के अनुसार जनक के भाई कुशध्वज संकाश्य के शासक थे। चीनी यात्री हुएनसाँग ने इसका नाम कपित्थ भी लिखा है। बौद्ध ग्रंथों में इस स्थान का उल्लेख बहुत मिलता है। बौद्ध अनुश्रुति के अनुसार संकाश्य में ही भगवान् बुद्ध, ब्रह्मा और इन्द्र के साथ त्रयस्त्रिंश स्वर्ग से उतरे थे।

वर्तमान संकिसा एक ऊँचे टीले पर बसा हुआ छोटा गाँव है। यह टीला गाँव के बाहर काफी दूर तक फैला है और 'किला' कहलाता है। पूर्व से पश्चिम इसकी लम्बाई १, ५०० फुट है और उत्तर से दक्षिण चौड़ाई १,००० फुट है। किले के भीतर ईंटों के एक टीले पर बिसहरी देवी का मन्दिर है। इसके पास अशोक के स्तम्भ का प्रसिद्ध शीर्ष है, जिस पर हाथी की मूर्ति है। हाथी की सूँड़ टूट गई है। संकिसा से बौद्ध मूर्तियाँ, सिक्के, मिट्टी की मुद्राएँ आदि बड़ी संख्या में मिली हैं।

आगरा

मुगल-स्थापत्य के लिए आगरा और उससे २४ मील दूर स्थित फतहपुर-सीकरी का स्थान उत्तर प्रदेश में अत्यंत महत्त्व-पूर्ण है। अकबर (१५५६–१६०५) को इमारतों का बड़ा शौक था। उसने आगरा का प्रसिद्ध किला बनवाया और नई

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

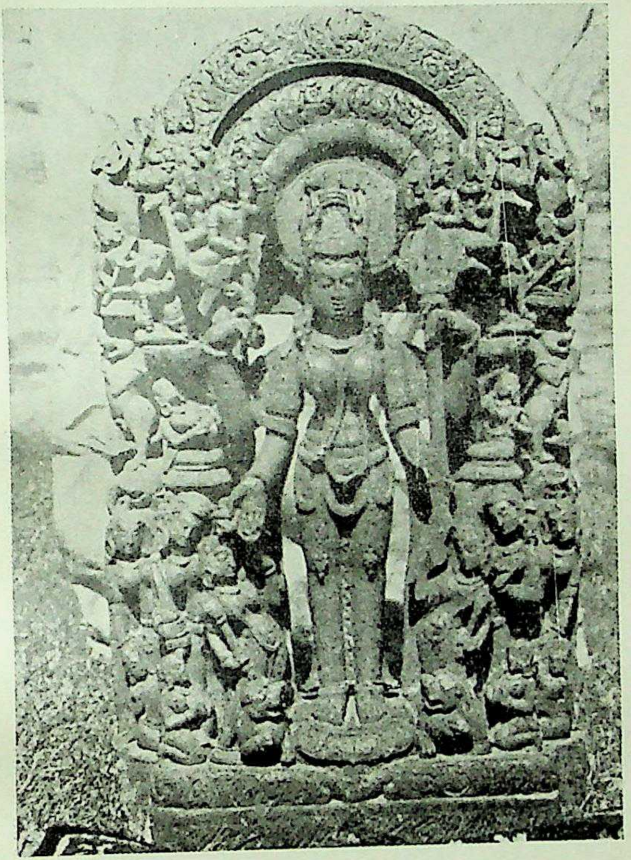

देवी पार्वती की अलंकृत प्रतिमा
(बैंजनाथ, जि० अलमोड़ा से प्राप्त, समय ई० ११ वीं शती)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजधानी फतहपुर-सीकरी में अनेक महलों आदि का निर्माण कराया, जो अपनी कला के लिए अमर हैं। अकबर ने भारतीय स्थापत्य को ऊँचा स्थान दिया। साथ ही उसने ईरान तथा अन्य देशों की उन शैलियों को भी ग्रहण किया जिनमें उसने कोई विशेषता समझी। इस प्रकार अकबर-कालीन इमारतों में देशी एवं विदेशी स्थापत्य का अच्छा समन्वय मिलता है।

अकबर द्वारा निर्मित इमारतें प्राय: लाल पत्थर की मिलती हैं, ये इमारतें अधिकतर आगरा और फतहपुर-सीकरी में स्थित हैं। लाल पत्थर के साथ उसने कहीं-कहीं सफेद संगमरमर का भी इस्तेमाल कराया है। अकबर-कालीन इमारतों के अधिकांश गुम्बद लोदी-काल की इमारतों की तरह भीतर खोखले मिलते हैं। खंभों के कई पहलू हैं तथा उन पर के शीर्ष ब्रैकट-नुमा होते हैं। इमारतों के अलंकरणों में गहरी नक्काशी और पारदर्शी गवाक्ष उल्लेखनीय हैं। भीतरी दीवालें और छतें सुनहले तथा दूसरे रंगों से रँगी हुई मिलती हैं।

जहाँगीर के समय (१६०५-२७) में भी कई इमारतें बनीं, जिनमें आगरा के पास अकबर का तिमंजिला मकबरा तथा एतमादुद्दौला का मकबरा विशेष उल्लेखनीय हैं। इस काल में संगमरमर का प्रयोग बढ़ा और भड़कीले रंगों तथा पच्चीकारी को भी महत्त्व दिया गया। अब स्थापत्य के भारतीय उपकरणों के स्थान पर ईरानी सजावट की चीजों का बाहुल्य मिलने लगा है। जहाँगीर ने स्थापत्य से अधिक चित्र-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कला की ओर ध्यान दिया। उसके समय में शबीह चित्रकारी की बड़ी उन्नति हुई।

शाहजहाँ का शासनकाल (१६२७-५८) इमारतों के निर्माण के लिए सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। उसी समय आगरे में संसार-प्रसिद्ध ताजमहल का निर्माण हुआ। ताजमहल के अतिरिक्त शाहजहाँ ने अन्य कितनी ही इमारतें आगरा, दिल्ली, अजमेर, लाहौर, श्रीनगर आदि में बनवाईं, जो वास्तुकला की विख्यात कृतियाँ हैं। इन कृतियों में जैसा सौन्दर्य और निखार मिलता है वैसा पहले की इमारतों में दुर्लभ है। अकबर-कालीन इमारतों की विशालता और दृढ़ता की जगह अब कोमलता और सुन्दरता ने ग्रहण की। लाल पत्थर का स्थान अब रंग-बिरंगे संगमरमर ने ले लिया। पहले की सादी मेहराब के स्थान में शाहजहाँ ने नौ कटावों वाली मेहराब को चालू किया। उसके समय की गुंबदों, जाली के कटावों तथा रंगों में ईरानी कला का प्रभाव अधिक मिलता है। खंभों पर सपत्र-घट मिलते हैं और कहीं-कहीं दो-दो खंभों (स्तंभयुग्म) का एक साथ प्रयोग मिलता है। संगमरमर पर अनेक रंगीन पत्थरों का जड़ाव तथा विभिन्न पत्रावलियों का उकेरना भी इस काल की विशेषता थी। आगरा की प्रसिद्ध इमारतें लाल किला, ताजमहल, एतमादुद्दौला का मकबरा, जामा मस्जिद आदि हैं।

फतेहपुर-सीकरी

फतेहपुर-सीकरी को एक सुन्दर नगर बनाने का श्रेय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

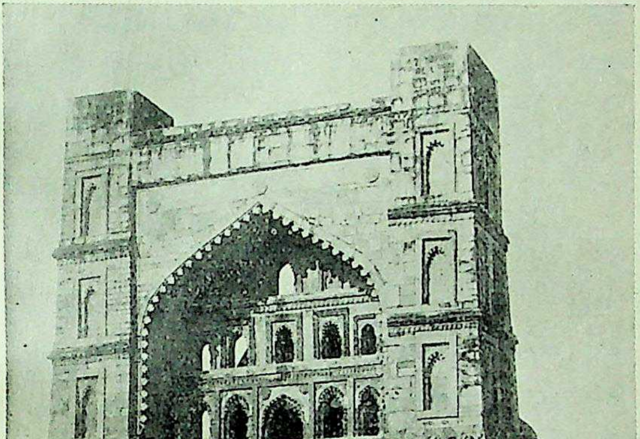

अटाला मस्जिद, जौनपुर ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अकबर को है। दुर्भाग्य से यह नगर आगरा, दिल्ली आदि की तरह अधिक समय तक राजधानी के रूप में नहीं रह सका, तो भी जो स्मारक यहाँ बचे हैं उनसे पता चलता है कि मुगल सम्राट् ने इनको सजाने में कोई कोर-कसर बाकी नहीं रक्खी। यहाँ का बुलन्द दरवाजा, जामा मस्जिद, शेख सलीम चिश्ती की दरगाह, जोधाबाई का महल आदि उल्लेखनीय इमारतें हैं।

बिठूर

यह स्थान कानपुर जिले में कानपुर से लगभग १४ मील उत्तर-पश्चिम गंगा के किनारे स्थित है। इसका प्राचीन नाम 'ब्रह्मावर्त तीर्थ' मिलता है। पौराणिक साहित्य में इस तीर्थ का बड़ा माहात्म्य कहा गया है। यहीं पर रामायण के रचयिता वाल्मीकि का आश्रम बताया जाता है। ध्रुव के पिता राजा उत्तानपाद की यह राजधानी थी। ध्रुव का स्थान एक ऊँचे टीले पर आज भी विराजमान है।

बिठूर से अति प्राचीन काल के ताँबे के औजार और बाण-फलक बड़ी संख्या में प्राप्त हुए हैं। पुराने सिक्के भी यहाँ मिलते हैं। जिनसे इस स्थान की प्राचीनता का पता चलता है।

पेशवा बाजीराव द्वितीय बिठूर में बहुत समय तक रहे थे। संतान न होने के कारण उन्होंने नाना घोंडूपंत को गोद लिया था। यही नाना १८५७ ई० के प्रसिद्ध सेनानी हुए और यहीं से युद्ध-सम्बन्धी नीति का इन्होंने निर्धारण किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रातःस्मरणीय रानी लक्ष्मीबाई के पिता मोरोपंत उन्हें बनारस से बचपन में लिवा कर यहाँ आये थे। लक्ष्मीबाई का छुटपन का नाम मनूबाई था। उनके शैशव का बड़ा भाग बिठूर में ही व्यतीत हुआ। पेशवाओं ने यहाँ अनेक सुन्दर इमारतों और घाटों का निर्माण कराया था। अँग्रेजों ने अपनी विजय के बाद इन इमारतों को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। मराठा-काल में निर्मित कुछ इमारतों के चिह्न बिठूर में अब भी देखे जा सकते हैं। कार्तिकी के दिन यहाँ बड़ा मेला लगता है।

भीतरगाँव

भीतरगाँव कानपुर जिले की नखल तहसील में कानपुर से लगभग २० मील दक्षिण है। यहाँ गुप्तकाल का एक महत्त्वपूर्ण मन्दिर मिला है। यह मन्दिर ईंट का बना है और स्थापत्य की एक सुन्दर कृति है। ७० फीट ऊँचा यह मन्दिर शिखर-शैली का है। यह एक ऊँची कुर्सी पर बनाया गया है और वर्गाकार है। दीवालों और आलों पर बड़े कलापूर्ण ढङ्ग से उकेरी हुई मिट्टी की मूर्तियाँ लगाई गई हैं। मन्दिर की बहुत सी कृतियाँ राजकीय संग्रहालय, लखनऊ में सुरक्षित हैं। मिट्टी की कलात्मक मूर्तियाँ विविध देवी-देवताओं, पशु-पक्षियों आदि की हैं। मन्दिर में विविध अलंकरणों का जो प्रयोग किया गया है वह सराहनीय है। वास्तव में यह मन्दिर उत्तर भारत में गुप्तकालीन वस्तुकला का एक अनुपम उदाहरण है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जोधाबाई का महल, फतहपुर-सीकरी ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रयाग

प्रयाग (वर्तमान इलाहाबाद) भारत का प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान है। वाल्मीक रामायण, महाभारत, पौराणिक एवं परवर्ती साहित्य में प्रयाग के बहुत उल्लेख मिलते हैं। भारद्वाज मुनि का आश्रम तथा प्राचीन 'अक्षयवट' वृक्ष यहीं था। प्रयाग गंगा और यमुना के संगम पर स्थित है और तीर्थराज के नाम से प्रसिद्ध है। जहाँ दोनों नदियाँ मिलती हैं वह स्थान त्रिवेणी कहलाता है। त्रिवेणी का अर्थ तीन नदियाँ नहीं, बल्कि तीन धाराएँ समझना चाहिए। ये तीन धाराएँ हैं——१. गंगा, २. यमुना, तथा ३. दोनों की सम्मिलित धारा। प्रयाग में सरस्वती नदी का जो अस्तित्व माना जाता है वह काल्पनिक ही कहा जा सकता है।

प्रयाग बहुत समय तक कोशल राज्य के अन्तर्गत रहा। बाद में वह पाटलिपुत्र साम्राज्य का एक अंग हो गया। मौर्य सम्राट् अशोक तथा गुप्त सम्राट् समुद्रगुप्त ने अपने प्रसिद्ध शिलालेख उत्कीर्ण कराये, जो किले के अन्दर एक बड़े स्तम्भ पर अब भी देखे जा सकते हैं इसी स्तम्भ पर अशोक की रानी, बीरबल और जहाँगीर के लेख भी खुदे हैं। मुसलमानी शासन-काल में भी प्रयाग का महत्त्व कम नहीं हुआ। अकबर ने संगम पर एक मजबूत किला बनवाया। अकबर स्वयं यहाँ बहुत दिन तक रहा था। उसके समकालीन इतिहास-लेखक बदायूँनी के लेख से पता चलता है कि अकबर ने प्रयाग में एक बड़े राज्य-प्रासाद की आधार-शिला रक्खी और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नगर का नाम इलाहाबाद रखा। अन्य लेखकों के अनुसार नगर का नवीन नाम 'इलाहाबास' रक्खा गया था। अकबर के साम्राज्य के १२ सूबों में पहला सूबा यही था। कड़ा और जौनपुर के इलाके भी इलाहाबाद के सूबे के अन्तर्गत कर दिये गये थे। इलाहाबाद का खुसरो बाग दर्शनीय है। यहाँ जहाँगीर के बेटे खुसरो की कब्र है। प्रयाग संग्रहालय में कौशाम्बी, भरहुत, खजुराहो आदि की प्रतिमाओं, प्राचीन सिक्कों, चित्रों आदि का बहुमूल्य संग्रह है।

कौशाम्बी

प्रयाग से लगभग ३७ मील पश्चिम-दक्षिण यमुना के उत्तरी तट पर 'कोसम' नामक एक छोटा गाँव है। यहीं भारत की प्रसिद्ध एतिहासिक नगरी कौशाम्बी बसी हुई थी।

वैदिक साहित्य तथा परवर्ती संस्कृत एवं अन्य भाषाओं के साहित्य में इस नगरी के उल्लेख प्रचुरता से मिलते हैं। चन्द्रवंशी राजा कुशाम्बु ने इसे बसाया था, इसी से यह नगरी कौशाम्बी कहलाई। यह कुशाम्बु राज पुरुरवा से १० वीं पीढ़ी में हुए थे। जब गंगा की बाढ़ से हस्तिनापुर नगर नष्ट हो गया तब राजा नेमिचक्र ने कौशाम्बी को अपनी राजधानी बनाया। उनके वंश ने यहाँ २२ पीढ़ी तक राज्य किया।

जिस राज्य की कौशाम्बी राजधानी थी उसका नाम वत्स देश था। महात्मा बुद्ध के समय में इस राज्य ने बड़ी उन्नति की। उस समय यहाँ का राजा उदयन था। उदयन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फलक १५

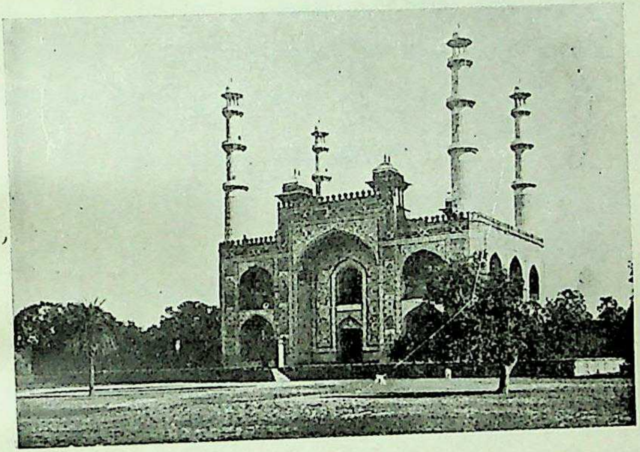

आगरा के समीप सिकन्दरा में अकबर का मकबरा ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और अवन्ती की राजकुमारी वासवदत्ता के प्रणय की गाथा भारतीय कथा-साहित्य की एक अमर कहानी है। भगवान् बुद्ध कई बार कौशाम्बी आए और यहाँ बहुत समय तक उन्होंने निवास किया। उनके लिए कौशाम्बी में कुक्कुटाराम तथा घोषिताराम नामक दो विहारों का निर्माण कराया गया। घोषिताराम के अवशेष हाल ही में की गई कौशाम्बी की खुदाई से प्राप्त हुए हैं। इसके अतिरिक्त कौशाम्बी से अन्य कितनी ही कलापूर्ण मूर्तियाँ, शिलालेख, मनके, सिक्के तथा मिट्टी की मुद्राएँ आदि मिली हैं।

अहिच्छत्रा

अहिच्छत्रा नगर के अवशेष वर्तमान बरेली जिले में रामनगर नामक गाँव के समीप टीलों के रूप में बिखरे पड़े हैं। यहाँ पहुँचने के लिए पहले बरेली से आँवला नामक रेलवे स्टेशन जाते हैं। आँवला से मोटर या ताँगे द्वारा लगभग १० मील उत्तर की ओर चल कर अहिच्छत्रा पहुँचते हैं। इस पुरानी नगरी के ढूह कई वर्गमील के विस्तार में फैले हैं। रामनगर से लगभग ड़ेढ़ मील आगे पुराने किले के अवशेष हैं। किले के विषय में यह जनश्रुति है कि उसे राजा आभि ने बनवाया था। कहते हैं कि यह राजा अहीर था। एक दिन जब यह किले की भूमि पर सोया हुआ था, उसके ऊपर एक नाग ने छाया कर दी। पाण्डवों के गुरु द्रोणाचार्य ने उसे इस प्रकार सोया देखकर भविष्यवाणी की कि वह किसी दिन इस प्रदेश का राजा बनेगा। कहते हैं कि यह भविष्यवाणी सच निकली।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस कोट का वर्तमान घेरा लगभग साढ़े तीन मील है। कोट के चारों तरफ एक खाई थी, जिसमें पानी भरा रहता था। यह खाई अब भी दिखाई पड़ती है। इस कोट के अलावा अनेक टीले इसके आस-पास फैले हुए हैं, जहाँ पुराने समय में स्तूप, मन्दिर तथा अन्य इमारतें विद्यमान थीं। कोट की खुदाई से प्राचीन इमारतों के खंडहर तथा मिट्टी और पत्थर की बहुसंख्यक मूर्तियाँ मिली हैं।

नैमिषारण्य

नैमिषारण्य, जिसे आजकल 'नीमसार' कहते हैं, सीतापुर जिले में है। भारतीय जनश्रुति के अनुसार सूत ने चौरासी ऋषियों को यहाँ पर पुराण सुनाए थे। पुराणों में नैमिष की बड़ी महिमा कही गई है। चक्रतीर्थ आदि अनेक तीर्थ-स्थान यहाँ पर हैं। नैमिष से बड़ी संख्या में प्राचीन अवशेष मिले हैं।

अयोध्या

अयोध्या नगरी भारत की सप्त महापुरियों में से एक है। इस नगरी को भगवान् श्रीराम का जन्म-स्थान होने का गौरव प्राप्त है। भारत में प्रसिद्ध इक्ष्वाकुवंशी राजाओं की यह नगरी बहुत समय तक राजधानी रही। अयोध्या का राज्य कोशल कहलाता था। बहुत समय तक इस राज्य की दक्षिणी सीमा स्यंदिका नदी (वर्तमान सई) थी।

महत्मा बुद्ध के समय में कोशल राज्य के दो भाग हो यग, उत्तर कोशल और दूसरा दक्षिण कोशल। इन दोनों की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सीमा सरयू नदी थी। दक्षिण कोशल की राजधानी अयोध्या रही और उत्तर कोशल की श्रावस्ती। बुद्ध के समकालीन राजा महाकोशल के समय में कोशल राज्य का विस्तार उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में गंगा तक तथा रामगंगा से लेकर पूर्व में गंडक तक फैल गया।

ऐतिहासक काल में अयोध्या नगरी भी प्रसिद्ध बनी रही। शुंग वंश के प्रथम शासक पुष्यमित्र का एक महत्त्वपूर्ण शिलालेख अयोध्या से मिला है। इस लेख में पुष्यमित्र की उपाधि सेनापति दी हुई है और उसे दो अश्वमेधों का करने वाला लिखा है। गुप्त सम्राट् चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समय में भी अयोध्या की उन्नति हुई। उसके समय में अयोध्या साहित्य और कला का प्रख्यात केन्द्र बनी।

वर्तमान अयोध्या में श्रीराम के तथा कथित जन्म-स्थान पर मुगल सम्राट् बाबर की मस्जिद विद्यमान है। इसमें लगे हुए अनेक खम्भे और शिलापट्ट किसी पुराने हिन्दू मन्दिर के प्रतीत होते हैं। अयोध्या में अन्य अनेक स्थान श्रीराम, सीता, दशरथ आदि से सम्बन्धित बताये जाते हैं।

बनारस

बनारस या काशी भारत के ही नहीं, संसार के प्राचीनतम नगरों में से एक है। इसका प्राचीन नाम वाराणसी प्रसिद्ध था। यह नाम वरना और उसी इन दो नदियों से मिलकर बना है। काशी की व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में कहा जाता है कि यह नाम यहाँ के शासक 'काश' के कारण हुआ, जो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मानव वंश-परम्परा के सातवें राजा थे ।

ऐतिहासिक काल में काशी और कोशल राज्यों के बीच बहुत समय तक कशमकश चलती रही। अन्त में काशी कोशल राज्य का अंग हो गया। बौद्ध साहित्य से पता चलता है कि बनारस उद्योग-धन्धों तथा व्यापार का एक बड़ा केन्द्र था। उत्तर भारत के व्यापारिक मार्ग बनारस से होकर गुजरते थे। यहाँ से बारीक मलमल और सुगंधित पदार्थ बड़े परिमाण में बाहर भेजे जाते थे। जब कोशल देश की राज-पुत्री का विवाह मगध के शासक बिम्बसार से हुआ तो कोशल राज्य ने बनारस की आय अपनी कन्या के दहेज में दे दी। कुछ समय के बाद बनारस का सारा राज्य मगध साम्राज्य में सम्मिलित हो गया।

मराठों के समय में काशी के महत्व की ओर ध्यान गया और यहाँ अनेक मन्दिरों और घाटों का निर्माण तथा मरम्मत हुई। बनारस के आधुनिक राजवंश ने भी काशी के तीर्थ-स्थानों की रक्षा में महत्त्वपूर्ण योग दिया।

वर्तमान समय में काशी में दर्शनीय मन्दिर विश्वनाथ, अन्नपूर्णा, संकटमोचन, दुर्गामन्दिर, आदि विश्वेश्वर, साक्षी विनायक, पंचरत्न आदि हैं। कुण्डों तथा वापियों में दुर्गाकुंड, पुष्कर कुंड, पिशाचमोचन, कपिलधारा, लोलाक, मानसरोवर तथा मन्दाकिनी उल्लेखनीय हैं। काशी में घाटों की संख्या बहुत है। इनमें अस्सीघाट, तुलसीघाट, हरिश्चन्द्रघाट, अहिल्याबाईघाट, दशाश्वमेधघाट तथा मणिकर्णिकाघाट, अधिक प्रसिद्ध हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फलक १६

युगलकिशोर का प्राचीन
मन्दिर, वृन्दावन।
(निर्माण-काल
ई० १७ वीं शती)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

काशी स्टेशन के समीप राजघाट में कुछ वर्ष पूर्व जो खुदाई हुई थी उसमें शुंग-काल से लेकर मध्य-काल के अवशेषों की एक बड़ी राशि प्राप्त हुई थी। इनमें गुप्तकाल की सैकड़ों मृण्मूर्तियाँ और मौहरें विशेष उल्लेखनीय हैं। इस सामग्री का अधिकांश भाग कला भवन, काशी में सुरक्षित है। काशी से लगभग छह मील उत्तर-पश्चिम कंदवा नामक स्थान में कर्दमेश्वर का मध्यकालीन मंदिर है, जो वास्तु-कला की एक सुन्दर कृति है। इस मन्दिर के बहिर्भाग में अनेक हिन्दू देवी-देवताओं की कलापूर्ण मूर्तियाँ लगी हुई हैं। काशी के अन्य दर्शनीय ऐतिहासिक स्थानों में लास रंग का मकबरा, माधवराय का धरहरा, आलमगीरी मस्जिद तथा ढाई कँगूरे की मस्जिद उल्लेखनीय हैं। गंगा और वरुणा के संगम पर स्थित आदिकेशव घाट और मंदिर महत्त्वपूर्ण स्थान हैं। इनका उल्लेख गाहड़वाल शासकों के ताम्र-पत्रों पर मिलता है। ये ताम्रपत्र काशी और उसके समीप कमौली स्थान से बड़ी संख्या में प्राप्त हुए हैं।

काशी को अनेक महात्माओं एवं प्रसिद्ध साहित्यकारों की जन्म-भूमि या कर्म-भूमि होने का भी गौरव प्राप्त है। कबीर, तुलसी और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, जयशंकर प्रसाद, रामचन्द्र शुक्ल आदि ने यहीं अपने जीवन का एक बड़ा भाग व्यतीत किया।

सारनाथ

कला के केन्द्र के रूप में सारनाथ का वर्णन तीसरे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय में किया जा चुका है। बौद्ध धर्म के इतिहास में सारनाथ का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। बुद्ध गया में ज्ञान-संप्राप्ति के बाद बुद्ध ने सब से पहले मृगदाव (सारनाथ) में आकर अपना धर्मोपदेश किया, जो धर्मचक्र-प्रवर्तन के नाम से प्रसिद्ध है। अपने जीवन में बुद्ध यहाँ बराबर आकर निवास करते रहे। उनकी मृत्यु के पश्चात् यह स्थान बौद्धों के लिए एक बड़ा तीर्थ बन गया। ई० पू० तीसरी शती में सम्राट् अशोक ने यहाँ एक बड़ा स्तूप बनवाया और उसमें भगवान् बुद्ध के कुछ अवशेष सुरक्षित किये। पास में ही उसने एक बड़ा स्तम्भ लगवाया जिस पर भिक्षुओं के लिए आदेश उत्कीर्ण किये गये। यह स्तम्भ अब भी टूटी हुई अवस्था में सारनाथ में मौजूद है।

अशोक के बाद सारनाथ में स्तूप, मंदिर और विहार बनवाने की परम्परा जारी रही। इनमें से चौखंडी, धमेख और धर्मराजिका स्तूप के भग्नांश अब भी देखे जा सकते हैं। पुरातत्त्व विभाग द्वारा खुदाई में अनेक प्राचीन विहारों और मंदिरों के खंडहर निकले हैं। जो कलावशेष इस खुदाई से प्राप्त हुए वे स्थानीय पुरातत्त्व संग्रहालय में प्रदर्शित हैं। इनमें धर्मचक्र-प्रवर्तन मुद्रा में बैठी हुई बुद्ध-मूर्ति सर्वश्रेष्ठ है। अशोक-स्तम्भ के ऊपर का सिंहांकित शीर्ष भी यहाँ मिला था, जो अब दिल्ली संग्रहालय में है।

जौनपुर

जौनपुर नगर फीरोजशाह तुगलक के समय में १३५९ ई०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फलक १७

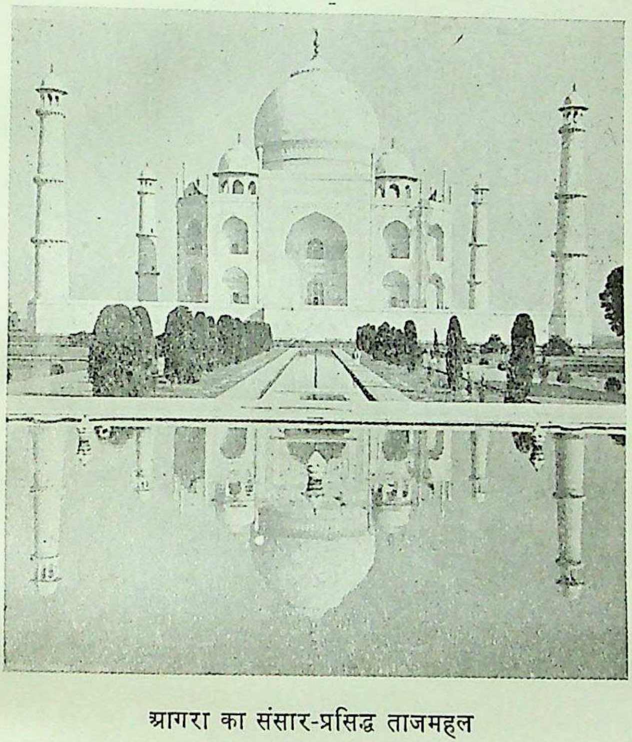

आगरा का संसार-प्रसिद्ध ताजमहल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में आबाद हुआ। १३९४ ई० से यहाँ शरकी वंश का आधिपत्य हुआ। इस वंश के शासनकाल में जौनपुर में अनेक कलापूर्ण इमारतों का निर्माण हुआ। सिकन्दर लोदी ने जौनपुर के शासक हुसैन शाह को १४४५ ई० में परास्त कर इन इमारतों को बड़ी क्षति पहुँचाई। जो इमारतें नष्ट होने से बच रहीं, वे ये हैं--इब्राहीम नायब की मस्जिद और किला, अटाला मस्जिद, लाल दरवाजा मस्जिद और जामा मस्जिद। अटाला मस्जिद का निर्माण ख्वाजा कामिल खाँ ने १३७८ ई० में प्रारम्भ कराया और वह १४०८ ई० में इब्राहीम शाह के द्वारा पूरी की गई। यह मस्जिद बहुत विशाल है और शरकी स्थापत्य का एक सुन्दर नमूना है। इसमें और लाल दरवाजा मस्जिद में हिन्दू अलंकरणों का भी भरपूर प्रयोग किया गया है। हुसैन शाह के द्वारा निर्मित जामा मस्जिद अपने भव्य दीवान के लिए मशहूर है

लखनऊ

अनुश्रुति के अनुसार लखनऊ प्रारम्भ में श्रीराम के भाई लक्ष्मण के द्वारा बसाया गया था और इसका प्राचीन नाम लक्ष्मणपुर था। यहाँ एक पुराना टीला लक्ष्मणटीला के नाम से प्रसिद्ध है। इस टीले की हाल में खुदाई करने से अनेक पुरानी चीजें मिली हैं।

मुसलमानों के पहले लखनऊ का क्रमबद्ध इतिहास ज्ञात नहीं है। मुसलमानी शासन-काल में लखनऊ नगर की उन्नति हुई। अकबर के समय में यहाँ वर्तमान चौक बाजार के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अकबरी दरवाजे का निर्माण हुआ। जहाँगीर और शाहजहाँ के समय में भी यहाँ कई इमारतें बनीं।

लखनऊ की सबसे अधिक प्रसिद्धि अवध के नवाबों के समय में हुई। नवाबों में पहला शासक सआदत खाँ (१७२०-३९) हुआ। उसके बाद सफदर जंग, शुजाउद्दौला, आसफुद्दौला, सआदत अली, गाजीउद्दीन हैदर, नसीरुद्दीन, मोहम्मद अलीशाह और वाजिदअली शाह अवध के नवाब हुए। इनमें आसफुद्दौला, गाजीउद्दीन और वाजिद अली शाह अधिक प्रसिद्ध हैं। इनके समय में लखनऊ में अनेक बड़ी इमारतें बनीं। आसफुद्दौला (१७७५–९७) ने लखनऊ का बड़ा इमामबाड़ा बनवाया। इस इमामबाड़े के पास का विशाल रूमी दरवाजा और आसफी मस्जिद भी उसी की बनवाई हुई है। कहा जाता है कि इस नवाब ने भयंकर अकाल से पीड़ित लोगों को काम दिलाने की वजह से इन बड़ी इमारतों का निर्माण कराया। इसके सम्बन्ध में यह कहावत बहुत प्रसिद्ध है––

जिसे न दे मौला, उसे दे आसफुद्दौला।

आसफुद्दौला ने उक्त बड़ी इमारतों के अलावा, दौलत-खाना, रेजीडैन्सी, बिबियापुर कोठी, चौक बाजार आदि का भी निर्माण कराया। इसके बाद सआदत अली खाँ (१७९८–१८१४ ई० के समय में लखनऊ की बड़ी उन्नति हुई। उसने दिलकुशा महल, बेली गारद दरवाजा और लाल बारादरी का निर्माण कराया। इसी लाल बारादरी में आजकल राजकीय संग्रहालय स्थित है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

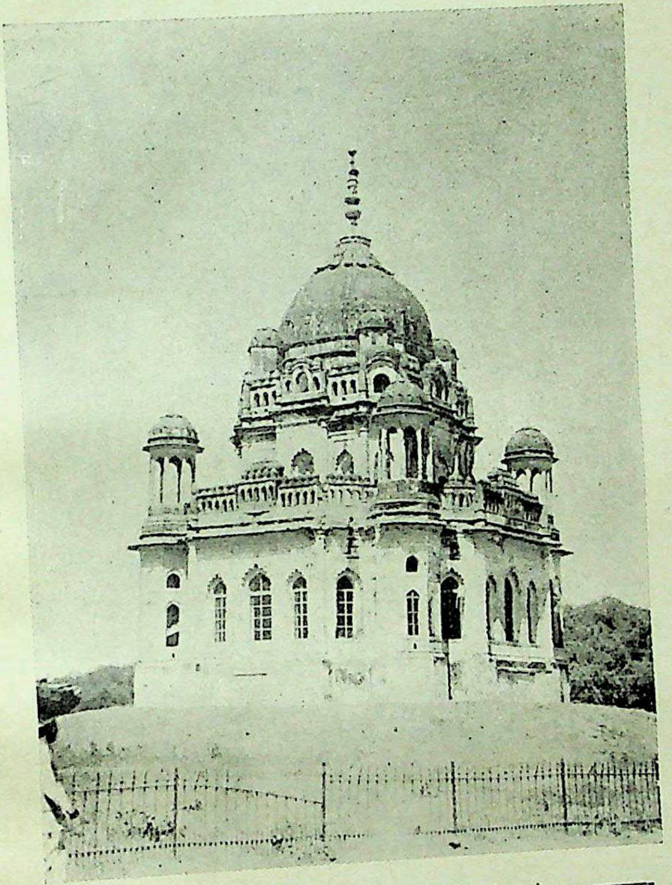

केसर बाग, लखनऊ में निर्मित नवाब सआदतअली खाँ का मकबरा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गाजीउद्दीन हैदर (१८१४–२७ ई०) ने भी शाह नजफ, मोतीमहल, मुबारक मंजिल तथा सम्रादत म्रली खाँ म्रौर खुर्शीद जादी के विशाल मकबरे बनवाये। उसने नगर के दक्षिण म्रोर एक नहर भी खुदवाई, जो हैदर कैनाल के नाम से प्रसिद्ध है। मोहम्मद म्रलीशाह के समय (१८३७-४२ ई०) में हुसैनाबाद का इमामबाड़ा, बड़ी जामा मसजिद म्रौर हुसैनाबाद बारादरी म्रादि बड़ी इमारतें बनीं। नसरुद्दीन हैदर ने प्रसिद्ध छतरमंजिल का निर्माण कराया।

वाजिद म्रली शाह (१७४७-५६ ई०) म्रवध का म्रन्तिम नवाब था। इसे साहित्य म्रौर म्रन्य ललित कलाम्रों से रुचि थी। इसके समय में लखनऊ के केसरबाग में संगीत की लहरी गूँजती रहती थी। इस केसरबाग को वाजिद म्रली शाह ने बनवाया था। १८५६ ई० में म्रँग्रेजों ने वाजिद म्रली को तख्त से उतार दिया म्रौर म्रवध को म्रपने साम्राज्य के म्रन्तर्गत कर लिया। लखनऊ नगर उर्दू शायरी, ठप्पा, ठुमरी म्रौर ख़याल की गायकी तथा कत्थक नृत्य-शैली का एक प्रमुख केन्द्र माना जाता है। यहाँ की तहजीब तथा नजाकत भी प्रसिद्ध है।

श्रावस्ती

प्राचीन श्रावस्ती नगरी के खंडहर गोंडा-बहराइच जिलों की सीमा पर 'सहेत-महेत' नाम से बड़े विस्तार में बिखरे पड़े हैं। यह स्थान उत्तर-पूर्वी रेलवे के बलरामपुर स्टेशन से लगभग १० मील है म्रौर पक्की सड़क द्वारा यहाँ तक पहुँचा जा सकता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्रावस्ती नगर की स्थापना, पुराणों के अनुसार, श्रवस्त नाम के सूर्यवंशी राजा के द्वारा की गई। धीरे-धीरे यह उत्तर कोशल का प्रधान नगर बन गया। श्रीराम ने अपने पुत्र लव को श्रावस्ती का अधिकारी बनाया।

बौद्ध और जैन साहित्य में 'सावत्थि' या 'सावत्थिपुर' नाम से श्रावस्ती की चर्चा बहुत मिलती है। महात्मा बुद्ध के समय में प्रसेनजित् यहाँ का पराक्रमी शासक था। बुद्ध इस नगर में कई बार पधारे और बहुत समय तक यहाँ रहे। श्रावस्ती के समृद्ध सेठ अनाथपिंडक ने जेत नामक राजकुमार से नगर के समीप एक उद्यान खरीदा, जिसका नाम 'जेतवन' था। इस सेठ ने बुद्ध के सम्मान में उद्यान में एक सुन्दर बिहार का निर्माण कराया, जो 'जेतवन विहार' कहलाया। इस बिहार में 'गंधकुटी' और 'कोशंवकुटी' नामक दो इमारतें थीं, जिनके अवशेष आज तक यहाँ सुरक्षित हैं। श्रावस्ती में समय-समय पर अनेक स्तूप और विहार बने। चीनी यात्री हुएनसाँग भी इसी स्थान पर आया था। उसने यहाँ का विस्तृत विवरण लिखा है।

श्रावस्ती जैन धर्म का भी एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र रही है। जैन-अनुश्रुति के अनुसार तीर्थंकर संभवनाथजी तथा चन्द्रप्रभु स्वामी का जन्म यहीं हुआ था। सहेत-महेत में प्राचीन मन्दिरों के जो चिह्न पाये जाते हैं उनसे पता चलता है कि इस नगरी में जैन धर्म का विकास एक दीर्घ काल तक होता रहा।

पुरातत्त्व विभाग के द्वारा श्रावस्ती की आंशिक खुदाई

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

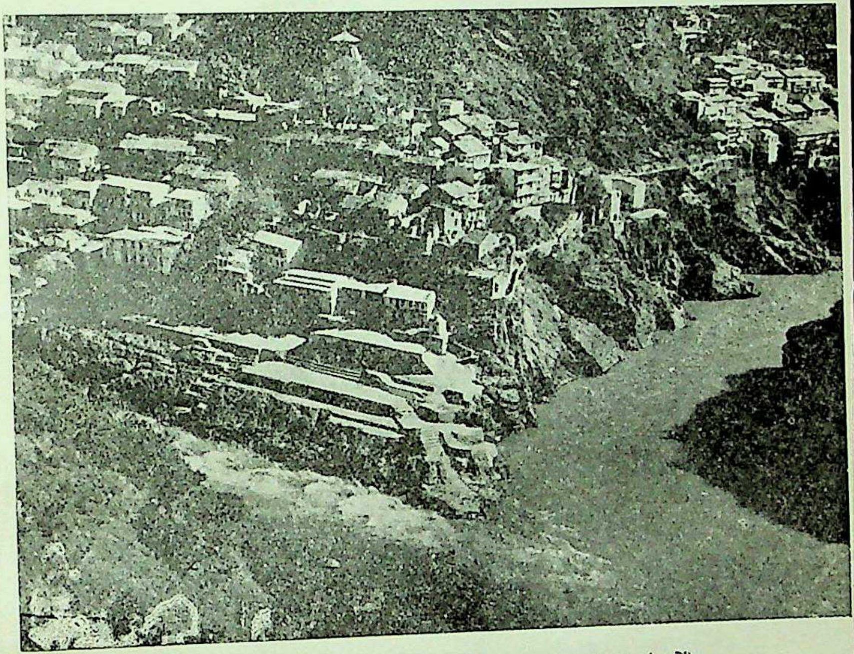

देवप्रयाग, जहाँ भागीरथी (वायें) तथा अलकनन्दा (दायें)
नदियों का संगम है

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हुई है और यहाँ के प्राचीन स्मारकों का संरक्षण किया जा चुका है। यहाँ से मिली हुई बहुत-सी वस्तुएँ बाहर चली गईं। कुछ कलापूर्ण पाषाणखण्ड एवं मिट्टी की मूर्तियाँ राजकीय संग्रहालय, लखनऊ में भी प्रदर्शित हैं।

कुशीनगर

कुशीनगर देवरिया जिले में देवरिया से लगभग १९ मील दूर पक्की सड़क पर वर्तमान कसिया नगर के पास स्थित है। बौद्ध धर्म के मुख्य स्थानों में इसकी गणना है। महात्मा बुद्ध ने यहाँ निर्वाण प्राप्त किया था।

१८७६ ई० में इस स्थान की सफाई हुई। पुराने टीलों की खुदाई कराते समय प्राचीन निर्वाण-स्तूप निकला। बाद की खुदाई में गुप्तकालीन एक ताम्रपत्र, जिस पर एक बौद्ध लेख कुछ तो काली स्याही में लिखा हुआ था और कुछ खुदा हुआ था। खुदाई में गुप्तकाल के कई विहार और मन्दिर भी प्रकाश में आए। कलचुरि राजाओं के द्वारा बारहवीं शताब्दी में निर्मित एक अन्य विहार भी यहाँ निकला।

कुशीनगर की सबसे अधिक उल्लेखनीय मूर्ति लेटी हुई बुद्ध की विशाल प्रतिमा है। वर्तमान समय में इसके ऊपर धातु की पतली चद्दर जड़ी है। इस स्थान के समीप ही बुद्ध की एक साढ़े दस फुट ऊँची अन्य प्रतिमा सुरक्षित है, जो मध्यकाल की है। इसे 'माथा कुंवर' कहते हैं। यह मूर्ति गया के काले पत्थर की बनी है। इसकी चौकी पर ब्राह्मी में एक लेख भी है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देवगढ़

यह स्थान झाँसी जिले की ललितपुर तहसील में ललितपुर स्टेशन से लगभग २३ मील पश्चिम में स्थित है। गुप्तकाल में यहाँ एक महत्त्वपूर्ण मन्दिर की रचना हुई। यह मंदिर 'दशावतार मन्दिर' के नाम से प्रसिद्ध है। मन्दिर एक चौड़ी कुर्सी पर बना है। इसके ऊपर शिखर था, जो टूट गया है। मंदिर बहुत विशाल नहीं है पर इसकी निर्माण-शैली बहुत सुन्दर है। गर्भगृह का प्रवेश-द्वार अत्यन्त कलापूर्ण है, द्वार-स्तम्भ पर गंगा-यमुना तथा पत्रावली आदि अलंकरण उत्कीर्ण हैं। मंदिर की बाहरी दीवालों पर कई शिलापट्ट लगे हुए हैं। इन शिलापट्टों पर नर-नारायण, गजेन्द्र-मोक्ष, शेषशायी विष्णु आदि के दृश्य बड़े ही कलात्मक और प्रभावोत्पादक ढङ्ग से उकेरे गये हैं। मंदिर में और उसकी कुर्सी में चारों ओर अन्य अनेक मनोज्ञ गुप्तकालीन मूर्तियाँ हैं। रामायण तथा कृष्ण-लीला के दृश्य भी यहाँ बड़ी संख्या में मिले हैं।

वर्तमान देवगढ़ बेतवा (प्राचीन वेत्रवती) नदी के तट पर स्थित है। बेतवा के किनारे ऊँची पहाड़ी पर चंदेल राजाओं के कई शिलालेख मिले हैं। विविध जैन-प्रतिमाएँ भी यहाँ बड़ी संख्या में प्राप्त हुई हैं। पहाड़ी के ऊपर लगभग २४ मंदिरों के चिह्न प्राप्त हुए हैं। इन मंदिरों का निर्माण ई० सातवीं से १२ वीं शती तक हुआ था।

झाँसी

झाँसी नगर स्वतंत्रता-संग्राम की नेत्री से संबंधित होने के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऋषिकेश में मुनि की रेती का एक नयनाभिराम दृश्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कारण भारतीय इतिहास में अमर हो गया है।

झाँसी का किला अब भी दुर्ग-स्थापत्य की स्मरणीय कृति है। रानी लक्ष्मीबाई का निवास-स्थान किले के पास ही है।

झाँसी में अन्य ऐतिहासिक स्थान गंगाधर राव और रामचंद्र राव की समाधियाँ, मेंहदी बाग, लक्ष्मीताल तथा लक्ष्मी मंदिर हैं। लक्ष्मी मंदिर के समीप पूर्वमध्यकाल की अनेक कलापूर्ण मूर्तियाँ हैं, जिनमें चतुर्भजी विष्णु, इन्द्र और देवी की प्रतिमाएँ विशेष उल्लेखनीय हैं।

कालपी

पुण्यतोया यमुना-कूल पर बसी हुई कालपी नगरी अतीत की कितनी ही गाथाएँ संजोए हुए है। इस नगरी को किसने और कब बसाया, यह प्रश्न विवादस्पद है। कुछ लोगों का अनुमान है कि कालप या कल्प नाम के ऋषि से इसका यह नामकरण हुआ। फरिश्ता नामक मुसलमान लेखक ने लिखा कि कन्नौज के राजा वासुदेव ने कालपी को बसाया। पर निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि यह वासुदेव किस राजवंश का और इसका शासन-काल क्या था। महर्षि व्यास के साथ तो कालपी के संबंध की जनश्रुति बहुत प्राचीन है। वर्तमान कालपी नगर के समीप ही यमुना-तट पर स्थित व्यास क्षेत्र अब भी इसकी स्मृति जागृत किये हुए है। इस स्थान के उचित संरक्षण की ओर उत्तर प्रदेश शासन का ध्यान गया है और यह आवश्यक कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुसलमानों के आवागमन के पहले कालपी जिन राजवंशों के शासन के अंतर्गत रही वे क्रमश: मौर्य, शुंग, कुषाण, गुप्त, वर्धन, गुर्जर प्रतीहार तथा चन्देल वंश हैं। कहते हैं कि काल प्रियनाथ का प्रसिद्ध मंदिर कालपी में ही था।

चंदेलों के पूर्व कालपी का इतिहास बहुत कम मिलता है। वास्तव में इस नगर की उन्नति चन्देलों के समय में हुई। लगभग दसवीं शताब्दी के मध्य में कालपी पर चन्देलों का अधिकार हुआ और यहाँ एक दुर्ग का निर्माण हुआ। चंदेल राजा मदनवर्मा तथा परमर्दिदेव के समय में कालपी की बड़ी उन्नति हुई। चंदेलों के आठ प्रसिद्ध केन्द्रों में से एक कालपी हुआ। यह न केवल एक बड़ा सैनिक अड्डा बना, बल्कि याता-यात का केन्द्र भी। चंदेलों के समय राज्य की एक मुख्य सड़क कालपी होकर गुजरती थी। यमुना नदी भी व्यापारिक यातायात का माध्यम थी। कालपी चंदेल-काल से लेकर मुगल-शासन के अन्त तक जलीय यातायात का एक प्रधान केन्द्र थी और यहाँ का माल सुदूर स्थानों तक पहुँचता था।

महोबा

महोबा हमीरपुर जिले का मुख्य नगर है। यह सैन्ट्रल रेलवे लाइन पर स्थित है। वीर चंदेलों का यह प्रधान गढ़ था। आल्हा-ऊदल की ओजपूर्ण गाथाओं से आज भी यहाँ का वायुमण्डल गुंजरित होता रहता है। महोबा में स्थापत्य एवं मूर्तिकला बहुत समय तक फूली-फली। ग्यारहवीं-बारहवीं शती में निर्मित कुछ अत्यन्त मनोहर मूर्तियाँ महोबा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फलक २१

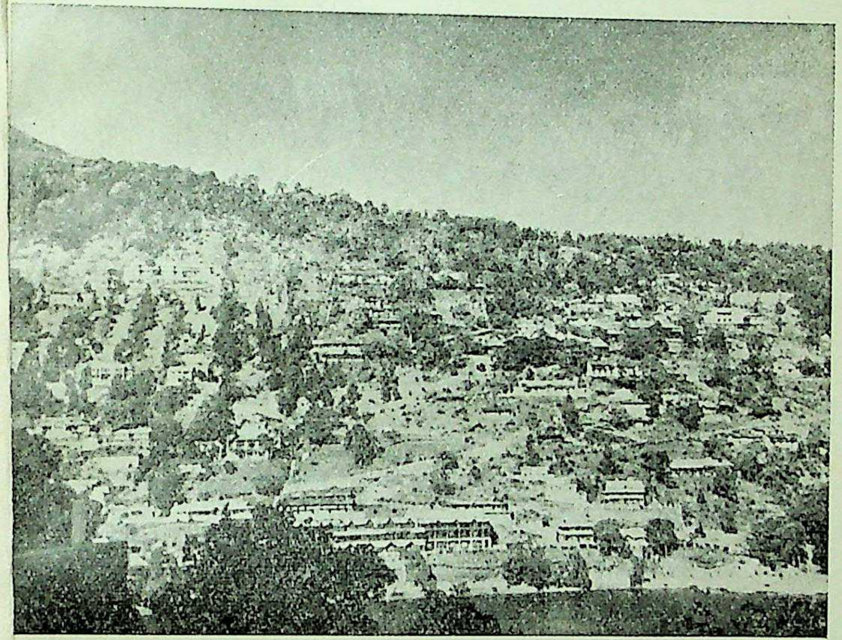

नैनीताल का एक विहंगम दृश्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से मिली हैं। इनमें सिंहनाद अवलोकितेश्वर, बौद्ध देवी तारा तथा कुछ तीर्थंकर-प्रतिमायें उल्लेखनीय हैं। मुसलमानी शासन-काल में यहाँ विनाश भी बहुत हुआ, जिसके कारण यहाँ की कितनी ही विशाल इमारतें नष्ट हो गईं। उनके भग्नावशेष महोबा में आज भी यत्र-तत्र देखे जा सकते हैं।

चंदेल शासकों को बड़े सरोवर बनाने का भी बड़ा शौक था। कीरत सागर, विजय सागर, मदन सागर आदि ऐसे ही तालाब हैं जो महोबा और उसके आस-पास आज भी विद्यमान हैं जो चंदेलों की कीर्ति के साथ उनकी कला को अब तक तक जीवित रखे हुए हैं। मदन सागर के बीच के टापू पर अत्यन्त सुन्दर मंदिर आज भी भग्नावस्था में स्थित हैं।

चित्रकूट

बाँदा जिले में झाँसी मानिकपुर रेलवे लाइन पर चित्रकूट स्टेशन से यहाँ पहुँचते हैं। बाँदा से चित्रकूट लगभग ५० मील दक्षिण-पूर्व है। चित्रकूट के पास मंदाकिनी नदी बहती है। वन को जाते समय श्रीराम कुछ समय तक यहाँ ठहरे थे। जन-श्रुति के अनुसार रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि भी यहाँ रहे थे। भगवान् राम के समय के अन्य अनेक स्थानों के चिह्न यहाँ बताये जाते हैं।

कालिंजर

कालिंजर उत्तर प्रदेश का सब से बड़ा पहाड़ी दुर्ग है। यह बाँदा जिले में बाँदा से लगभग ३३ मील दक्षिण-पूर्व

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नरैनी तहसील में स्थित है। बाँदा से नरैनी तक पक्की सड़क है। उसके बाद लगभग ११ मील कच्चे रास्ते से चलकर कालिंजर पहुँचना होता है।

कालिंजर का ऐतिहासिक दुर्ग विन्ध्य पर्वत की एक ८०० फुट ऊँची पहाड़ी पर बना है। दुर्ग के ऊपर पहुँचने में काफी श्रम करना पड़ता है। इस किले की लम्बाई लगभग एक मील और चौड़ाई आधा मील है। दुर्ग के ऊपर पहुँचने तक ७ बड़े फाटक पड़ते हैं। इनके नाम आलमगीरी दरवाजा, गणेश दरवाजा, लाल दरवाजा आदि हैं। इस दुर्ग के प्रारम्भिक निर्माण-कर्ता चंदेल-वंशी राजा चन्द्रवर्मा कहे जाते हैं। राजा कीर्तिवर्मा के समय में इस दुर्ग के अनेक भाग निर्मित हुए।

चंदेलों के समय में कालिंजर दुर्ग का महत्त्व बहुत था। इसकी गणना भारत के अभेद्य दुर्गों में की जाती थी। चंदेलों के समय के कई महत्त्वपूर्ण शिलालेख और बड़ी संख्या में मूर्तियाँ यहाँ मिली हैं। अपने शत्रुओं से लोहा लेने में चंदेलों को इस दुर्ग से बड़ी सहायता मिलती रही। १३वीं शताब्दी में जब दुर्भाग्य से इस किले में पानी की कमी हो गई तभी चंदेलों की पराजय हुई।

चुनार

यह नगर मिर्जापुर से २० मील पूर्व उसी जिले में है। इसका प्राचीन नाम चरणाद्रि था। यहाँ का पहाड़ी किला बहुत प्रसिद्ध रहा है। यह ज्ञात नहीं कि सब से पहले यहाँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गढ़वाल की एक कृषक कन्या।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किसने दुर्ग बनवाया। ई० दशवीं शती से इस किले का महत्त्व बढ़ गया। पाल राजाओं और उनके बाद संभवतः चौहान राजा पृथ्वीराज के समय में इस किले को अधिक मजबूत किया गया। १३३३ ई० के संस्कृत शिलालेख से पता चलता है कि उस समय यह किला स्वामी राजा नामक शासक के अधिकार में था। उसके बाद यह मुसलमानों के कब्जे में चला गया।

शेरशाह और हुमायूँ में इस किले के लिए बड़ी जद्दोजहद चली। १५७५ ई० में अकबर ने इसे विजय किया। मुगल साम्राज्य का अन्त होने पर चुनार अवध के नवाबों के अधिकार में चला गया। १७७२ ई० में इस पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी का आधिपत्य हो गया।

चुनार में भर्तृहरि का एक मंदिर है। जन-श्रुति के अनुसार शतक-त्रयी के प्रसिद्ध लेखक भर्तृहरि यहाँ बहुत समय तक रहे थे। कुछ गुफा और मंदिर भी यहाँ मिले हैं जिनमें प्रायः शैव धर्म सम्बन्धी मूर्तियाँ मिलती हैं। चुनार के समीप ही दुर्गाकुंड और दुर्गाखोह हैं। यहाँ कई प्राचीन मंदिरों के भग्नावशेष विद्यमान हैं। गुप्तकाल से लेकर ई० १८ वीं शती तक के अभिलेख बड़ी संख्या में इस स्थान से उपलब्ध हुए हैं।

चुनार में मुस्लिम काल के अनेक स्मारक हैं। इनमें इफ्तिखारखाँ का मकबरा और इस इमारत का प्रवेश-द्वार उल्लेखनीय हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चुनार का लाल बलुआ पत्थर मूर्तियों और इमारतों के निर्माण में बहुत अधिक प्रयुक्त होता था। सुदूर स्थानों से भी इस पत्थर की माँग होती थी। अशोक ने अपने स्तम्भों के लिए इसी पत्थर को चुना था। सारनाथ की बहुसंख्यक मूर्तियाँ भी इसी पत्थर की बनी हुई हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जौनसार-बावर की दो लड़कियाँ आनन्द की मुद्रा में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय १२

अनुसंधान-कार्य

पिछले लगभग डेढ़-सौ वर्षों में उत्तर प्रदेश के विभिन्न भागों में जो खोज-कार्य हुआ है उससे समूचे भारत के सांस्कृतिक इतिहास की अनेक कड़ियों को जोड़ने में सहायता मिली है। गंगा-जमुना की घाटी में अब तक जो सर्वेक्षण किया गया है उससे यहाँ की प्रारम्भिक आर्य सभ्यता के विकास का पता चला है। आर्यों की पूर्ववर्ती निषाद-सभ्यता की आजकल काफी चर्चा है। इस सभ्यता के अवशेष बिजनौर, सीतापुर, कानपुर, बाँदा, मिर्जापुर आदि जिलों से बड़ी मात्रा में मिले हैं। इस दिशा में व्यवस्थित खोज करने से प्राक्, वैदिक सभ्यता पर अधिक प्रकाश पड़ सकेगा।

वैदिक तथा उत्तर वैदिक-काल में उत्तर प्रदेश के अनेक नगर भारतीय संस्कृति के केन्द्र बने। इनमें हस्तिनापुर, मथुरा, अहिच्छत्रा, काम्पिल्य, अयोध्या, श्रावस्ती, काशी और कौशाम्बी के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। यद्यपि इन स्थानों से अभी तक ऐसे अवशेष पर्याप्त मात्रा में नहीं प्राप्त हो सके जिनसे बुद्ध के पूर्व इतिहास पर विशेष प्रकाश डाला जा सके, तो भी इन स्थानों के सम्यक् उत्खनन द्वारा इस सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध होने की आशा है। बुद्ध के समय से लेकर मौर्य-काल तक की बहुत-कुछ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सामग्री उपर्युक्त तथा अन्य स्थानों से मिली है।

मौर्य-काल से लेकर गुप्त-काल (ई० पू० ३०० से ६०० ई०) तक के इतिहास के लिए उत्तर प्रदेश में बड़ी सामग्री है। इस काल में सारनाथ, मथुरा, श्रावस्ती, कौशाम्बी, अहिच्छत्रा, बनारस, देवगढ़ आदि अनेक नगरों की बड़ी उन्नति हुई। इन स्थानों से ऐतिहासिक लेख, सिक्के, मूर्तियाँ मनके, मिट्टी की मुहरें तथा प्राचीन इमारती पत्थर बड़ी संख्या में उपलब्ध हुए हैं। इनके आधार पर न केवल उत्तर प्रदेश का अपितु भारत के इतिहास का निर्माण करने में बड़ी सहायता प्राप्त हुई है। सारनाथ, मथुरा, कौशाम्बी तथा अहिच्छत्रा जैसे नगर भारत के मुख्य कला-केन्द्रों में गिने जाते हैं।

पूर्व मध्य-काल (३००-१२०० ई०) के इतिहास के लिए भी उत्तर प्रदेश के विभिन्न भागों में महत्त्वपूर्ण पुरातत्त्वीय सामग्री विद्यमान है। इस काल में कन्नौज, महोबा, कालिंजर, बरुवासागर (जि० झाँसी) तथा उत्तराखण्ड के बैजनाथ, जागेश्वर, लाखामंडल और द्वाराहाट—जैसे कई स्थान स्थापत्य और मूर्तिकला के महत्त्वपूर्ण केन्द्र रहे। इस काल के कुछ मंदिर प्रायः सुरक्षित अवस्था में प्राप्त हुए हैं। इन्हें देखने से उत्तर भारत की पूर्व मध्यकालीन वस्तुकला का परिचय प्राप्त होता है। बुन्देलखण्ड से इस काल के शिलालेख बड़ी संख्या में मिले हैं, जिनसे चन्देलों तथा उनके समकालीन हैहय आदि राजवंशों के सम्बन्ध में अनेक ऐतिहासिक बातों का पता चला

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

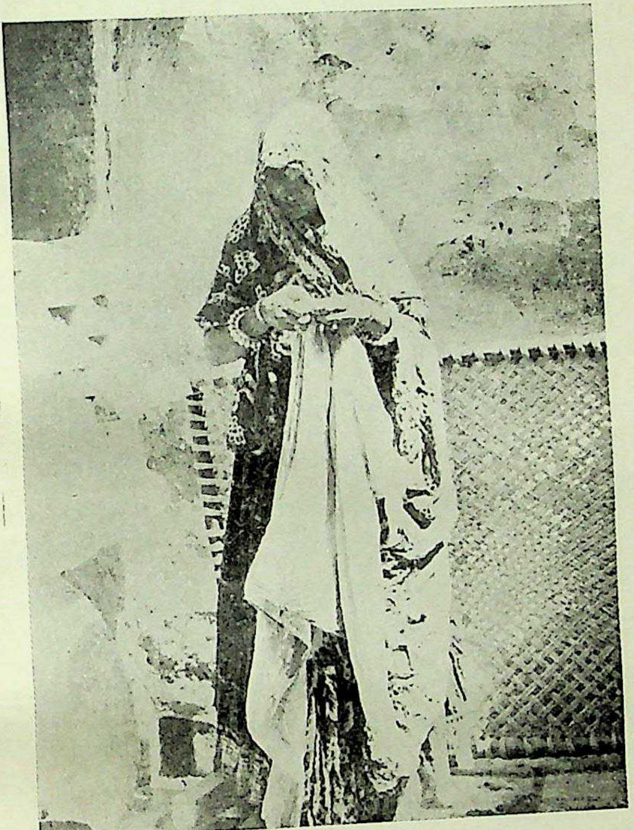

बुन्देलखण्डी युवती अपनी वेश-भूषा में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है । चन्देल-शासन-कालमें महोबा, कालपी, कालिंजर, देवगढ़, बरुवासागर, दुधई, चाँदपुर, मदनपुर, खजुराहो आदि कितने ही स्थानों में मंदिरों और मूर्तियों का निर्माण बड़ी संख्या में हुआ । इन स्थानों में से खजुराहो मध्य प्रदेश में हैं, शेष सब उत्तर प्रदेश में हैं ।

उत्तर-मध्यकाल (१२००–१८०० ई०) के इतिहास की जानकारी के लिये इस प्रदेश में आगरा, फतहपुर-सीकरी, जौनपुर, फैजाबाद, बनारस, बिजनौर आदि में सुरक्षित अनेक तत्कालीन स्मारक सहायक हैं । इनके अतिरिक्त मुसलमानों तथा अनेक विदेशी लेखकों के लेख भी इसके लिए उपयोगी हैं ।

खुदाई तथा सर्वेक्षण––भारत सरकार के पुरातत्त्व विभाग द्वारा कुछ समय पूर्व अहिच्छत्रा (जिला बरेली) तथा राज-घाट (बनारस) में खुदाई कराई गई । अहिच्छत्रा से मौर्य-कालीन मूर्तियों से लेकर लगभग ११०० ई० तक के विविध अवशेष प्राप्त हुए । इनमें गुप्तकालीन मिट्टी की कुछ मूर्तियाँ अत्यन्त कलापूर्ण हैं । राजघाट की खुदाई से पत्थर की मूर्तियाँ, इमारती पत्थर आदि तो मिले ही, साथ ही मिट्टी की बहु-संख्यक मूर्तियाँ भी मिलीं । इनमें चौथी-पाँचवीं शती के कुछ खिलौने कला की उत्तम कृतियाँ हैं । कुछ मूर्तियाँ लाल-पीले आदि अनेक रंगों से रँगी मिली हैं । प्राचीन हस्तिनापुर के कुछ टीलों का भी उत्खनन-कार्य कराया गया है । यहाँ से मिट्टी के बर्तनों के विविध टुकड़े भी मिले हैं, जो हस्तिनापुर नगर के लगभग ई० पूर्व १००० तक के इतिहास की जानकारी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में सहायक हुए हैं। इस खुदाई से यह भी प्रमाणित हुआ है कि यह नगर कई बार बसा और उजड़ा । पौरव राजा निचक्षु के समय में गंगा में इतनी भयंकर बाढ़ आई थी कि लोगों को हस्तिनापुर छोड़ देना पड़ा । उसी समय से पौरवों की राजधानी कौशाम्बी नगरी हुई । केन्द्रीय पुरातत्त्व विभाग द्वारा श्रावस्ती, सारनाथ, भीटा, (जि० इलाहाबाद), कुशी नगर आदि अनेक स्थानों भी उत्खनन-कार्य कराया गया ।

हाल में हरद्वार के निकट बहादराबाद नामक स्थान की खुदाई से प्रागैतिहासिक-कालीन ताँबे की वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं। यहाँ से पत्थर के कुछ औजार तथा बर्तनों के ऐसे टुकड़े भी मिले हैं जो हरप्पा के बर्तनों से मिलते-जुलते हैं । देहरादून जिले में कालसी के पास अनेक अभिलिखित ईंटें मिली हैं, जिनपर अश्वमेध यज्ञ करने वाले राजा शीलवर्मा का नाम लिखा है । यह राजा ई० तीसरी शती में हुआ । ईंटों पर इसके वंश का नाम 'वृषगण' लिखा है । ईंटों के अतिरिक्त अश्वमेध यज्ञ के तीन स्थल भी यहाँ मिले हैं । ऐसा प्रतीत होता है कि यमुना-तटवर्ती इस स्थान पर वैदिक यज्ञों की परम्परा बहुत समय तक विद्यमान रही । कालसी में ही एक चट्टान पर खुदा हुआ सम्राट् अशोक का शिलालेख है । संभवतः सम्राट् ने इसलिए इस स्थान को चुना कि लोगों में अहिंसा की ओर प्रवृत्ति बढ़े और हिंसामूलक वैदिक यज्ञों का प्रभाव कम हो जाय । भारत सरकार के पुरातत्त्व विभाग ने १९५४–५५ में मथुरा में भी खुदाई का काम कराया । वहाँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लखनऊ में गोमती-तट का एक दृश्य ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के कंकाली टीला, भूतेश्वर टीला, कटरा केशवदेव आदि स्थानों से बड़ी संख्या में बौद्ध, जैन तथा वैष्णव मूर्तियाँ और अन्य पुरातत्त्वीय कृतियाँ प्राप्त हुई हैं।

उत्तर प्रदेश शासन की आर्थिक सहायता से प्रयाग विश्वविद्यालय द्वारा गत कई वर्षों से कौशाम्बी में खुदाई का कार्य हो रहा है। १९५१ ई० में यहाँ 'घोषिताराम' नामक एक बौद्ध विहार का पता चला। बिहार का बहुत सा अंश अब तक की खुदाई द्वारा प्रकाश में आ चुका है। जो वस्तुएँ यहाँ से प्राप्त हुई हैं उनमें कुषाण तथा गुप्तकालीन शिलालेख, मिट्टी और पत्थर की अनेक मूर्तियाँ, विविध भाँति के मिट्टी के ठीकरे तथा सिक्के उल्लेखनीय हैं। विहार के समीप अनेक छोटे स्तूप भी निकले हैं। संभवतः इन लघु स्तूपों में मरे हुए भिक्षुओं के अवशेषों को मिट्टी के पात्रों में भर कर रखा जाता था और उनके समीप ही छोटे स्तम्भों का निर्माण किया जाता था।

इलाहाबाद जिले में लच्छागिरि नामक एक दूसरे स्थान की खुदाई से शुंग-काल से लेकर लगभग ६०० ई० तक के अवशेष मिले हैं। यह प्राचीन स्थान गंगा-तट पर है और इसके टीलों का एक बड़ा भाग कटकर गंगा में समा गया है। जिला बिजनौर के पारसनाथ नामक स्थान में भी खुदाई का प्रारम्भिक कार्य कराया गया है, जिससे शती दसवीं से लेकर बारहवीं शती तक की अनेक कलापूर्ण मूर्तियाँ तथा इमारती पत्थर प्राप्त हुए हैं। उत्तर मध्यकाल में यह स्थान जैन धर्म

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का एक बड़ा केन्द्र हो गया था। कानपुर जिले में जाजमऊ की खुदाई से पता चला है कि इस स्थान का इतिहास वैदिक युग तक जाता है।

१९५१–५२ तथा १९५२–५३ में इन पंक्तियों के लेखक ने उत्तर प्रदेश के एक बड़े भाग का सर्वेक्षण कर अनेक ऐतिहासिक स्थनों का पता लगाया था। इस सर्वेक्षण में कुछ महत्त्वपूर्ण कलावशेष, अभिलेख तथा प्राचीन सिक्के भी उपलब्ध हुए। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, पुरातत्त्व की दृष्टि से उत्तर प्रदेश बहुत समृद्ध है। आशा है कि शासन द्वारा पुरातत्त्वीय कार्यों को व्यवस्थित रूप से करने की योजना कार्यान्वित की जा सकेगी। जिससे प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति की ओर अधिक जनरुचि उत्पन्न होगी तथा अनेक अज्ञात बातें प्रकाश में आ सकेंगी।

प्रदेश की कला एवं पुरातत्त्व की सामग्री यहाँ कई सार्वजनिक संग्रहालयों में सुरक्षित है, जिनमें से मुख्य ये हैं––

१. **राजकीय संग्रहालय, लखनऊ**––उत्तर प्रदेश का यह सबसे पुराना संग्रहालय है। इसकी स्थापना १८६३ ई० में हुई थी। इसके चार मुख्य विभाग हैं––पुरातत्त्व, कला, नृतत्त्व-शास्त्र तथा प्राणि-शास्त्र। पुरातत्त्व विभाग में मथुरा के कंकाली टीला तथा अन्य स्थानों से प्राप्त प्राचीन जैन और बौद्ध अवशेषों के रूप में विशाल सामग्री है। इन मूर्तियों का समय लगभग ई० पूर्व २०० से ११०० ई० तक है। प्रदेश के अन्य भागों से प्राप्त बौद्ध, जैन तथा हिन्दू मूर्तियाँ यहाँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

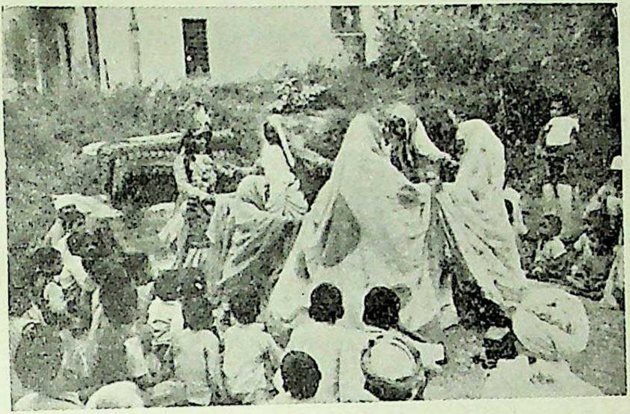

(क) ब्रज की रासलीला का एक मंडल नृत्य

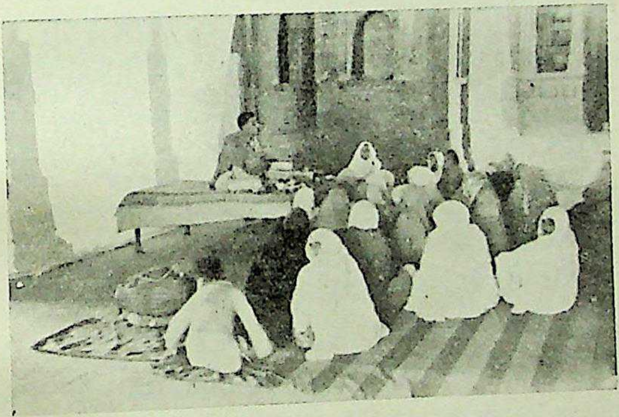

(ख) कथावाचक तथा श्रोता-समाज

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का एक बड़ा केन्द्र हो गया था। कानपुर जिले में जाजमऊ की खुदाई से पता चला है कि इस स्थान का इतिहास वैदिक युग तक जाता है।

१९५१–५२ तथा १९५२–५३ में इन पंक्तियों के लेखक ने उत्तर प्रदेश के एक बड़े भाग का सर्वेक्षण कर अनेक ऐतिहासिक स्थनों का पता लगाया था। इस सर्वेक्षण में कुछ महत्त्वपूर्ण कलावशेष, अभिलेख तथा प्राचीन सिक्के भी उपलब्ध हुए। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, पुरातत्त्व की दृष्टि से उत्तर प्रदेश बहुत समृद्ध है। आशा है कि शासन द्वारा पुरातत्त्वीय कार्यों को व्यवस्थित रूप से करने की योजना कार्यान्वित की जा सकेगी। जिससे प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति की ओर अधिक जनरुचि उत्पन्न होगी तथा अनेक अज्ञात बातें प्रकाश में आ सकेंगी।

प्रदेश की कला एवं पुरातत्त्व की सामग्री यहाँ कई सार्वजनिक संग्रहालयों में सुरक्षित है, जिनमें से मुख्य ये हैं––

१. **राजकीय संग्रहालय, लखनऊ**––उत्तर प्रदेश का यह सबसे पुराना संग्रहालय है। इसकी स्थापना १८६३ ई० में हुई थी। इसके चार मुख्य विभाग हैं––पुरातत्त्व, कला, नृतत्त्व-शास्त्र तथा प्राणि-शास्त्र। पुरातत्त्व विभाग में मथुरा के कंकाली टीला तथा अन्य स्थानों से प्राप्त प्राचीन जैन और बौद्ध अवशेषों के रूप में विशाल सामग्री है। इन मूर्तियों का समय लगभग ई० पूर्व २०० से ११०० ई० तक है। प्रदेश के अन्य भागों से प्राप्त बौद्ध, जैन तथा हिन्दू मूर्तियाँ यहाँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(क) ब्रज की रासलीला का एक मंडल नृत्य

(ख) कथावाचक तथा श्रोता-समाज

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रदर्शित हैं। मिट्टी की मूर्तियाँ, साँचे की मोहरें, श्रावस्ती, मथुरा, राजघाट, अहिच्छत्रा, संकिसा, भीतरगाँव आदि स्थानों से प्राप्त की गई हैं। संग्रहालय में पुराने हथियारों का अच्छा संग्रह है। आहत मुद्राओं (पंच मार्क्ड) से लेकर अवध के नवाबों तक के समय के सिक्कों का बहुमूल्य भंडार इस संग्रहालय में है। चित्र-विभाग में हिन्द-ईरानी, राजपूत, पहाड़ी तथा दक्षिणी शैली के अनेक चित्र संगृहीत हैं। अवध के नवाबी काल की भी एक चित्र-वीथिका है। हाल में उत्तरा खण्ड से कुछ तिब्बती चित्रपट तथा अन्य दुर्लभ वस्तुएँ भी प्राप्त हुई हैं। मिस्र देश की एक ममी भी हाल में यहाँ लाई गई है।

२. **पुरातत्त्व संग्रहालय, मथुरा**—इस संग्रहालय की स्थापना १८७४ ई० में हुई थी। इसमें पत्थर और मिट्टी की मूर्तियों, शिलालेखों, इमारती पत्थरों आदि को महत्त्वपूर्ण सामग्री संचित है। कुषाणकाल के अवशेषों की संख्या सब से अधिक है। इनमें बौद्ध, हिन्दू और जैन-प्रतिमाएँ, आयाग पट्ट, सिरदल, वेदिका-स्तम्भ आदि हैं। गुप्तकाल में यहाँ बुद्ध की अनेक कलापूर्ण मूर्तियों की रचना हुई। इस संग्रहालय में यक्षों, नागों तथा कुषाण सम्राटों की भी दुर्लभ मूर्तियाँ प्रदर्शित हैं, जो ऐतिहासिक दृष्टि से बड़े महत्त्व की हैं अधिकांश मूर्तियाँ मथुरा नगर और उसके आसपास से मिली हैं और लाल बलुए पत्थर की बनी हुई हैं। प्राक्-मौर्यकाल से लेकर गुप्तकाल तक की मिट्टी की मूर्तियों का भी यहाँ अच्छा संग्रह है। कुछ काँसे की प्रतिमाएँ तथा विविध कालों के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सिक्के भी इस संग्रहालय में संचित हैं, जो लगभग दो सौ वर्ष पुराने हैं।

३. पुरातत्त्व संग्रहालय, सारनाथ--सारनाथ का प्रसिद्ध पुरातत्त्व संग्रहालय १९०४ ई० में स्थापित हुआ था। यह स्थानीय संग्रहालय है और इसमें सारनाथ की खुदाई से प्राप्त मूर्तियाँ आदि संगृहीत हैं। इनका समय ई० पूर्व तीसरी शती से लेकर १२वीं शती तक है। इनमें गुप्तकालीन मूर्तियों की संख्या अधिक है। धर्म-चक्र की प्रवर्तन-मुद्रा में बैठे हुए भगवान बुद्ध की मूर्ति तथा सिंहांकित स्तम्भ-शीर्ष कला की महान कृतियाँ हैं। बोधिसत्त्व और बुद्ध की अनेक प्रतिमाएँ, इमारती पत्थर, मिट्टी की मूर्तियाँ, मुहरें, ईंटें आदि भी इस संग्रहालय में प्रदर्शित हैं।

भारत कला-भवन, वाराणसी--भारतीय ललित कलाओं के संग्रह-रूप में कला-भवन का आरम्भ १९२० ई० में हुआ था। इस समय यह काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के अन्तर्गत है। इसमें मुगल और काँगड़ा शैली के चित्रों का बहुमूल्य संग्रह सुरक्षित है। मुगलकालीन चित्रों के लिये यह संग्रहालय भारत में बेजोड़ है। चुने हुए प्राचीन सिक्कों, मिट्टी की मूर्तियों और मनकों का भी यहाँ अच्छा संग्रह है। राजघाट की खुदाई से प्राप्त कलापूर्ण मिट्टी की मूर्तियाँ तथा पाषाण-प्रतिमाएँ भी इस संग्रहालय में प्रदर्शित हैं।

४. प्रयाग संग्रहालय, इलाहाबाद--इलाहाबाद म्युनि-सिपल बोर्ड के अन्तर्गत इस संग्रहालय की स्थापना १९३१ ई०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

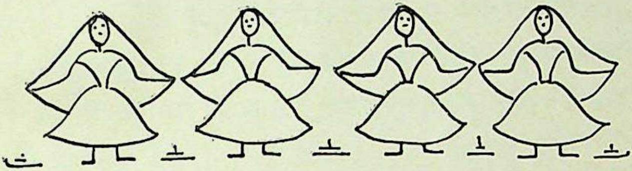

(क) ग्राम-वधूटियों द्वारा उकेरी गई पूजा की आकृतियाँ

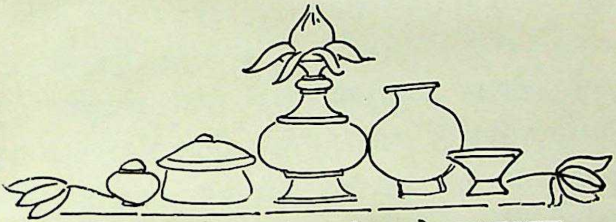

(ख) मंगल-कलश तथा लोक-अलंकरण के अन्य उपादान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में हुई। कौशाम्बी से प्राप्त मिट्टी की मूर्तियों और मनकों का यहाँ अच्छा संग्रह है। इसके अतिरिक्त भरहुत, नागौद, खजुराहो आदि विन्ध्य प्रदेश के विभिन्न स्थानों से प्राप्त गुप्त एवं मध्यकालीन मूर्तियों का बहुत बड़ा संग्रह है। मुगल और राजपूत चित्रों तथा कुछ आधुनिक चित्रों का भी संकलन है। हस्तलिखित ग्रंथ-विभाग में बहुसंख्यक ग्रंथ हैं। जवाहरलाल नेहरू विभाग में श्री नेहरू को समय-समय पर भेंटों में प्राप्त वस्तुएँ प्रदर्शित हैं।

५. **गुरुकुल संग्रहालय, हरद्वार**——हाल में गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय के अन्तर्गत एक संग्रहालय की स्थापना हुई है। हरद्वार तथा अन्य स्थानों से प्राप्त पत्थर और मिट्टी की मूर्तियाँ, चित्र, सिक्के तथा हस्तलिखित ग्रंथ इस संग्रहालय में हैं। कनखल के लगभग १५० वर्ष प्राचीन भित्ति-चित्रों की प्रतिकृतियाँ भी यहाँ प्रदर्शित हैं।

६. **महात्मा गांधी हिन्दी संग्रहालय, कालपी**——हिन्दी भवन, कालपी में स्थापित इस संग्रहालय में प्राचीन मूर्तियाँ, सिक्के, हस्तलिखित ग्रंथ तथा रानी लक्ष्मीबाई, नानासाहब, नवाब बाँदा के चित्र तथा उनसे सम्बन्धित विविध वस्तुएँ संकलित हैं।

ऊपर के संग्रहालयों में लखनऊ और मथुरा के संग्रहालय उत्तरप्रदेशीय सरकार द्वारा संचालित हैं। सारनाथ का संग्रहालय भारत सरकार के आधीन है। उत्तर प्रदेश की बहुत सी सामग्री कलकत्ता, दिल्ली तथा विदेशी संग्रहालयों में भी है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१९४६ ई० में प्रादेशिक सरकार ने यहाँ के संग्रहालयों की दशा सुधारने तथा प्रदेश के अन्य उपयुक्त स्थानों में संग्रहालय स्थापित करने के लिए संगठन-समिति का निर्माण किया था। इस समिति ने अपनी रिपोर्ट दे दी है। शासन द्वारा निर्मित 'उत्तर प्रदेश संग्रहालय परामर्शदाता समिति' इस सम्बन्ध में आवश्यक कार्य कर रही है। शिक्षा विभाग की ओर से जिलों में शिक्षण-संग्रहालय भी स्थापित किये गए हैं, जिनका उद्देश्य विद्यार्थियों को वस्तुओं के प्रत्यक्ष दर्शन द्वारा पाठ्य विषयों का ज्ञान कराना है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ १. जागो प्यारे

शब्दार्थ—लाल=पुत्र। कमल=पानी में होने वाला फूल का एक पौधा। दल=फूल की पंखड़ी। नभ=आकाश। न्यारी=अनोखी। छवि=सुन्दरता। समय खोना=समय नष्ट करना। सुनहरी=सोने के रंग की।

अभ्यास—(१) नीचे कविता की कुछ पंक्तियाँ लिखी हैं। हर पंक्ति के नीचे की पंक्ति छूट गई है। उन्हें लिखो :—

उठो लाल, अब आँखें खोलो
.................................।
बीती रात कमल-दल फूले
.................................।
चिड़ियाँ चहक उठीं पेड़ों पर
.................................।

(२) नीचे कुछ शब्द लिखे हैं। इनमें से ठीक शब्द छाँटकर खाली स्थान भरो :—

छवि, सुनहरी, सूरज, लाली।

(क) नभ में न्यारी......छायी।
(ख) धरती ने न्यारी......पायी।
(ग) भोर हुआ.........उग आया।
(घ) जल में पड़ी......छाया।

(३) नीचे कुछ शब्दों के अर्थ दिये गये हैं। ये जिनके अर्थ हों उनके सामने इन्हें लिखो :—

आकाश, फूल की पंखड़ी, अनोखी, सुन्दरता।

दल=.........   छवि=.........
नभ=.........   न्यारी=.........

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(४) नीचे के वाक्यों को देखो :—
अब सोओ......अब मत सोओ।
इसी प्रकार 'मत' लगाकर नीचे के वाक्य लिखो :—
(क) अब जाओ। (ख) यहाँ आओ। (ग) खाना खाओ। (घ) अब खेलो। (ङ) खूब हँसो।

(५) भावार्थ बताओ :—
(क) ऐसा सुन्दर समय न खोओ।
(ख) उठो लाल, अब आँखें खोलो।

(६) 'जागो प्यारे' कविता किसने लिखी है?

(७) नीचे के प्रश्नों के उत्तर लिखो :—
(क) कमल का फूल कब फूलता है?
(ख) सुबह होते ही पूरब दिशा में आकाश का रंग कैसा हो जाता है?
(ग) सुबह की हवा कैसी लगती है?

(८) 'जागो प्यारे' पाठ में दिये गये चित्र को देखकर निम्न प्रश्नों के उत्तर दो :—
(१) चारपाई पर कौन सोया है? (२) बगल में कौन बैठी है? (३) चारपाई के पास मेज़ पर क्या है? (४) माता पानी क्यों लायी है? (५) माता-पुत्र से क्या कह रही है? (६) कैसे मालूम होता है कि प्रातःकाल हो गया है? (७) जल में कौन से फूल खिले हैं? (८) पेड़ की डाल पर तुम क्या देखते हो?

पाठ २. सच्चा बालक

शब्दार्थ—व्यापारी = चीज़ें खरीदकर बेचने का काम करने वाला। काफिला = यात्रियों का झुण्ड। बग़दाद = भारत के पश्चिम में इराक देश की राजधानी। अशरफी = सोने के सिक्के को कहा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जाता था। हैरान = भौचक्का। संत = साधु। महान = बड़ा। प्रसिद्ध = जिसे सब लोग जानते हों। संकट = दु:ख। पीर = महात्मा। समाधि = वह स्थान जहाँ महात्मा मरने के बाद गाड़े जाते हैं।

प्रश्न १. बालक ने अपनी अशर्फियों का पता क्यों बता दिया ?

उत्तर—बालक की माँ ने झूठ बोलने के लिए मना किया था।

प्रश्न २. डाकुओं के सरदार पर बालक की बात का क्या असर हुआ ?

उत्तर—उसने लूट-मार करना छोड़ दिया।

अभ्यास—(१) नीचे के शब्दों से आधा अक्षर छूट गया है। उसके सामने पूरा शब्द लिखो :—

···यापारी	व्यापारी
ई···वर ·········	बचा ·········
अ···छी ·········	प्रसन ·········
ल···बा ·········	सत ·········
उ···तर ·········	अदुल ·········
अ···तर ·········	सजन ·········
अच···भा ·········	पृवी ·········

(२) नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं। इनमें उचित शब्द छाँट कर नीचे के वाक्यों में खाली स्थानों को भरो :—

झूठ, समाधि, काफिला, सड़कें, दर्शन।

(क) अच्छी·········भी न थीं।

(ख) मैं ·········कैसे बोलता ?

(ग) उनकी·········बगदाद में है।

(घ) बहुत से लोग ·········के लिए जाते हैं।

(ङ) यात्री एक साथ·········बनाकर चलते थे।

(३) नीचे के शब्द अशुद्ध हैं। इन्हें शुद्ध लिखो :—

वर्स·········	फिर ·········
साथीयों·········	प्रशन्न·········

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

डाकूओं .... दर्सन.........
प्रसीद्ध .... बहूत.........

(४) उलटा या विपरीत अर्थ बताने वाले शब्द को विलोम शब्द कहते हैं; जैसे 'लाभ' का विलोम शब्द 'हानि' है।
नीचे लिखे शब्दों के विलोम शब्द लिखो :—

झूठ .... बड़ा......... माता.........
पाप .... दिन......... मित्र ....

(५) ऐसे वाक्य बनाओ कि नीचे दिये हुए शब्दों में से एक शब्द एक वाक्य में आ जाय।
व्यापारी, ईश्वर, चालीस, झूठ, पाप, सवारी।

(६) नीचे के प्रश्नों के उत्तर दो :—
(क) डाकुओं के डर से व्यापारी और यात्री कैसे चलते थे?
(ख) काफिले वाले बालक का क्यों आदर करने लगे?
(ग) बालक की अशर्फियाँ कहाँ थी?
(घ) बालक के पास कितनी अशर्फियाँ थीं?
(ङ) बड़ा होकर बालक किस नाम से प्रसिद्ध हुआ?
(च) उसकी समाधि कहाँ है?

पाठ ३. कबूतर और बहेलिया

शब्दार्थ—बहेलिया=चिड़ीमार। बिखेरना=फैलाना। चाल=धूर्त्तता, छल। मुखिया=नेता। निराश=जिसे आशा न हो। दुर्ग=वह मजबूत मकान जिसके अन्दर कोई जल्दी जा न सके, किला। प्रशंसा=बड़ाई। चैन=आराम। दल=झुण्ड।

प्रश्न १. बहेलिये को देखकर कौए ने अपने साथियों से क्या कहा?

उत्तर—कौए ने दानों के पास जाने से मना किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रश्न २. कबूतर जाल में कैसे फँस गये ?

उत्तर—कबूतर भूखे थे। वे दानों पर उतर आये और जाल में फँस गये।

प्रश्न ३. कबूतर जाल से कैसे छूटे ?

उत्तर—चूहे ने अपने दाँतों से जाल काट दिया। कबूतर जाल से छूट गये।

अभ्यास—(१) नीचे दिये शब्दों को पढ़ो और उन्हें फिर से सुन्दर लिखावट में लिखो :—

चित्रग्रीव………	धन्यवाद………
हिरण्यक………	स्वतन्त्र ………
दुर्ग ………	ग्लानि ………
बुद्धिमान………	स्रोत ………

(२) नीचे के वाक्यों में खाली स्थान भरो :—

किसी……में बरगद का एक बहुत पुराना……था। उस पर सैकड़ों……रहा करते थे। एक दिन एक……उधर आया।…… के कन्धे पर झोला पड़ा था और पीठ पर……उसके हाथ में एक लम्बी……थी।

(३) जिस शब्द से केवल एक वस्तु या व्यक्ति का ज्ञान होता है उसे एकवचन कहते हैं; जैसे—राम, पुस्तक, कलम, दावात।

जिस शब्द से अधिक वस्तुओं या व्यक्तियों का बोध होता है उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे—पुस्तकें, कलमें, दावातें, कुत्ते, बिल्लियाँ।

नीचे लिखे एकवचन शब्दों के सामने रिक्त स्थानों पर उनके बहुवचन लिखो :—

पक्षी ………	कबूतर………	दाँत………
झाड़ी………	बिल ………	मित्र………

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(४) नीचे के शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो :—

दुर्ग, बुद्धिमान, चैन, प्रशंसा, लालच।

(५) नीचे के शब्दों में कुछ अक्षर छूट गये हैं। उन्हें पूरा करके लिखो :—

कन्धे ……… बुद्धि…न ………

भा…य……… ध…वाद ………

ब…ग ……… मु……या………

(६) नीचे के प्रश्नों के उत्तर लिखो :—

(क) पक्षी किस पेड़ पर रहते थे ?

(ख) बहेलिये की पीठ पर क्या था ?

(ग) बहेलिये के हाथ में क्या था ?

(घ) चित्रग्रीव ने अपने साथियों को क्या सलाह दी ?

(ङ) हिरण्यक कहाँ रहता था ?

(च) हिरण्यक ने जाल को कैसे काटा ?

पाठ ४. झूला

शब्दार्थ—पेंग = पटेंग। श्याम = कुछ-कुछ काला। घटा = बादल। सुखदायी = सुख देनेवाली। अति = अत्यन्त। मनभायी = मन को सुन्दर लगी। सुरीली = मीठे स्वरवाली। मतवाली = मस्त। जन = मनुष्य। उपवन = बाग़।

प्रश्न १. झूला कब झूलते हैं ?

उत्तर—सावन के महीने में झूला झूलते हैं।

प्रश्न २. 'नभ को छूने' से क्या समझते हो ?

उत्तर—'आकाश में बहुत ऊँचाई तक झूले का चला जाना' समझते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रश्न ३. कविता में वर्षा ऋतु की किन-किन बातों का वर्णन किया गया है ?

उत्तर—काले-काले बादल आकाश में छा जाते हैं। सुख देने वाली ठंडी-ठंडी फुहार पड़ने लगती है। काली-काली कोयल कुहू-कुहू करके गाने लगती है।

अभ्यास—(१) दिये गये शब्दों की सहायता से नीचे की पंक्तियों में खाली स्थानों को भरो :—

कोयल, नभ, सावन, सुरीली

(क) पेंग बढ़ाकर.........को छूलें।
(ख) है बहार.........की आयी।
(ग) देखो.........घटा नभ छायी।
(घ) प्यारी.........काली काली।
(च) बड़ी.........भोली भाली।

(२) कुछ शब्दों के अर्थ नीचे हैं। जिनके ये अर्थ हों उनके सामने लिखो :—

काली, बादल, मीठे स्वरवाली, बाग, पटेंग।

घटा =......... श्याम =......... पेंग =.........
सुरीली =......... उपवन =.........

(३) नीचे के प्रश्नों के उत्तर लिखो :—

(१) झूला किस मौसम में झूला जाता है ?
(२) वर्षा ऋतु में कौन-सी चिड़िया कुहू-कुहू करके बोलती है ?
(३) कोयल का रंग कैसा होता है ?
(४) चित्र में देखो—झूले पर कितनी लड़कियाँ तथा कितने लड़के हैं ?
(५) पटेंग कौन मार रहे हैं ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(४) नीचे लिखे शब्दों से वाक्य बनाओ :—
पेंग, झूला, सावन, उपवन

(५) बहुवचन बनाओ :—

घटा .... पेंग ....
फुहार......... झूला.........
कोयल......... मैं ....

पाठ ५. किसान का धन

शब्दार्थ—ऋतु = मौसम । मेह=बादल । तलैया=छोटा ताल । पंक्ति = कतार ।

प्रश्न १. सुक्खू अपने खेत की मेंड़ क्यों बाँध रहा था ?

उत्तर—सुक्खू अपने खेत की मेंड़ इसलिए बाँध रहा था कि बरसात के पानी के साथ खेत की मिट्टी न बह जाय ।

प्रश्न २. सनई बोने से क्या लाभ है ?

उत्तर—(क) सनई की हरी खाद खेत को मिल जाती है । (ख) सनई की जड़ें मिट्टी को जकड़ लेती हैं । इससे मिट्टी का कटाव रुक जाता है ।

प्रश्न ३. मिट्टी को किसान का धन क्यों कहा जाता है ?

उत्तर—मिट्टी से अन्न पैदा होता है । इसलिए इसे किसान का धन कहा जाता है ।

अभ्यास—(१) नीचे के शब्दों को सुन्दर अक्षरों में लिखो :—
वर्षाऋतु, पंक्ति, सुक्खू , मिट्टी, जीवांश ।

(२) खाली स्थानों में एक-एक शब्द भर कर वाक्यों को पूरा करो :—
लेकिन इसका भी.........है । ....बाँधने के बाद हम......... को बेड़ा-बेड़ा जोतकर.........में सनई बो देंगे । सनई की जड़ें......

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

को जकड लेगी और इससे मिट्टी का………रुक जायगा। सनई की हरी……भी खेत को मिल जायगी।

(३) दिये हुए शब्दों के बहुवचन लिखो :—

नाली, मिट्टी, किसान, रोटी।

(४) बायीं ओर और दायीं ओर कुछ वाक्यांश दिये गये हैं। उचित वाक्यांशों को मिलाकर वाक्य बनाओ :—

(क) मिट्टी में ही	बह रही थी।
(ख) मिट्टी ही	ढालू था।
(ग) सुक्खू का एक खेत	हमारा धन है।
(घ) खेत की मिट्टी	पौधे उगते हैं।

(५) नीचे के शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करो :—

ऋतु, जीवांश, मिट्टी, धन, ढालू।

(६) प्रश्नों के उत्तर दो :—

(क) सुक्खू का खेत कैसा था ?

(ख) मिट्टी में क्या होता है जो उसे उपजाऊ बनाता है ?

(ग) खेत की मिट्टी बह जाने से क्या नुकसान होगा ?

पाठ ६. सोती सुन्दरी

शब्दार्थ—नामकरण=नाम रखना। उपहार=भेंट। रूप=सुन्दरता। परी=बहुत ही सुन्दर परों वाली स्त्री। आशीर्वाद=शुभवचन। निश्चय=पक्का विचार। स्वभाव=व्यक्ति में एक-सा बना रहनेवाला गुण। जन्तु=जानवर।

प्रश्न १. परियों ने राजकुमारी को क्या उपहार दिये ?

उत्तर—परियों ने राजकुमारी को रूप, धन और बुद्धि के उपहार दिये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रश्न २. बूढ़ी परी ने राजकुमारी को क्या शाप दिया ?

उत्तर—बूढ़ी परी ने राजकुमारी को शाप दिया कि जब राजकुमारी पन्द्रह साल की होगी तो उसकी उँगली में तकुआ चुभ जायगा और वह मर जायगी।

प्रश्न ३. बूढ़ी परी के शाप का क्या असर हुआ ?

उत्तर—बूढ़ी परी के शाप का यह असर हुआ कि उँगली में तकुआ चुभते ही वह सो गई। महल के सब स्त्री-पुरुष तथा जीव-जन्तु जहाँ के तहाँ सो गये। सौ साल तक यही हालत रही।

प्रश्न ४. राजकुमारी कैसे जागी ?

उत्तर—एक राजकुमार राजकुमारी के पलंग के पास गया। यह देखने के लिए कि वह जीवित है या नहीं, उसने उसके माथे पर हाथ रखा। हाथ लगते ही राजकुमारी जाग गई।

अभ्यास—(१) दिये हुए शब्दों में से उचित शब्द छाँटकर खाली स्थानों को भरो :—

असर, उपहार, पालना, बूढ़ी, नहीं, उदास, शाप।

परी का······सुनकर रानी रोने लगी। राजा और दरबारी ······हो गये। तभी एक परी जो······नहीं दे पायी थी,······के पास आयी और बोली, "मैं······परी के शाप को मिटा तो······सकती, पर उसका······कम कर सकती हूँ।

(२) नीचे दिये हुए शब्दों को पढ़ो और उन्हें सुन्दर लिखावट में लिखो :—

आशीर्वाद, स्वभाव, जन्तु, निश्चय, स्वागत।

(३) नीचे दिये हुए शब्दों में कुछ अक्षर छूट गये हैं। उन्हें पूरा करके लिखो :—

सु···दर, अ···तबल, रा···म···ल, ···ना···फ···, प···ली, तल···र, द···बा···।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(४) नीचे के अधूरे वाक्यों के सामने तीन शब्द दिये गये हैं। उनमें से उचित शब्द छाँटकर वाक्यों को पूरा करो :—

(क) परियों को……की तश्तरियों में खाना खिलाया गया।
(लोहे, मिट्टी, सोने)

(ख) उसके बाल……की तरह मुलायम और चमकदार थे।
(ऊन, सन, रेशम)

(ग) परी का……सुनकर रानी रोने लगी।
(चीखना, आशीर्वाद, शाप)

(घ) उसने……में कई बार इस महल को देखा था।
(सपने, दिन, रात)

(५) नीचे के शब्दों में अक्षर उलट-पुलट गये हैं। इन्हें ठीक करके लिखो :—

राकुजरीमा, हिहिननाने, तिलियांत, जीतवि।

(६) नीचे के शब्दों के विलोम शब्द लिखो :—

जागना, जलना, छत, बुढ़िया, मुलायम

(७) नीचे के वाक्य को देखो—

हरी हरी घास लहरा रही है।

इसमें 'हरी' शब्द का दो बार प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार नीचे के शब्दों को दो बार प्रयोग करके वाक्य बनाओ :—

ज्यों, जहाँ, तहाँ, ऊँचे, खड़े,

(८) 'खेल में हार-जीत लगी ही रहती है।' इसमें हार-जीत दो उलटे अर्थ बताने वाले शब्द हैं। इसी प्रकार नीचे के शब्द और उसका उलटा अर्थ बताने वाला शब्द का प्रयोग करके वाक्य बनाओ :—

स्त्री, दिन

(९) नीचे लिखे शब्दों को उलटे वचन में लिखो :—

घोड़ा ……… कमरा ……… फूलों………।
तितलियाँ……… किसान ……… जीव………।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(१०) नीचे लिखे हुए शब्दों के अर्थ, कोष्ठक में दिये गये शब्दार्थों में से छाँटकर लिखो :—

उपहार .... अस्तबल .... निश्चय.........
स्वभाव .... नामकरण .... रूप ....

(आदत, नाम रखना, सुन्दरता, पक्का विचार, घोड़ों के बाँधने का स्थान, भेंट)

(११) नीचे के प्रश्नों के उत्तर दो :—

(क) दावत में परियाँ किसके रथ पर चढ़कर आयीं थीं?

(ख) राजकुमारी को तकुआ कहाँ मिल गया?

(ग) सौ साल में राजमहल की क्या दशा हो गई?

(घ) राजा ने किस राजकुमार के साथ राजकुमारी का विवाह कर दिया?

पाठ ७. तितली

शब्दार्थ—चंचल = हिलता-डोलता। इतराती = घमंड करती। इठलाती = इतराती। आँख जमाना = पाने के लिए ताक़ में रहना।

प्रश्न १. बच्चे तितलियों को देखकर क्यों खुश होते हैं?

उत्तर—तितलियाँ देखने में सुन्दर लगती हैं। वे रंग-बिरंगी होती हैं। वे फूलों पर मँडराती रहती हैं। इसलिए बच्चे तितलियों को देखकर खुश होते हैं।

प्रश्न २. यदि बच्चों के पंख होते तो वे क्या करते?

उत्तर—यदि बच्चों के पंख होते तो वे तितलियों के साथ उड़ जाते और हवा में उड़ते-उड़ते दूर देश तक हो आते।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभ्यास--(१) तितली कविता की पहली चार पंक्तियों को लिखो।

(२) उचित शब्द छाँटकर रिक्त स्थानों में भरो :—
हवा, आँख, जब, खुशियाँ, खेल-खिलौने, मतवाले, घबराये, पीछे-पीछे।
बच्चों ने……देखी इसकी,……खेल निराले।
छोड़-छाड़कर …………,दौड़ पड़े……… ।
भाग रहे हैं……………, ………ललचाये।
सब हैं……जमाये इस पर, सब हैं……उठाये।

(३) नीचे 'तितली' कविता की चार पंक्तियों के शुरू के कुछ शब्द दिये गये हैं उनसे पंक्तियों को पूरा करो :—
अब पकड़ी……………………………
और कभी पर……………………………
बच्चों के भी ……………………………
और हवा में ……………………………

(४) नीचे के शब्दों का प्रयोग करके वाक्य बनाओ——
फूल-फूल, कली-कली, पीछे-पीछे, उड़ते-उड़ते।

(५) प्रश्नों के उत्तर दो :——
(क) तितलियाँ किन-किन रंगों की हैं?
(ख) बच्चे तितलियों के पीछे क्यों दौड़ रहे हैं?

पाठ ८. गंगा का स्वर्ग से उतरना

शब्दार्थ——आश्रम = साधु-संत के रहने की जगह। स्वर्ग = हिन्दुओं के अनुसार वह संसार जहाँ अच्छे कर्म करनेवालों की आत्माएं निवास करती हैं। ब्रह्मा = संसार को बनाने वाले विधाता। ध्वनि =

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आवाज़। वेग = तेजी। राह = रास्ता। पुरखे = बाप-दादा आदि पूर्वज। तरना = जन्म और मरण से छुटकारा पाना।

प्रश्न १. राजा भगीरथ गंगा को पृथ्वी पर क्यों लाना चाहते थे ?

उत्तर—अपने साठ हजार पुरखों को शान्ति देने के लिए राजा-भगीरथ गंगा को पृथ्वी पर लाना चाहते थे।

प्रश्न २. इसके लिए उन्होंने क्या उपाय किया ?

उत्तर—इसके लिए राजा भगीरथ ने बहुत दिन तक तपस्या की।

प्रश्न ३. गंगा की धार को शिवजी ने कैसे संभाला ?

उत्तर—शिवजी ने अपनी जटाओं में गंगा की धारा को ले लिया। गंगा की धारा उनकी जटाओं में चक्कर काटने लगी।

प्रश्न ४. गंगा को भागीरथी क्यों कहते हैं ?

उत्तर—भगीरथ गंगाजी को पृथ्वी पर लाये थे इसलिए गंगा को 'भागीरथी' कहते हैं।

अभ्यास—(१) नीचे के शब्दों को पढ़ो और उन्हें सुन्दर अक्षरों में लिखो :—

आश्रम, स्वर्ग, पृथ्वी, ब्रह्मा, ध्वनि, स्थान, पर्वत, इन्द्रधनुष, प्रभु, त्रिशूल, हरिद्वार।

(२) नीचे के शब्दों की वर्तनी अशुद्ध है। शुद्ध करके लिखो :—
ब्रम्हा, साप, इन्द्रधनुस, आकास, मालुम, मुनी, तपश्या।

(३) हर वाक्य के सामने कोष्ठक में तीन-तीन शब्द दिये गये हैं। उचित शब्द छाँटकर वाक्य के खाली स्थान में भरो :—
(क) गंगाजी……के कमंडल में हैं (भगीरथ, ब्रह्मा, शिव)
(ख) राजा भगीरथ……पर्वत पर पहुँचे (अरावली, विन्ध्याचल, हिमालय)
(ग) बाघ की खाल उन्होंने……में कस ली। (सिर, पैर, कमर)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(घ) गंगाजल पाते ही भगीरथ के पुरखे……गये (आ, जीवित हो, तर)

(४) नीचे के सही वाक्यांशों को मिलाकर पूरे वाक्य लिखो :—

(क) तुम शिवजी को — पृथ्वी की ओर चलीं।
(ख) तुम ब्रह्मा से कहो कि — प्रसन्न करो।
(ग) गंगाजी बड़े वेग से — एक इन्द्रधनुष-सा बन गया।
(घ) आकाश से पृथ्वी तक — वे उन्हें छोड़ दें।

(५) नीचे के शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो :—

आश्रम, स्थान, दर्शन, इन्द्रधनुष, शाप, पृथ्वी।

(६) रिक्त स्थान को भरो :—

बहुत……हुए, हमारे……हजार पुरखे कपिल मुनि के……से जल गये थे। उनकी राख मुनि के……में पड़ी हुई है। जब गंगाजी ……से उतरकर आश्रम में से होकर बहेंगी, तब उनको…… मिलेगी। (शान्ति, दिन, साठ, शाप, आश्रम स्वर्ग)

(७) नीचे के प्रश्नों के उत्तर दो :—

(क) राजा भगीरथ कहाँ के राजा थे ?
(ख) गंगाजी कहाँ थीं ?
(ग) राजा भगीरथ ने तपस्या कहाँ की ?
(घ) गंगाजी कहाँ-कहाँ होती हुई कपिल मुनि के आश्रम में पहुँचीं ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सात्रिक सम्प्राप्ति जाँच

(पृ० ३ से २८ तक)

[प्रथम सत्र]

समय—१½ घन्टे] [पूर्णाङ्क—५०

(१) नीचे तुम्हारी पुस्तक की कहानी का एक अंश है। इसमें कुछ शब्द छूट गये हैं। उन शब्दों को लिखो :—

अब·········ने कमंडल से·········को छोड़ दिया। ·········बड़े वेग से·········की ओर चली। हर हर की·········आकाश में गूंज गयी। ·········से पृथ्वी तक एक·········सा बन गया। उनके तेज·········को देखकर ऐसा मालूम होता था कि वे·········को ही बहा ले जायँगी। परन्तु·········तक पहुँचने से पहले ही वे········· की जटाओं में उलझ गई और वहीं·········काटने लगी।

(२) नीचे कुछ शब्द और उनके अर्थ दिये गये हैं। सही अर्थ छाँटकर शब्द के सामने लिखो :—

अर्थ—आवाज, भेंट, कतार, मौसम, आकाश, किला

शब्द—दुर्ग ········· उपहार········· पंक्ति·········

ध्वनि ········· ऋतु ········· नभ ·········

(३) नीचे लिखे शब्दों से वाक्य बनाओ :—

बरगद ·································

झूला ·································

अशरफी ·································

क्रोध ·································

राजमहल·································

डमरू ·································

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(४) नीचे के शब्दों को पढ़ो और खाली स्थान में उन्हें सुन्दर ढंग से लिखो।

श्रमण सभ्य राष्ट्रिय निश्चिन्त पन्थ,

....

ब्रह्मा चित्रगीव हिरण्यक हरिद्वार

....

(५) नीचे दिये गये शब्दों की सहायता से निम्नलिखित वाक्य पूरा करो :—

दिये गये शब्द—डमरू, भौंकने, मँडराने, हिनहिनाने

(क) अस्तवल में घोड़े.........लगे।

(ख) तितलियाँ फूलों पर.........लगीं।

(ग) त्रिशूल गाड़कर ऊपर अपना......लटका दिया।

(घ) कुत्ते जागकर.........लगे।

(६) नीचे लिखे गये शब्दों के बहुवचन लिखो—

लड़की......... रजी .... पक्षी.........

दिशा .... चिड़िया......... कुत्ता.........

(७) नीचे दिये हुए शब्दों के विलोम शब्द लिखो :—

आशीर्वाद, बुद्धिमान, बलवान, काला, प्रसन्न

....

(८) नीचे लिखे शब्दों में कुछ अक्षर छूट गये हैं। उन्हें पूरा करके खाली स्थान में लिखो :—

ई...वर, अ...तबल, इत...ती, प्र...ग, इन्द्र...नु...

....

(९) नीचे कुछ अशुद्ध शब्द दिये हैं। उनके शुद्ध शब्द लिखो—

परवत...... प्रसन्न ...... रितु ......

वर्सा ...... दरसन...... प्रसंशा......

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(१०) नीचे के प्रश्नों के उत्तर लिखो--

(क) सच्चे बालक के पास कितनी अशरफियाँ थीं ?

....

(ख) मिट्टी को किसान का धन क्यों कहा गया है ?

....

(ग) गंगा को भागीरथी क्यों कहते हैं ?

....

(घ) किस परी को दावत में नहीं बुलाया गया था ?

....

(११) 'जागो प्यारे' कविता की अन्तिम चार पंक्तियाँ लिखो।

....

....

....

....

पाठ ९. हाथी

शब्दार्थ—दिवस=दिन। महावत=हाथीवान। आश्चर्य=अचरज। परिवार=घर के लोग, कुटुम्ब। मशाल=डंडे में चीथड़े लपेट कर बनायी हुई जलाने की बहुत मोटी बत्ती जिसे हाथ में लेकर चलते हैं।

प्रश्न १. हाथी ने दर्जी के लड़के से कैसे बदला लिया ?

उत्तर—हाथी अपनी सूँड़ में तालाब का गन्दा पानी भर लाया और उसने सब का सब पानी दुकान में उड़ेल दिया।

प्रश्न २. हाथी अपनी सूँड़ से क्या-क्या काम लेता है ?

उत्तर—१. साँस लेता है। २. खाने की चीज उठाकर मुँह में डालता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभ्यास—(१) नीचे के शब्दों का प्रयोग करके कहानी लिखो—
हाथी, दर्जी, दुकान, सूँड़, सुई, गन्दा पानी, कपड़े, खराब।

(२) नीचे हर वाक्य के सामने तीन शब्द दिये हैं। उचित शब्द छाँटकर वाक्य पूरा करो—

(क) हाथी बड़ा.........होता है।
(मूर्ख, कमजोर, बुद्धिमान)

(ख) हाथी को.........बहुत पसन्द है।
(नारियल, कटहल, गन्ने)

(ग) हाथी जंगलों में.........बनाकर रहते हैं।
(घर, बिल, परिवार)

(घ) मेले में दो.........भी आये हैं। (घोड़े, ऊँट, हाथी)

(३) संज्ञा शब्द छाँटकर लिखो—
इन्हें केले बहुत पसन्द हैं। जब केले के खेत में इनके झुण्ड पहुँच जाते हैं तो खेत के खेत नष्ट कर देते हैं। हाथियों को भगाने के लिए लोग मसाल जलाते और ढोल पीटते हैं।

टिप्पणी—किसी प्राणी, वस्तु और स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं; जैसे—राम, पुस्तक, वाराणसी।

(४) नीचे लिखे बहुवचन शब्दों के एकवचन बनाकर रिक्त स्थानों में भरो :—बच्चे, हाथियों, जंगलों, खिलौने।

....

(५) नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखो—
(क) बाल-दिवस के मेले का वर्णन तीन वाक्यों में करो।
(ख) हाथी कैसा जानवर होता है? तीन वाक्य में बताओ।
(ग) हाथी किस दाँत से खाता है?
(घ) हाथियों के भगाने के लिए लोग क्या करते हैं?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ १०. चूहों की सभा

शब्दार्थ—परेशान=आकुल । निश्चिन्त=बिना चिन्ता के । प्रस्ताव=छिड़ी हुई चर्चा, विचार । नूतन=नये । उमंग=जोश । सजग=होशियार, चौकन्ना ।

प्रश्न १. बिल्ली से बचने के लिए चूहों ने क्या प्रस्ताव पास किया ?

उत्तर— बिल्ली के गले में एक घन्टी बाँध दी जाय । इससे उसके आने का पता चल जायगा ।

प्रश्न २. बूढ़े चूहे ने क्या कहा ?

उत्तर—बूढ़े चूहे ने पूछा कि बिल्ली के गले में घन्टी कौन बाँधेगा ?

प्रश्न ३. चूहे क्यों भाग गये ?

उत्तर— बिल्ली आ गयी । उसके डर से चूहे भाग गये ।

अभ्यास—(१) नीचे लिखे हुए उचित शब्दों से रिक्त स्थानों को भरो—

(बिल, ज्योंहि, आवाज, प्राण, घन्टी, बिल्ली)

(क)·········एक गले······के बाँधी जाये,
(ख) जिससे बिल्ली······निकट हमारे आये,
(ग) हम सुनकर उसकी······सजग हो जायें,
(घ) भाग छिपें जा······में, अपने···बचायें ।

(२) अपने वाक्यों में प्रयोग करो :—

परेशान, प्रस्ताव, बिल्ली, चूहा, घन्टी, प्रश्न ।

(३) नीचे लिखे अर्थों में से उचित अर्थ को छाँटकर रिक्त स्थानों में भरो :—नया, चौकन्ना, विचार, आराम, घबड़ाकर

हड़बड़ाकर,	नूतन,	चैन,	सजग,	प्रस्ताव
···········	······	······	······	·········

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(४) नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दो :—
(क) चूहों ने किससे परेशान होकर सभा की ?
(ख) चूहों ने बिल्ली के गले में घन्टी बाँधने को क्यों कहा ?
(ग) बिल्ली के आने पर चूहों की क्या दशा हुई ?

पाठ ११. काठ का घोड़ा

शब्दार्थ—युक्ति = उपाय। अचानक = यकायक।

प्रश्न १. यूनानियों ने ट्राय पर क्यों चढ़ाई की ?

उत्तर—ट्राय के राजकुमार पेरिस स्पार्टा की रानी को चुरा ले गया। इसलिए यूनानियों ने ट्राय पर चढ़ाई की।

प्रश्न २. ट्राय का नगर जल्दी क्यों नहीं जीता जा सका ?

उत्तर—ट्राय के चारों ओर बड़ी ऊँची मजबूत चहारदीवारी थी। इसलिए ट्राय नगर को जल्दी जीतना बड़ा कठिन था।

प्रश्न ३. ट्राय को जीतने के लिए यूनानियों ने क्या किया ?

उत्तर—यूनानियों ने एक बहुत बड़ा घोड़ा बनाया। उसके अन्दर कुछ सिपाही चुपचाप बैठ गये। ट्राय नगर के फाटक पर घोड़ा खड़ा कर दिया गया। यूनानी अपने खेमों को जलाकर भाग गये। इन्हें भागते देखकर ट्राय नगरवाले बाहर आये। घोड़े को तमाशा समझकर भीतर ले गये। रात में यूनानी सिपाही घोड़े से बाहर निकल आये। युद्ध हुआ और पेरिस मारा गया।

अभ्यास—(१) संज्ञा शब्द छाँटकर लिखो :—

यूनान के ट्राय नाम का एक दूसरा राज्य था। एक बार ट्राय का राजकुमार जिसका नाम पेरिस था, घूमने के लिए स्पार्टा आया।

(२) बहुवचन शब्दों से एकवचन बनाओ :—

कहानियाँ, राजाओं, डेरे, टापुओं, नगरों।

....

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(३) रिक्त स्थानों को भरो :—

आधी रात को········सिपाही········के पेट से निकले। सबसे पहले······था। उसमें नगर का······खोल दिया। यूनानियों की······भी रात को······आयी थी। फाटक खुलते ही वह······में घुस गई।

(फाटक, नगर, सेना, लौट, घोड़े, यूनानी, यूलीसीज)

(४) नीचे के शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो :—

युक्ति, योद्धा, निश्चिन्त, खोखला, विजय।

(५) नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दो :—

(क) यूनान कहाँ है ?

(ख) ट्राय कहाँ था ?

(ग) स्पार्टा की रानी का क्या नाम था ?

(घ) यूलीसीज कौन था ?

(ङ) ट्राय के राजकुमार का क्या नाम था ?

पाठ १२. पहला इंजन

शब्दार्थ :—इंग्लैंड = यूरोप महाद्वीप का एक देश। निकम्मा = जो कोई काम न करता हो। शक्ति = ताक़त। मुसाफिर = यात्री (यात्रा करनेवाले)। रफ्तार = चाल।

प्रश्न १. वाट ने कैसे जाना कि भाप में शक्ति है ?

उत्तर—केतली में पानी उबल रहा था। पानी की भाप ढक्कन को उठा देती और बाहर निकल जाती थी। इसे देखकर वाट ने जाना कि भाप में शक्ति है।

प्रश्न २. वाट के इंजन से क्या काम लिया गया ?

उत्तर—खान से कोयला निकालने और पानी खींचने का काम वाट के इंजन से लिया गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रश्न ३. स्टीवेंसन की पहली सवारी गाड़ी को देखकर लोगों को आश्चर्य क्यों हुआ ?

उत्तर—इस गाड़ी में माल के छः डिब्बे लगे थे और छः सौ यात्री बैठे थे। इसे देखकर लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ।

प्रश्न ४. हमें वाट और स्टीवेंसन को क्यों नहीं भूलना चाहिए ?

उत्तर—उन्होंने भाप की शक्ति का प्रयोग सिखाया। इसलिए हमें इन्हें नहीं भूलना चाहिए।

अभ्यास—(१) नीचे के शब्दों को पढ़ो और सुन्दर अक्षरों में उन्हें लिखो :—

शक्ति, व्यक्ति, स्टीवेंसन, रफ्तार, इंग्लैंड।

(२) नीचे कुछ शब्दों के अर्थ दिये हैं और शब्द भी दिये हुए हैं। सही अर्थ शब्दों के सामने लिखो—

अर्थ—ताक़त, जो कोई काम न करता हो, यात्री, चाल।

शब्द—निकम्मा, रफ्तार, मुसाफिर, शक्ति।

(३) दिये हुए शब्दों में से उचित शब्द छाँटकर खाली स्थान भरो।

(आश्चर्य, पटरियाँ, इंजन, निकम्मा, ढक्कन, शक्ति)

(१) भाप में कोई······है जो······को ऊपर उठा देती है।
(२) जेम्स, तू बड़ा······है। (३) वाट ने एक······बनाया।
(४) कुछ दिनों बाद रेल की······बनीं। (५) लोगों को बड़ा··· हुआ।

(४) दिये हुए शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो—

शक्ति, चाल, इंजन, निकम्मा, भाप, यात्री।

(५) नीचे के प्रश्नों के उत्तर दो :—

(क) वाट किस देश का रहने वाला था ?
(ख) वाट ने भाप की शक्ति का क्या प्रयोग किया ?
(ग) स्टीवेंसन के इंजन से पहले क्या काम लिया गया ?
(घ) इंजन से न डरने के लिए पहले क्या किया जाता था ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ १३. नाई और लकड़हारा

शब्दार्थ—काठी=गधे आदि की पीठ पर बोझा कसने की लकड़ी। काजी=न्याय करनेवाला अधिकारी। राजी होना=सहमत होना। मजाक=हँसी-ठट्ठा। सौदा=खरीदने-बेचने की बातचीत।

प्रश्न १. नाई ने लकड़हारे से क्या सौदा किया ?

उत्तर—नाई ने लकड़हारे से गधे की पीठ पर की लकड़ी का सौदा डेढ़ रुपये में किया।

प्रश्न २. लकड़हारा शहर के काजी के पास रोता हुआ क्यों गया ?

उत्तर—नाई ने डेढ़ रुपये में लकड़ी के साथ काठी भी रखवा लिया। इसलिए लकड़हारा रोता हुआ शहर के काजी के पास गया।

प्रश्न ३. लकड़हारे ने नाई से किस प्रकार बदला लिया ?

उत्तर— लकड़हारे ने नाई से अपना और अपने साथी के बाल काटने की मजदूरी दो रुपया तय किया। जब उसने अपना बाल कटवा लिया तब उसने अपने साथी गधे का बाल काटने के लिए कहा। नाई बिगड़ गया और लकड़हारे को दुकान से बाहर निकाल दिया। लकड़हारा काजी के पास गया। काजी ने कहा कि यदि लकड़ी के साथ गधे की काठी बिक सकती है तो आदमी का साथी गधा भी हो सकता है। नाई को गधे का बाल काटना पड़ा। इस प्रकार लकड़हारा ने नाई से बदला लिया।

अभ्यास—(१) नीचे लिखे हुए वाक्यों में संज्ञा शब्द के नीचे रेखा खींचो :—

(क) बगदाद नगर में एक नाई रहता था।

(ख) काजी ने नाई को बुलाया और दोनों की बात सुनी।

(२) नीचे लिखे शब्दों का विलोम शब्द लिखो।

अन्दर········ पीठ········ खुश········

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(३) उचित शब्दों को छाँटकर रिक्त स्थान भरो—

(क) कहते हैं कि·········नगर में एक······रहता था। वह बड़ा ······था। एक दिन उसकी·········के सामने से एक ·········निकला।

(लकड़ी बेचनेवाला, बगदाद, नाई, चालाक, दूकान)

(ख) नाई ने कहा, "मैं यह कुछ नहीं जानता,·········तो सारी ·········का हुआ था।" यह कहते हुए उसने·········की ·········पर से खोल ली।

(काठी, गधे, पीठ, सौदा, लकड़ी)

(४) नीचे के शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो :—

उत्तर, अन्त, न्याय।

(५) नीचे के वाक्यों को सुलेख में लिखो—

नाई को सबके सामने गधे के बाल काटने पड़े। लकड़हारा इस न्याय से बहुत खुश हुआ।

(६) नीचे के प्रश्नों के उत्तर दो :—

(क) नाई कहाँ रहता था ?

(ख) लकड़हारा किस पर लकड़ियों का गट्ठर लादे था ?

(ग) लकड़हारे ने लकड़ी कितने रुपये में बेची थी ?

(घ) नाई कितने रुपये में बाल काटने को राजी था ?

पाठ १४. बढ़े चलो

शब्दार्थ—धीर=दृढ़ और शान्त मनवाला। ध्वजा=झण्डा। दल=झुण्ड, समूह। दहाड़=सिंह की आवाज।

अभ्यास—(१) 'बढ़े चलो' कविता की अन्तिम छः पंक्तियाँ लिखो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(२) निम्न प्रश्नों के उत्तर दो :—

(क) बालदल के साथ क्या रहना चाहिए ?

(ख) कौन-कौन सी कठिनाइयाँ आने पर भी बालदल को बढ़ते जाना चाहिए ?

(ग) बालदल को किस-किस की तरह बढ़ते जाना चाहिए ?

(३) नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं। उचित शब्द छाँट कर रिक्त स्थान में भरो :—

(रात, सूर्य-से, चन्द्र-से, साथ)

प्रात हो कि...............हो,
संग हो न...................हो,
............बढ़े चलो,
............बढ़े चलो।

द्वितीय सामयिक सम्प्राप्ति जाँच

(पृष्ठ २९ से ४६ तक)

समय—१½ घन्टे] [पूर्णांक—५०

(१) नीचे लिखे अधूरे शब्द को पूरा करके दिये हुए स्थान पर लिखो—

आ चर्य, न ट, प्र ताव, पार्टी, युति
....

र तार, भमण, अ त, निदयी, दश्य
....

(२) नीचे लिखे शब्दों का अर्थ उन्हीं के नीचे लिखो—

निश्चिन्त, युद्ध, धीर, व्यक्ति, नूतन, उमंग
....

(३) नीचे लिखे शब्दों को पढ़ो और उन्हें सुन्दर अक्षरों में पुनः लिखो—

ध्वजा, प्रह्लाद, स्वास्थ्य, राष्ट्र, महत्त्व
....

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विचित्र, आनन्द, ट्राय, यूलिसीज, शक्ति
....

(४) एकवचन से बहुवचन में तथा बहुवचन से एकवचन में बदलो—
लकड़ी, ध्वजा, रात, बच्चों, औरतों
....

(५) नीचे लिखे शब्दों को शुद्ध करके दिये हुए स्थानों पर लिखो :—
विर, पार्त, आर्देश, कोशीश, बील्ली
....

(६) नीचे दिये हुए शब्दों के विलोम शब्द लिखो—
स्वर्ग, नगर, न्याय, छोटे-छोटे, पुराना,
....

(७) नीचे के वाक्यों में से संज्ञा शब्द छाँटकर लिखो—
(क) यह इंजन कोयला, पत्थर, आटा, आदि सामान ढोने के काम में लाया गया।
(ख) आधी रात को यूनानी सिपाही घोड़े के पेट से निकले।

(८) नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दो :—
(क) हाथी नाक और हाथ का काम किससे लेता है?
(ख) चूहे बिल्ली से क्यों डरते हैं?
(ग) स्पार्टा की रानी का क्या नाम था?
(घ) भाप के इंजन को सबसे पहले किसने बनाया था?

(९) नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं। उनके सामने ऐसे वाक्य लिखो जिसमें ये शब्द आ जायँ—
नगर ....
रेलगाड़ी ....
सूर्य ....
चन्द्र ....

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(१०) अपनी पुस्तक की कहानी को पूरा करो—

बगदाद नगर में एक चालाक········रहता था। एक लकड़हारा······पर लकड़ी के······लादे जा रहा था।······ने डेढ़ रुपये में ······खरीद लिया।······ने लकड़हारे से······के साथ गधे की······ भी ले लिया। लकड़हारा बड़ा दुखी हुआ।

एक दिन······ने अपने और अपने······के बाल दो रुपये में······तय किया। अपने बाल कटवाने के बाद वह अपना······लाया। ······को दो रुपये में······के बाल भी काटने पड़े। लकड़हारा इस ······से बहुत खुश हुआ।

पाठ १५. ऐन्ड्रोक्लीज और सिंह

शब्दार्थ—दास = नौकर। निर्दयी = जिसके मन में दया न हो। कराहना = आह-आह करना। विशाल = बहुत बड़ा। दुम = पूँछ। स्वतंत्र = आजाद। तरसना = कोई चीज न मिलने पर उसके लिए व्याकुल रहना।

प्रश्न १. ऐन्ड्रोक्लीज अपने मालिक के घर से क्यों भागा ?

उत्तर—ऐन्ड्रोक्लीज का मालिक उसे बड़ा दुःख देता था। इसलिए वह भाग गया।

प्रश्न २. ऐन्ड्रोक्लीज को क्या सजा दी गयी ?

उत्तर—ऐन्ड्रोक्लीज को यह सजा दी गई कि उसे भूखे सिंह के सामने छोड़ दिया जाय।

प्रश्न ३. भूखे सिंह ने ऐन्ड्रोक्लीज पर हमला क्यों नहीं किया ?

उत्तर—ऐन्ड्रोक्लीज ने उस सिंह के पंजे से एक बार काँटा निकाला था और उसके साथ वह कुछ दिनों तक गुफा में भी रहा था। इसलिए उसने हमला नहीं किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभ्यास—(१) नीचे दिये हुए कठिन शब्दों को पढ़ो और उन्हें सुलेख में लिखो :—

निर्दयी, द्वार, दृश्य, स्वतंत्र, ऐन्ड्रोक्लीज।

(२) बायीं ओर और दायीं ओर दिये गये वाक्यांशों को मिला कर शुद्ध वाक्य बनाओ—

(क) ऐन्ड्रोक्लीज का मालिक	के होश उड़ गये।
(ख) सिंह को देखते ही ऐन्ड्रोक्लीज	बड़ा निर्दयी था।
(ग) सब लोग यह दृश्य देखकर	दरवाजा खुला।
(घ) कठघरे का	चकित रह गये।

(३) हर वाक्य के सामने कोष्ठक में तीन शब्द दिये गये हैं। उचित शब्द से रिक्त स्थान भरो :—

(क) रोम·········का एक बहुत पुराना नगर है। (एशिया, अफ्रीका, योरुप)

(ख) सबेरा होते-होते वह एक·········जंगल में जा पहुँचा। (लम्बे, पतले, घने)

(ग) सिंह बैठा-बैठा·········रहा था। (दहाड़, आराम कर, कराह)

(घ) वह ऐन्ड्रोक्लीज के सामने खड़ा होकर·········हिलाने लगा। (गर्दन, पैर, दुम)

(४) बायीं ओर के वाक्य एकवचन हैं। दायीं ओर बहुवचन के अधूरे वाक्य हैं। उन्हें पूरा करो :—

(क) एक सिंह बैठा है।	दो सिंह···············हैं।
(ख) पंजे में एक काँटा चुभा हुआ था।	पंजे में कई काँटे·········।
(ग) कठघरे का दरवाजा खुला।	कठघरे के दरवाजे·········।
(घ) वह यह दृश्य देखकर चकित रह गया।	वे लोग यह दृश्य देख-कर······।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ १६. बाबर और हुमायूँ

शब्दार्थ—हकीम = यूनानी ढंग से दवा करनेवाला। वैद्य = आयुर्वेद की दवा करने वाला। फकीर = साधु। दुआ करना = प्रार्थना करना। मरीज = रोगी। अल्लाह = ईश्वर। सिर पकड़कर बैठ जाना = दुखी होना। जहाँपनाह = संसार को शरण देने वाला। निछावर करना = दे देना। शहजादे = राजकुमार। तख्त = सिंहासन। वजीर = मंत्री। प्राण त्यागना = मृत्यु होना।

प्रश्न १. बाबर दुखी क्यों था ?

उत्तर—बाबर का बेटा हुमायूँ बीमार था। उसके बचने की आशा नहीं थी। इसलिए बाबर दुखी था।

प्रश्न २. बाबर ने हुमायूँ के प्राण बचाने के लिए क्या किया ?

उत्तर—बाबर ने ईश्वर से प्रार्थना की—"हे ईश्वर ! तू मेरी जान ले ले और मेरे बेटे को अच्छा कर दे।" ईश्वर ने प्रार्थना सुन ली।

प्रश्न ३. मरते समय बाबर ने हुमायूँ से क्या कहा ?

उत्तर—मरते समय बाबर ने हुमायूँ से कहा—"बेटा, तुम भाइयों में सबसे बड़े हो। दिल्ली का तख्त मैं तुम्हें देता हूँ। अपने भाइयों को सदा प्यार से रखना।"

अभ्यास—(१) नीचे के शब्दों तथा वाक्यांशों की सहायता से बाबर और हुमायूँ की कहानी लिखो :—

बाबर दिल्ली का बादशाह…………बड़ा बेटा हुमायूँ………वह बहुत बीमार…………बाबर ने प्रार्थना की…………ईश्वर ने …………हुमायूँ स्वस्थ…………बाबर बीमार…………मरते हुए बाबर ने कहा…………अपने प्राण त्याग दिये।

(२) नीचे के शब्दों को पढ़ो और सुलेख में लिखो :—

हृदय, वैद्य, प्राण, त्याग, अल्लाह।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(३) नीचे के वाक्यों में विशेषण शब्दों के नीचे रेखा खींचो :—

(क) बाबर बड़ा दु:खी था।

(ख) संसार की सबसे कीमती चीज कोहनूर है।

(ग) वह एक बहादुर आदमी था।

टिप्पणी—जो शब्द संज्ञा की विशेषता बतलाता है उसे विशेषण कहते हैं; जैसे—सफेद घोड़ा, काली गाय आदि।

(४) नीचे बाबर और हुमायूँ की कहानी का एक अंश दिया गया है। उसे पढ़ो और नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर दो :—

हुमायूँ का हाथ पकड़कर उसने कहा—"बेटा, तुम भाइयों में सबसे बड़े हो। दिल्ली का तख्त मैं तुमको देता हूँ। अपने भाइयों को सदा प्यार से रखना।"

प्रश्न १. किसने हुमायूँ का हाथ पकड़ कर कहा ?

२. उसने कब यह कहा ?

३. हुमायूँ की स्थिति अपने भाइयों में क्या थी ?

४. दिल्ली का तख्त किसके पास था ?

५. हुमायूँ के पिता ने उसे क्या शिक्षा दी ?

(५) नीचे लिखे वाक्यों में संज्ञा शब्द छाँटकर लिखो :—

दूर-दूर से हकीम और वैद्य बुलाये गये थे। फकीर रोगी के लिए दुआ कर रहे थे। किन्तु हालत बिगड़ती जा रही थी।

(६) दिये हुए शब्दों में से उचित शब्द चुनकर खाली स्थानों को भरो।

(सिंह, फूल, बलवान, दिल्ली)

बाबर……का बादशाह था। वह……की तरह बहादुर और ……था। लेकिन उसका हृदय……की तरह कोमल था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ १७. चाँद का कुर्ता

शब्दार्थ—हठ करना = जिद्द करना। सफर = यात्रा। झिंगोला = पहनने का एक कपड़ा। सलोने = सुन्दर। कुशल = अच्छा, मंगल।

प्रश्न १. चाँद ने अपनी माँ से कुर्ता क्यों माँगा ?

उत्तर—जाड़े से बचने के लिए चाँद ने अपनी माँ से कुर्ता माँगा।

प्रश्न २. कुर्ता सिलवाने में माँ को क्या अड़चन थी ?

उत्तर—चाँद का आकार रोज एक-सा नहीं रहता। इसलिए कुर्ता किस नाप का सिलवाया जाय यह माँ को अड़चन थी।

प्रश्न ३. चाँद महीने में कितने दिन दिखाई देता है ?

उत्तर— चाँद महीने में २८ दिन तक दिखाई देता है।

अभ्यास—(१) नीचे लिखे शब्दों से रिक्त स्थानों को भरो।
(जादू-टोने, कुशल, सलोने, बात)

बच्चे की सुन······कहा
माता ने, "अरे······ !
······करे भगवान, लगे मत
तुझको······················ ।

(२) नीचे हर पंक्ति के प्रारम्भ के शब्द दिये गये हैं। पंक्तियों को पूरा करो :—

अब ······························
तेरी······························
सी दे······························
रोज······························

(३) कविता की शेष दो पंक्तियाँ लिखो :—

सन सन चलती हवा रातभर,
जाड़े से मरता हूँ।
································
································

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(४) नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दो :—

(क) चाँद ने कैसा झिंगोला माँगा ?

(ख) चाँद ने झिंगोला क्यों माँगा ?

(ग) माँ ने क्या उत्तर दिया ?

(५) नीचे के शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो :—

चाँद, हवा, आसमान, नाप।

पाठ १८. सेन्टाक्लाज

शब्दार्थ—धीरज = संकट के समय न घबड़ाना। मदद = सहायता।

प्रश्न १. निकोलस ने जमींदार की कैसे सहायता की ?

उत्तर— जमींदार के घर में खिड़की से सोने की छड़ गिराकर निकोलस ने उसकी सहायता की।

प्रश्न २. 'क्रिसमस' ईसाइयों का सबसे बड़ा त्योहार क्यों माना जाता है ?

उत्तर— क्रिसमस के ही दिन प्रभु ईसा मसीह का सबसे बड़ा त्योहार मनाया जाता है।

प्रश्न ३. ईसाई लोग इस त्योहार को कैसे मनाते हैं ?

उत्तर—ईसाई लोग हरे-लाल-पीले गुब्बारों और खिलौनों से क्रिसमस-पेड़ सजाते हैं। गिरिजाघर में प्रार्थना करते हैं। अच्छे-अच्छे कपड़े पहनते हैं, आपस में मिलते-जुलते हैं और एक-दूसरे को मिठाई खिलाते हैं।

अभ्यास—(१) नीचे के शब्दों को पढ़ो और उन्हें सुलेख में लिखो।

सेन्टाक्लाज, प्रभु, प्रार्थना, क्रिसमस, त्योहार।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(२) नीचे के शब्दों की वर्तनी अशुद्ध है। शुद्ध करके लिखो :—

अग्नी, पर्भु, चकर्वर्ती, किरिसमस, पुरष्कार।

(३) नीचे संयुक्त अक्षर लिखे हैं। ऐसे शब्द लिखो जिनमें ये संयुक्त अक्षर आ जायँ; जैसे—

स्व .... स्वप्न

म्न .... स्न .... स्थ .... प्त ....

प्र .... क्र .... त्य .... न्य ....

(४) नीचे विशेषण और संज्ञा शब्द अलग-अलग दिये गये हैं। संज्ञा शब्दों के साथ उचित विशेषण लगाओ :—

संज्ञा शब्द—आदमी, त्योहार, गुब्बारों, दाढ़ी, चोंगा।

विशेषण शब्द—सफेद, लाल, बड़ा, पीले, धनी।

(५) सेन्टाक्लाज की कहानी लिखो जिसमें नीचे के शब्द आ जायँ। धनी, जमींदार, भूखा, सोने की छड़, पैर पकड़ लिया, प्यार, धन्यवाद, प्रार्थना।

(६) नीचे के प्रश्नों के उत्तर दो :—

(क) निकोलस कौन था? (ख) जमींदार की लड़की रो-रो कर क्या कह रही थी? (ग) निकोलस ने जमींदार से क्या कहा? (घ) सेन्टाक्लाज नाम कैसे पड़ा? (च) सेन्टाक्लाज को और क्या कहते हैं?

पाठ १९. रानी लक्ष्मीबाई

शब्दार्थ—एँड़ लगाना=घोड़े को आगे बढ़ाने के लिए एँड़ी से मारना। फुर्ती = जल्दी। असन्तोष = चिन्ता। अपूर्व = अद्‌भुत, उत्तम। कुशलता = चतुराई। गति = मरने के बाद आत्मा को प्राप्त होने-वाली दशा। वीर-गति = लड़ाई के मैदान में मृत्यु। उत्साह=जोश। वीरता=बहादुरी। स्वतंत्र=आजाद।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रश्न ३. दुष्यन्त को शकुन्तला की याद कैसे आयी ?

उत्तर—अपनी अँगूठी देखकर दुष्यन्त को शकुन्तला की याद आयी।

प्रश्न ४. कश्यप ऋषि के आश्रम में स्त्रियों नें राजा दुष्यन्त को कैसे पहचान लिया ?

उत्तर—राजा ने गंडा उठाकर बच्चे की बाँह में बाँध दिया। यदि किसी दूसरे ने उठाया होता तो वह उसे साँप बनकर काट लेता। इसलिए स्त्रियों ने उन्हें पहचान लिया।

अभ्यास—(१) नीचे के शब्दों को पढ़ो और उन्हें सुलेख में लिखो :—

प्रणाम, क्रोध, तीर्थ-यात्रा, युद्ध, चक्रवर्त्ती, प्रसिद्ध, दुष्यन्त, हस्तिनापुर, ऋषि, कण्व, दुर्वासा, शकुन्तला, कश्यप, आश्रम।

(२) नीचे के शब्दों के अर्थ लिखो :—

क्षमा, सन्न, विनय, सीमा, गंडा, कन्या, हर्ष।

(३) नीचे के शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करो :—

प्रणाम, क्रोध, शाप देना, विदा करना, तीर्थ-यात्रा।

(४) नीचे लिखे उचित शब्दों को रिक्त स्थानों में लिखो :—

(अ) शकुन्तला········पहुँची।······उसे राजा के पास ले गये। दुर्वासा के······के कारण······ने उसे नहीं पहचाना।······घबरायी।

(शकुन्तला, शाप, राजा, हस्तिनापुर, शिष्य)

(ब) वह मछली एक दिन·········में फंस गई। मछुए ने जब उसका पेट चीरा तो·········निकल आयी। वह उस······को बेचने के लिए······में गया।

(५) नीचे के वाक्यों में संज्ञा शब्द छाँटकर लिखो :—

शकुन्तला की अंगूठी एक मछली निगल गयी थी। वह मछली एक दिन जाल में फँस गयी। मछुए ने जब उसका पेट चीरा तो अंगूठी निकल आयी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(५) नीचे लिखी कविता की शेष दो पंक्तियाँ लिखो—

जिसकी नदियाँ कल-कल करतीं
बहती हैं, रुकती न कभी।
....
....

(६) नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दो :—

(क) 'नित सोना-सा बरसाती है' से तुम क्या समझते हो ?

(ख) सूरज की किरणें कौन-कौन सा काम करती हैं ?

(ग) चन्दा हमें क्या देता है ?

(घ) तारे कैसे चमकते हैं ?

(ङ) 'जिसके' का प्रयोग किसके लिए किया गया है ?

(ईश्वर के लिए)

पाठ २४. शकुन्तला

शब्दार्थ—लालन-पालन=प्रेमपूर्वक पालना। क्षमा=माफी। सन्न रह जाना=भौचक रह जाना। निगल जाना=लील जाना। गंडा=गाँठ लगाया गया धागा। हर्ष=खुशी। सीमा=हद। कन्या=पुत्री। विनय=प्रार्थना। चक्रवर्ती=वह राजा जिसका राज्य बहुत दूर-दूर तक चारों तरफ फैला हो। फूट-फूट कर रोना=बहुत जोर से रोना।

प्रश्न १. शकुन्तला कौन थी ?

उत्तर—वह मेनका की पुत्री थी।

प्रश्न २. दुर्वासा ने शकुन्तला को क्यों शाप दिया ?

उत्तर—शकुन्तला को दुर्वासा ऋषि को प्रणाम करने का ध्यान ही नहीं रहा। इससे क्रोध में आकर ऋषि ने शाप दे दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(६) नीचे लिखे शब्दों के विलोम शब्द लिखो :—

सुन्दर, उस, दुःख, शाप, स्वस्थ ।

(७) नीचे लिखे अशुद्ध शब्दों को शुद्ध करके लिखो :—

रिषि, शकुन्तला, आसरम, छमा तीथर्यात्रा ।

(८) नीचे लिखे वाक्यों में शब्द उलट-पुलट गये हैं । इन्हें ठीक करके सही वाक्य लिखो :—

(क) प्रणाम नहीं किया उसने ऋषि को ।
(ख) प्यास लगी एक जगह शकुन्तला को रास्ते में ।
(ग) पहुँची हस्तिनापुर शकुन्तला ।
(घ) एक निगल गयी थी मछली शकुन्तला की अँगूठी ।

(९) नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दो :—

(क) हस्तिनापुर में कौन राजा राज्य करता था ?
(ख) राजा दुष्यन्त शकुन्तला को अपने साथ क्यों नहीं ले जा सके ?
(ग) दुर्वासा ऋषि ने शकुन्तला को क्या शाप दिया ?
(घ) गंडे की क्या विशेषता थी ?
(च) भरत कौन था ?

चतुर्थ सात्रिक सम्प्राप्ति जाँच

(पृष्ठ ६८ से ८७ तक)

[पूर्णांक—५०

समय—१½ घन्टे]

(१) नीचे के वाक्यों के सामने कोष्ठ में तीन-तीन शब्द दिये गये हैं । उनमें से उचित शब्द छाँटकर खाली स्थान भरो :—

(क) अयोध्या के राजा.........के तीन रानियाँ थीं ।
(दशरथ, वशिष्ठ, राम)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(ख) राम और लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ.........गये।
(चित्रकूट, लंका, जनकपुर)

(ग) कैकेयी......के बहकाने में आ गई। (दशरथ, भरत, मंथरा)

(घ) राम ने अपनी......देकर भरत को विदा किया।
(अँगूठी, तस्वीर, खड़ाऊँ)

(च) शकुन्तला की अँगूठी...........में गिर गई।
(पानी, वन, आश्रम)

(छ) दुष्यन्त...........में राज्य करते थे।
(हस्तिनापुर, कश्मीर, पंजाब)

(ज) कैकेयी.........में जाकर लेट गई।
(रसोईघर, कालकोठरी, कोपभवन)

(२) दिये हुए शब्दों की वर्तनी अशुद्ध है। इन्हें शुद्ध करके लिखो— जज्ञ, राछस, स्विकार, दूख, प्रशन्न, मुनी।

(३) नीचे तुम्हारी पुस्तक से कुछ शब्द दिये गये हैं। उनके नीचे कहानी का भी एक अंश दिया गया है। इसमें बीच-बीच में स्थान खाली है। खाली स्थान पर ठीक शब्द लिखो :—
(ऋषि, प्रणाम, राजा, क्रोध, शाप, याद)

एक दिन दुर्वासा.........आये। शकुन्तला.........के सोच में बैठी थी। उसने ऋषि को......नहीं किया। दुर्वासा ने.........में आकर उसे......दे दिया कि जिसकी.........में मुझे.........नहीं किया वह तुझे भूल जायगा।

(४) नीचे बायीं ओर कुछ वाक्य लिखे हैं। उनमें शब्द आगे-पीछे हो गये हैं। इन्हें ठीक स्थान पर रखकर पूरा वाक्य दाहिनी ओर लिखो—

(क) लक्ष्मण गये साथ राम के ....

(ख) तुम्हारा है क्या नाम ? ....

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh